इग्नू
जन–जन की
विश्वविद्यालय

BPSC-101

राजनीतिक सिद्धांत की समझ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिती

प्रो.दरवेश गोपाल (अध्यक्ष)
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधीराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो.गुरप्रीत महाजन
नीति अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. कृष्णा मेनन, जेंडर
अध्ययन केन्द्र, अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो.अनुराग जोशी
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो.जगपाल सिंह
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. (अ.प्रा.) वैलेरियन रौड्रिग्ज
अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो.मीना देशपांडे
राजनीति विज्ञान संकाय
बंगलौर विश्वविद्यालय, बैंगालुरू

प्रो. शेफाली झा
नीति अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. विजयशेखर रेड्डी
राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक
विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त
विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खण्ड और इकाई	इकाई लेखक	से अनुकूलित
खण्ड 1 राजनीतिक सिंद्धात का परिचय		
इकाई 1 राजनीतिक सिंद्धात क्या है– दो दृष्टिकोण : मानक और अनुभवजन्य	डॉ. राजेन्द्र दयाल और डॉ. सतीश कुमार झा, दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 3 एवंम् 4, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 2 राजनीति क्या है–राज्य और शक्ति का अध्ययन	डॉ. मनोज सिन्हा दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 1, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
खण्ड 2 राजनीतिक सिंद्धात के दृष्टिकोण		
इकाई 3 उदारवादी	डॉ. दिव्या रानी	इकाई 26, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 4 मार्क्सवादी	डॉ. तेजप्रताप सिंह, गोरखपुर विश्वविद्यालय	इकाई 21, एमपीएस– 001 से अनुकूलित
इकाई 5 रूढ़िवादी	डॉ. एन. डी. अरोरा, दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 22, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 6 नारीवादी	सुश्री. गीतांजली अत्री जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय	
इकाई 7 उत्तर–आधुनिक	श्री शैलेन्द कुमार पाठक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
खण्ड 3 लोकतंत्र का व्याकरण		
इकाई 8 लोकतंत्र का व्याकरण	डॉ. राज कुमार शर्मा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
इकाई 9 लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तदायित्व	डॉ. रचना सुचिन्मयी, मगध विश्वविद्यालय	
इकाई 10 प्रतिनिधि लोकतंत्र और इसकी सीमाएँ	डॉ. सुरिन्दर कौर शुक्ला पंजाब विश्वविद्यालय	
इकाई 11 भागीदारी और मतभेद	डॉ. राजकुमार शर्मा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
इकाई 12 लोकतंत्र और नागरिकता	डॉ. राजकुमार शर्मा और दिव्या तिवारी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	

पाठ्यक्रम संयोजक और संपादक :प्रो. अनुराग जोशी

इकाईस्वरूपण, पुनरीक्षण और सामाग्री अद्यतन : डॉ. राज कुमार शर्मा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

सामग्री निर्माण दल

श्री राजीव गिरधर असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	श्री हेमन्त परीदा अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	**कार्यालय सहायक** श्री राकेश चन्द्र जोशी इग्नू, नई दिल्ली

नवम्बर, 2019

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा,

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली–110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से निदेशक सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाषित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स, सी–206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रित :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

		पृष्ठ सं.
खंड 1	**राजनीतिक सिद्धांत का परिचय**	**9**
इकाई 1	राजनीतिक सिद्धांत क्या है –दो दृष्टिकोण : मानक और अनुभवजन्य	11
इकाई 2	राजनीति क्या है–राज्य और शक्ति का अध्ययन	25
खंड 2	**राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण**	**39**
इकाई 3	उदारवादी	41
इकाई 4	मार्क्सवादी	53
इकाई 5	रूढ़िवादी	69
इकाई 6	नारीवादी	81
इकाई 7	उत्तर-आधुनिकवादी	93
खंड 3	**लोकतंत्र का व्याकरण**	**109**
इकाई 8	लोकतंत्र का व्याकरण	111
इकाई 9	लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तदायित्व	123
इकाई 10	प्रतिनिधि लोकतंत्र और इसकी सीमाएँ	136
इकाई 11	भागीदारी और मतभेद	152
इकाई 12	लोकतंत्र और नागरिकता	163
अन्य अध्ययन सामग्री		**177**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम का परिचयः राजनीतिक सिद्धांत की समझ

अगस्त कोम्टे ने कहा था कि सिद्धांत वे वैचारिक लेंस हैं, जिनके माध्यम से हम बहुत से तथ्यों को सुलझा सकते हैं, जिनका हम प्रतिदिन सामना करते हैं। वस्तुतः, सिद्धांतों के बिना हम किसी वस्तुस्थिति की पहचान, तथ्य के रूप में करने में बिल्कुल सक्षम नही हो सकते हैं। एक अच्छे सिद्धांत की कुछ विशेषताएं होती हैं। जिसका पहला गुण किफायती होना अर्थात संक्षिप्ता। एक सिद्धांत को अनावश्यक कल्पनाशीलता व भ्रमित करने वाले विवरणों से बचना चाहिए। एक सार्थक सिद्धांत का दूसरा लक्षण विशुद्ध रूप से सटीक होना है। दुनिया के बारे में सटीक आकलन और स्पष्टीकरण के लिए, सिद्धांतों को पर्याप्त रूप से विस्तृत होना चाहिए। एक सहज सिद्धांत सामान्यतः अभी तक दुनिया के कुछ पहलुओं की व्याख्या, वर्णन या भविष्यवाणी करता है। हालाँकि, इन गुणों को ज्यादातर, वैज्ञानिक सिद्धांतों की विशेषताओं के रूप में पहचाना जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों का व्याख्यात्मक और पूर्वानुमानात्क व्यवहार, सामाजिक विज्ञानों मे नहीं पाया जाता है क्योंकि बहुत सी अनियंत्रित और अप्रत्याशित शक्तियां राजनीतिक व सामाजिक जीवन को प्रभावित करती हैं तथा यही कारण है कि सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार की शायद ही कभी हुबहू पुनरावृत्ति होती है। इन मसलों के प्रकाश में, कुछ विशेषज्ञों ने तर्क दिया है कि सामाजिक वैज्ञानिकों को प्राकृतिक विज्ञान की नकल करने की कोशिश नही करनी चाहिए, इसके बजाय, उन्हें अपने स्वयं के मानकों और प्रक्रियाओं को विकसित करना चाहिए। सामाजिक और राजनीतिक जीवन के सिद्धांतकारों के लिए, इसलिए अध्ययन के प्रयोजन के अनुसार महसूस करने और सोचने की क्षमता, उनके कार्य का महत्वपूर्ण घटक है।

पश्चिम में, राजनीतिक सिद्धांत एक ओर राजनीतिक दर्शन से उभरा और दूसरी ओर राजनीतिक विचार से। लेकिन, यह याद रखना चाहिए कि राजनीतिक सिद्धांत दोनों से अलग है। यह राजनीतिक दर्शन से इस अर्थ में भिन्न है कि यह व्यक्तिगत राजनीतिक अवधारणाओं के मध्य तार्किक संबंध स्थापित करने के लिए कम औपचारिक व व्यक्तिवादी दृष्टिकोण सहित कम चिंतित होता है। ऐतिहासिक रूप से कम केन्द्रित होने के आधार पर राजनीतिक सिद्धांत, राजनीतिक विचार से भिन्न है। अतः राजनीतिक सिद्धांत विचार का अनिवार्य रूप से मिश्रित तरीका है। यह न केवल आगमनात्मक तर्क और अनुभवजन्य सिद्धांत को समाविष्ट करता है, अपितु उन्हें मानकीय प्रयोजन के साथ जोड़ता है, इसलिए एक व्यावहारिक, कार्यवाई-मार्गदर्शक चरित्र प्राप्त करता है। यह उन चीजों के व्यापक, सुसंगत और सामान्य स्पष्टीकरण तक पहुंचने का प्रयास है, जिनके बारे में हम बात करते हैं जब हम राजनीति के बारे में चर्चा करते हैं। एक सुसंगत राजनीतिक सिद्धांतकार, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक अवधारणाओं के मध्य विचरण करने में सक्षम होता है। राजनीतिक सिद्धांत में राजनीतिक अभ्यास के ज्ञान का समुचित समावेश होना चाहिए। राजनीतिक सिद्धांत का एक दूसरा पहलू यह है कि यह हमेशा उन विशिष्ट स्थितियों और समस्याओं से परिभाषित होता है, जिन्हें राजनीतिक विचारकों ने देखा है। राजनीतिक सिद्धांत को समझने के लिए, हमें दोनों को यानि कि उन विचारों के इतिहास को समझने की आवश्यकता है जिनके आधार पर विचारकों ने वर्णित किया तथा जिन समस्याओं का सामना वे स्वयं करते हैं और जिसके लिए उनके कार्य को संबोधित किया जाता है। उस संदर्भ का अध्ययन जिसमें राजनीतिक सिद्धांत मूल रूप से उत्पन्न हुआ था, हमें समालोचनात्मक आकलन करने की अनुमति देता है कि उक्त सिद्धांत किस वर्ग विशेष के हितों को परिलक्षित करता है।

उपरोक्त चर्चा के आलोक में, **'राजनीतिक सिद्धांत की समझ'** के पाठ्यक्रम को तीन खंडों में विभाजित किया गया है।

खंड–प्रथम राजनीतिक सिद्धांत के बारे में परिचय देता है और इसकी दो इकाइयां हैं – राजनीतिक सिद्धांत क्या हैः इसके दो दृष्टिकोण–मानकीय तथा अनुभवजन्य, है और राजनीति क्या हैः राज्य व सत्ता (शक्ति) का अध्ययन। यह खंड विद्यार्थियों को राजनीतिक सिद्धांत, इसके ऐतिहासिक विकास और इसके अध्ययन के लिए प्रमुख दृष्टिकोणों के विचार से अवगत कराता है। यह खंड राजनीति, राज्य तथा सत्ता की अवधारणाओं में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

खंड-द्वितीय, राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोणों का परिचय कराता है और इसकी पाँच इकाइयाँ ये हैं–उदारवादी, मार्क्सवादी, रूढ़िवादी, नारीवादी तथा उत्तर-आधुनिक। इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा करने के अतिरिक्त, यह खंड उनका आलोचनात्क विश्लेषण भी करता है, ताकि समालोचनात्क सोच विकसित हो सके।

खंड–तृतीय, लोकतंत्र के व्याकरण के संबंध में है, जिसकी पाँच इकाइयाँ इस प्रकार हैं– लोकतंत्र का विचार, लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व, प्रतिनिधित्व लोकतंत्र तथा इसकी सीमाएं, भागीदारी और मतभेद और लोकतंत्र एवं नागरिकता। यह खंड लोकतंत्र की अवधारणा के बारे में विस्तार से चर्चा करता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के लोकतंत्रों, प्रमुख सिद्धांतों, लोकतंत्र व मतभेद एवं नागरिकता जैसे मुद्दे शामिल हैं। खंड तीन लोकतंत्र के व्याकरण के बारे में है, जिसमें प्रत्येक इकाई में आपकी प्रगति की जांच के लिए अभ्यास दिए गए हैं, जो छात्रों को विषय के बारे में उनकी वैचारिक समझ को परखने में मद्द करेगा। पाठ्यक्रम के अंत में, आगे के विश्लेषण हेतु उपयोगी पुस्तकों की एक सूची स्व–अध्ययन के लिए दी गई है।

खंड 2

राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण

खंड 2 राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण

खंड दो में पांच इकाइयां हैं और जिसमें राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन के लिए मुख्य दृष्टिकोणों को शामिल किया गया है। **इकाई 3**, उदारवादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालती है। उदारवाद एक राजनीतिक विचारधारा है, जो व्यक्तिवाद, स्वतंत्रता, सहनशीलता एवं सहमति की प्रतिबद्धता पर आधारित है। **इकाई 4**, मार्क्सवाद, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रान्ति, एवं साम्यवाद के मुख्य सिद्धांतों से संबंधित है। **इकाई 5**, रूढिवादी राजनीतिक सिद्धांत, इसके विभिन्न अर्थों और विशेषताओ तथा एडमंड बर्क एवं माइकल ओकशॉट के विचारों पर भी प्रकाश डालती है। **इकाई 6** में, नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत, इसकी तीन लहरों तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के बारे में नारीवादी दृष्टिकोण के विषय में चर्चा की गई है। **इकाई 7** अंतिम इकाई है, जो राजनीतिक सिद्धांत के विषय में उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण को उजागर करती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 उदारवादी*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 उदारवादी का सिद्धान्तः परिभाषा और चिन्तक

3.3 उदारवादी के सिद्धान्त के विभिन्न चरण

3.3.1 पुरातन उदारवादी

3.3.2 आधुनिक उदारवादी/कल्याणवाद

3.3.3 नव उदारवादी

3.4 आलोचनात्मक मूल्यांकन

3.5 सारांश

3.6 संदर्भ

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- उदारवादी के सिद्धांत की परिभाषा कर सकेंगे;
- इसकी विशिष्टताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- इसकी विभिन्न अवस्थाओं की चर्चा कर सकेंगे; और अन्ततः
- इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

राजनीतिक विचारधारा क्या है? राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र में विचारधारा शब्द का प्रयोग दो संदर्भों में किया जाता हैः प्रथम, यह एक विचारों का समूह है जिसमें विशेष लोग या समूह, पार्टी, राष्ट्र शामिल होते हैं जो इसका परीक्षण नहीं करते हैं और सर्वसम्मति से इसको स्वीकार करते हैं। द्वितीय, इसमें विचारों को विज्ञान के माध्यम से निर्धारित करते हैं जिसमें विभिन्न विचारों की समीक्षा की जाती है। यह देखा जाता है कि किस प्रकार से सत्य को विकृत किया गया है तथा किस प्रकार से हम इस विकृति को ठीक कर सकते हैं, और किस प्रकार से वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं, इन सबका परीक्षण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, हम अपनी सामाजिक वास्तविकताओं को स्पष्ट करते हैं, और कुछ विशेष तरीकों से इसकी व्याख्या करते हैं, परस्पर सिद्धांतों के समूहों को विकसित करके उसे प्रस्तुत करते हैं, राजनीतिक प्रकृति का फिर प्रतिरोध करते हैं एवं इसके पश्चात् समुचित कार्यविधि करने के लिए निर्धारित करते हैं, उसे पूरा करने के लिए कटिबद्ध होते हैं। उदारवादी एक राजनीतिक विचारधारा है जैसे कि समाजवाद, फासीवाद और राष्ट्रवाद जो कि व्यक्तिवाद, स्वतंत्रता, सहनशीलता और सहमति या स्वेच्छा पर आधारित होती हैं। यह मतों के वातावरण की रचना थी जिनका जन्म यूरोप में पुनर्जागरण और सुधार के परिणामस्वरूप हुआ था। एक विचारधारा और एक जीवनधारा के रूप में भी, "इसने मध्यम

*डॉ. दिव्या रानी, नई दिल्ली

वर्ग के उद्‌गम होने की स्थिति में उसकी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक अपेक्षाओं व उसकी आशाओं को बेहतर तरीके से प्रभावित किया था जोकि बाद में चलकर पूँजीवादी वर्ग के रूप में उभर कर हमारे सामने आया।" सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों के दौरान जब सामन्ती व्यवस्था का जन्म हो रहा था, इसी समय एक नई राजनीतिक व्यवस्था भी विकसित हो रही थी। जब इंग्लैण्ड और यूरोप में संपूर्ण राष्ट्र-राज्य की स्थापना हुई, इसने एक प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था को जन्म दिया जिसमें राजा सर्वसत्ताधारी था। उदारवादी के आरंभ में पद्‌सोपानक्रम और विशेषाधिकृत प्राधिकार के विरुद्ध विरोध प्रदर्शित किया गया था तथा राजतंत्र के विरोध में जीवन के प्रत्येक पक्ष शामिल थे और उनका विशेषकर मुख्य नारा राजतंत्र से मुक्ति पाना था। व्यक्ति की या व्यक्तिगत स्वतंत्रता की प्राप्ति करना एवं राज्य के प्राधिकारों को चुनौती देना, उदारवादी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्रता की माँग कर रहा थाः जिनमें मुख्य बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक इत्यादि विषय शामिल थे। हालाँकि, स्वतंत्रता के दो भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्य हैंः नकारात्मक और सकारात्मक। इसमें मुख्य समस्या जोकि स्वतंत्रताओं से सम्बन्धित थी, और वह व्यक्ति और राज्य के बीच था। स्वतंत्रता का नकारात्मक या पुरातन आयाम एक लम्बे समय तक प्रबल रूप से प्रभावी रहा विशेषकर पुरातन युग के दौरान जब राज्य न्यूनतम स्तर पर हस्तक्षेप करता था। नकारात्मक और सकारात्मक उदारवादी एक-दूसरे से भिन्नता बनाए हुए हैं अथवा भिन्न स्थितियों में हैं। इनमें से पूर्वोत्तर स्वतंत्रता का हस्तक्षेप या बाधा डालना की अनुपस्थिति, या सत्ताधारी से स्वतंत्रता को स्वतंत्रता मानता है जबकि उत्तरोत्तर नैतिकता और स्व-विकास, स्व-वास्तविकता या महसूस करना और स्वं की विज्ञताओं पर विशेष बल देता था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से देखें तो उदारवादी के सिद्धान्त का अन्य राजनीतिक विचारधाराओं की तुलना में एक लम्बा इतिहास है। हम देखते हैं कि उदारवादी ने विभिन्न राजनीतिक संघर्षों के नक्शों को अपने में समाहित किया हुआ है, इसमें जो मानव ने संघर्ष किया है, उसके स्रोत पिछले 3,000 वर्षों के इतिहास में मौजूद हैं। हालाँकि, कुछ लोगों का दावा है कि इसका इतिहास इससे भी अधिक प्राचीन है। इसमें प्राचीन ग्रीक के इतिहास में साक्ष्य मौजूद हैं कि वहाँ पर सबसे पहले स्वशासन की चिन्गारी आरंभ हुई थी और प्राचीन पीढ़ियों ने अपने संघर्षों में उदारवादी को प्रोत्साहित और उत्साहित किया था। हालाँकि, उदारवादी के दार्शनिक और राजनीतिक स्रोत थॉमस हॉब्बस और जौन लौक के सामाजिक संविदा सिद्धान्त में प्रत्यक्ष रूप में देखे जा सकते हैं। इसके पश्चात् जेरेमी बैनथम और जौन स्टुअर्ट मिल ने अपने उपयोगितावादी (Utilitarian) परिप्रेक्ष्य में इसको विकसित, संशोधित और विस्तारित किया। इसी तरह से हर्बर्ट स्पेंसर ने अपने "सबसे समर्थ के अस्तित्व" के सिद्धान्त के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। वहीं पर थॉमस पेन ने अपने विचार में राज्य को एक "आवश्यक किन्तु घृणित इकाई" बताया है। इसी तरह से आर्थिक मोर्चे पर Physiocrats एड्‌म स्मिथ, डेविड रिकार्डो, थॉमस राबर्ट, माल्थस एवं अन्य विद्वानों ने आर्थिक स्वतंत्रता के लिए एक वैचारिक आधार उपलब्ध करवाया था। एड्‌म स्मिथ और उनके महत्वपूर्ण खोज पर आधारित पुस्तक "वेल्थ ऑफ नेशनस" ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था की एक नया परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया।

3.2 उदारवादी सिद्धान्तः परिभाषा और चिन्तक

उदारवादी सिद्धान्त के अनेक वृत्तान्त हैं किन्तु सभी वृत्तान्तों का केन्द्र बिन्दु स्वतंत्रता ही है। हालाँकि, स्वतंत्रता के संदर्भ को उदारवादीी चिन्तकों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। उदारवादी का क्या सिद्धान्त है अथवा उदारवादी क्या है? जैसा कि एक लेखक ने कहा है, उदारवादी राजनीति का एक सिद्धान्त है जो सबसे पहले लोकनीति निर्माण में व्यक्ति

की स्वतंत्रता पर बल देता है। स्वतंत्रता, इस अर्थ में, अवरोधों से स्वतंत्रता दिलाना है, विशेषकर एक अधिनायकवादी राज्य के द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों से मुक्ति दिलाना या उससे स्वतंत्र होना है। वास्तव में यह विचारों का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है, बल्कि यह एक बौद्धिक आन्दोलन है जो नई स्थितियों और चुनौतियों का सामना करने के लिए नए विचारों को समाहित करता है। बैरी (1995) के अनुसार उदारवादी स्पष्टीकरण और मूल्यांकन दोनों स्वीकार करता है और अपनाता है। इसका विश्लेषणात्मक सम्बन्ध घटनाओं के उस क्रम से है जिसको हम सामाजिक व्यवस्था के नाम से जानते हैं और जिसमें आर्थिक, विधिक और राजनीतिक परिघटनाएँ शामिल होती हैं। उदारवादी के मत में, राज्य एक आवश्यक बुराई है। उदारवादी राज्य को एक साधन में रूप में देखता है और व्यक्ति को साध्य के रूप में। यह राज्य की अबाध सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। जौन लौक के अनुसार, उदारवादी मुख्य रूप से निम्नलिखित विश्वासों/सिद्धान्तों पर आधारित है:

i) पुरुष/महिला एक तार्किक रचना है।

ii) व्यक्ति के अपने हित और सामान्य हित में कोई मूल विरोधाभास नहीं हैं।

iii) पुरुष/महिला का जन्म कुछ प्राकृतिक अधिकारों के साथ होता है, जिनका कोई भी सत्ता/प्राधिकारी अतिक्रमण नहीं कर सकता है।

iv) नागरिक समाज और राज्य कृत्रिम संस्थाएँ हैं जिनको व्यक्ति ने सामान्य हित के संरक्षण या सेवा के लिए बनाया है।

v) उदारवादी साध्य बनिस्पत उत्पाद की प्राथमिकता में विश्वास करता है। सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ठीक प्रक्रिया अपनाने के लिए स्वतंत्रता, समानता, न्याय और लोकतंत्र की खोज का उदारवादी विचार/सिद्धान्त है।

vi) उदारवादी व्यक्ति की नागरिक स्वतंत्रताओं को उन्नत करता है जिसमें विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, संस्थान/संस्था बनाने की स्वतंत्रता, आवागमन या गतिविधियों का अधिकार सम्मिलित है तथा कानूनी और न्यायिक प्रक्रिया को कठोरता से लागू करना है।

उदारवादी सिद्धान्त का विकास दो दिशानिर्देशों के अनुसार हुआ है: (क) व्यक्तिवाद और (ख) उपयोगितावाद। व्यक्तिवाद व्यक्ति पर एक तार्किक रचना के रूप में प्रकाश डालता है। इसके आवश्यक तत्व हैं व्यक्ति की प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता की मौजूदगी और निर्णय को सम्पूर्ण मान्यता दी जानी चाहिए, जब लोकनीति का निर्माण किया जाए और निर्णय लिए जाएँ। जौन लौक और एड्म स्मिथ इसके आरंभिक प्रवर्तक हैं। दूसरी ओर, उपयोगितावाद का मानना है कि अधिकतम संख्या के लोगों के सुख व खुशियों का ध्यान रखना आवश्यक है। इसके अंतर्गत कुछ लोगों के हितों को बहुसंख्यक के हितों के लिए दरकिनार किया जा सकता है। बेंथम और मिल उपयोगितावाद के समर्थक हैं।

उदारवादी सिद्धान्त के चिन्तक

उदारवादी की प्रारंभिक व्याख्या करने वालों में जौन लौक (1632-1704), एड्म स्मिथ (1723-90) और जेरेमी बैंथम (1748-1832) शामिल हैं। लौक को उदारवादी के जनक के रूप में जाना जाता है, एड्म स्मिथ को अर्थशास्त्र और राजनीतिक अर्थशास्त्र के जनक और बेन्थम को उपयोगितावाद के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। ये सभी विद्वान अहस्तक्षेप (laissez-faire) सिद्धान्त के समर्थक हैं, जिसमें व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों में राज्य के न्यूनतम हस्तक्षेप के सिद्धान्त को स्थापित किया गया है। वे पुरातन उदारवादी के संस्थापक हैं, जिसको नकारात्मक उदारवादी भी कहते हैं, क्योंकि यह व्यक्ति के आपसी क्रियाकलाप

के क्षेत्र में राज्य के विरुद्ध भूमिका की परिकल्पना करते हैं। लौक सहिष्णुता और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर बल केन्द्रित करते हैं। बेन्थम बाज़ार अर्थव्यवस्था और राज्य की गतिविधियों के क्षेत्र में प्रतिबंध लगाने पर ज़ोर देते हैं। मिल उपयोगितावाद के विचार में संशोधन करने के पक्ष में हैं और सामान्य कल्याण को उन्नत करने के लिए राज्य की गतिविधियों में विस्तार करने के पक्ष में दावेदार थे। उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता को उन्नत करने के लिए राज्य की भूमिका को सकारात्मक बताकर उसकी सिफारिश की है।

जौन स्टुअर्ट मिल (1806-73) ने दार्शनिक आधार पर उपयोगितावाद और अहस्तक्षेप के सिद्धान्त को संशोधित करने के लिए अपने विचार व्यक्त किए हैं, ताकि कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्त के लिए मार्ग सरल बन जाए। इसके पश्चात् टी. एच. ग्रीन (1836-82) ने उदारवादी के सिद्धान्त में नैतिक आयाम को सम्मिलित करने के लिए कहा है ताकि कल्याणकारी राज्य का सिद्धान्त उन्नत होकर संपूर्णता को प्राप्त हो सके। राजनीतिक क्षेत्र में उदारवादी लोकतन्त्र को विकसित करने में सहयोग देता है और आर्थिक क्षेत्र में यह पूँजीवाद को बढ़ावा देने का काम करता है। उदारवादी, सामान्यतः लाभदायक चयन करने और उसकी जिम्मेदारी लेने की व्यक्ति में योग्यता बनाने में विश्वास करता है। यह महत्वपूर्ण है कि उदारवादी द्वारा व्यक्तिवाद पर विशेष ठोस इम्मेन्युअल कैन्ट की ओर से बौद्धिक बचाव पक्ष मिला है जो रूसो से प्रभावित थे। उन्होंने व्यक्ति की स्वायत्तता के लिए स्पष्ट सिद्धान्त की रचना की है। कैन्ट की स्वायत्तता इस अर्थ में समझी जानी चाहिए कि व्यक्ति बाहर के हस्तक्षेपों से मुक्त होता है जैसे कि अवपीड़न या दबाव, धमकी। किसी भी महिला/पुरुष की इच्छा आन्तरिक दबावों से मुक्त होनी चाहिए (मनोभाव और पूर्वाग्रहों से) और इसे तर्कों के आधार पर ही कार्य करना चाहिए।

लौक, कैन्ट और मिल, यह तीनों चिन्तक बहुत महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने उदार परम्परा को साकार रूप प्रदान किया। समकालीन उदारवादी इनसे बहुत प्रभावित रहा है। बीसवीं शताब्दी में सबसे अधिक गहन उदारवादीी चिन्तक जौन रौल्स रहे हैं जिन्होंने उदारवादी के गहन चिन्तन में सहयोग दिया है। रौल्स द्वारा दो महान कृतियों का लेखन किया गया है – ए थ्योरी ऑफ जस्टिस (1975) एवं पॉलिटिक्ल लिबरलिज़्म (1993) इनमें समकालीन वाद-विवाद और परिचर्चा शामिल हैं जो उदारवादी और उसके मूल्यों पर आधारित है। रौल्स के उदारवादी का मुख्य केन्द्र उनका राजनीतिक विचार है जिसमें कहा गया है कि नागरिक अपनी इच्छानुसार मुक्त रूप से चयन करने या उसके मूल्यों व साध्य के अनुसार जीने की अधिकारी है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) उदारवादी के प्रमुख सिद्धान्त क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 उदारवादी के सिद्धान्त के विभिन्न चरण

उदारवादी को तीन श्रेणियों/चरणों में विभाजित किया जा सकता हैः पुरातनवादी, आधुनिक और नव-उदारवादी। हालाँकि नव-उदारवादी समकालीन है और यह पुरातन उदारवादी से प्रभावित है।

3.3.1 पुरातन उदारवादी

प्रारंभ में उदारवादी के सिद्धान्त की व्याख्या सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास थीं और इस बात पर दबाव बनाया गया था कि कानून सभी संविदाओं (contracts) (गुलामी को छोड़ कर) को कार्यान्वियत करे, उस समय यह भी माना जाता था कि व्यक्ति अपने हितों को किस प्रकार से पूरा कर सकता है, स्वयं निर्णय लेने में सक्षम होता है। इसलिए राज्य या सत्ताधारी को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। राज्य को यह अनुमति नहीं थी कि वह अच्छे की अपनी संकल्पना को व्यक्तियों के परस्पर व्यवहार करता है। यह विचार नकारात्मक स्वतंत्रता का है और यह अहस्तक्षेप के सिद्धान्त का नेतृत्व करता है। अर्थात्, यह कहा जा सकता है कि सरकार के आर्थिक कार्यों या क्रियाकलापों में किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसलिए, नकारात्मक स्वतंत्रता के समर्थक या वकालत करने वाले अधिकतर विद्वान जैसे कि एड्म स्मिथ (1723-90), जेरेमी बैन्थम (1748-1832), जेम्स मिल (1773-1836), हर्बर्ट स्पेंसर (1820-1903) और हेनरी सिड्गविक का मानना था कि सरकार या राज्य व्यक्ति के कार्यों में न्यूनतम हस्तक्षेप करें। इस प्रकार से स्वतंत्रता के लिए इन राजनीतिक या आर्थिक तर्कों के संयोजन को पुरातन उदारवादी अथवा अहस्तक्षेप व्यक्तिवाद के नाम से जाना जाता है। उदारवादी के विचार ने यूरोप में सामन्तवाद को कमज़ोर किया व उसे नष्ट करने का कार्य किया और इसके स्थान पर बाज़ार पूँजीपति समाज के रूप में उभर कर हमारे सामने आया। यह पुरातनवादी या उन्नीसवीं शताब्दी के उदारवादी का केन्द्र बिन्दु बन गया था। यह प्रायः जौन लौक के अनुसंधान कार्यों से संबद्ध रहा है, इसके अतिरिक्त एड्म स्मिथ और थॉमस पेन एवं अन्य बीसवीं शताब्दी के चिन्तक जैसे कि फ्राइडरिच बॉन हेयेक, राबर्ट नॉज़िक तथा मिल्टन फ्राइडमैन इन सिद्धान्तों के व्याख्याता के रूप में शामिल रहे हैं। इसके प्रमुख विचार रहे हैं सरकार के कार्यों को सीमित करना, शासन व्यवस्था के द्वारा न्यूनतम हस्तक्षेप करना, निजी सम्पत्ति पर संपूर्ण अधिकार, संविदाओं को बनाए रखने या बरकरार रखने की छूट तथा अन्त में व्यक्तिजनों द्वारा अपनी नियति को स्वीकार करना।

यह जान लेना आवश्यक है कि सन् 1770 के दशक तक लोग यह विश्वास करते थे कि हमें जो अधिकार मिले हैं वे सब, सरकार के द्वारा दिए गए हैं, यानी अधिकार सरकार ही प्रदत्त करती है। लोग यह भी सोचते थे कि व्यक्ति के वहीं अधिकार होते हैं जिन्हें सरकार द्वारा दिए जाते हैं। परंतु इसके पश्चात् ब्रिटिश दार्शनिक जौन लौक और उनसे प्रभावित जैफ्फर्सन ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि वास्तविकता इसके विपरीत है। उनका कहना था कि लोगों के और भी अनेक अधिकार हैं जो सरकार द्वारा दिए जाने वाले अधिकारों से अलग अस्तित्व रखते हैं, जो उनकी (व्यक्तिजनों की) प्रकृति पर निर्भर करते हैं, और उनका एक अटूट हिस्सा भी हैं। इसके अतिरिक्त अपने सिद्धान्तों में यह स्थापित किया कि लोगों में सरकार बनाने की शक्ति है और उनमें यह भी ताकत हैं कि उस सरकार को बर्खास्त कर सकते हैं जो उनके अधिकारों को सुरक्षित नहीं रख सकती है। सरकार का केवल एक ही कार्य है कि वह लोगों को दिए गए अधिकारों को संरक्षित करें। यही उसका विधिवत् कार्य है जिसका उसे पालन करना होता है। प्रसिद्ध चिन्तक जौन लौक जिन्होंने पुरातन उदारवादी के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया, का सबसे महत्वपूर्ण विचार था कि सरकार का

उद्देश्य और न्यायोचित है कि वह अपने नागरिकों के जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति की रक्षा और संरक्षण करें। ये प्राकृतिक अधिकार प्राकृतिक कानून में समाहित होते हैं और उससे संरक्षित भी। लौक का विश्वास था कि समुचित साध्य जिसके द्वारा सरकार इस संरक्षण को मुहैया करवा सकती है, वह एक न्याय व्यवस्था है जोकि कानून द्वारा परिभाषित और संभव हो। सरकार के प्राधिकार की दृष्टि में सभी नागरिक समान माने जाएँगे और नागरिक इस प्राधिकार को स्वीकार करेंगे क्योंकि प्रत्येक नागरिक को जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति के अधिकार की गारन्टी दी गई है। हेवुड (2004) के अनुसार पुरातन उदारवादीी इस बात पर बल देते हैं कि मानव आवश्यक रूप से स्वार्थी और व्यापक रूप से आत्मनिर्भर होते हैं; जहाँ तक संभव हो लोगों को अपने जीवन और परिस्थितियों के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होना चाहिए। इस दर्शन का एक सबसे स्पष्ट कथन स्वतंत्रता की घोषणा (Declaration of Independence) में सम्मिलित हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक औद्योगिक क्रांति और अहस्तक्षेप या स्वच्छन्द बाज़ार के कुछ गंभीर परिणाम हमारे सामने आए, पूँजीवाद के उद्‌गम के रूप में। मुख्य समस्या यह थी कि कुछ थोड़े से ही उद्योगपतियों के हाथों में उद्योगों के लाभ की पूँजी केन्द्रित हो गई। इसके परिणामस्वरूप कारखानों से होने वाले व्यापक लाभ लोगों तक नहीं पहुँच पाए या उनको उद्योगों के लाभों का कुछ भी हिस्सा नहीं मिला और इसका परिणाम यह हुआ था कि गरीबी अत्यधिक हो गई। दूसरी ओर, औद्योगिक क्रांति के कारण वस्तुओं का उत्पादन और सेवाओं की माँग में वृद्धि होने के कारण दोनों का स्तर अत्यधिक हो गया था किन्तु व्यापक लोग न तो वस्तुएँ खरीद सकते थे और न ही सेवाओं का उपभोग कर सकते थे क्योंकि औद्योगिक क्रांति के कारण गरीबी से आम आदमी पीड़ित हो गया था। बाज़ारों की भरमार हो गई थी, व्यवस्था अस्तव्यस्त हो गई और कुछ अवधि के लिए व्यवस्था बाधित हो गई और अन्त में इसके परिणामस्वरूप अत्यधिक मन्दी (Great Depression) के दौर का सामना करना पड़ा था। इसके अतिरिक्त उद्योगपतियों का वर्ग अपनी शक्ति का प्रयोग न केवल आर्थिक कार्यों में ही, बल्कि ये लोग कुछ सीमाओं तक अपने प्रभावों का प्रयोग सरकार के कार्यों को भी नियंत्रित करने में लगे थे और इस सबके कारण सामाजिक सुधारों में बेहद बाधाओं का सामना करना पड़ा था। अहस्तक्षेप बाज़ार अर्थव्यवस्था के संदर्भ में यह पुरातन उदारवादी की मुख्य कमजोरी बना।

3.3.2 आधुनिक उदारवादी/कल्याणवाद

उपर्युक्त समस्या समाज में एक नए परिवर्तन को लायी – कारण कामगार श्रेणी का उद्‌भव। इस तरह से बीसवीं शताब्दी में कामगार श्रेणी में वृद्धि होने पर पुरातन उदारवादी पर प्रश्न उठाए जाने लगे तथा नकारात्मक स्वतंत्रता को इसके समर्थन के प्रमुख तर्क व वाद-विवाद को अर्थात् अहस्तक्षेप बाज़ार। अहस्तक्षेप व्यक्तिवाद के कारण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला और इसके परिणामस्वरूप कामगार वर्ग को उसके वास्तविक हिस्से से वंचित कर दिया गया, अर्थात् उसको उसके श्रम का फल नहीं मिला था। इसके पश्चात् उदारवादी का एक नया स्वरूप उभर करके सामने आया – आधुनिक उदारवादी, जिसे कल्याणवाद के नाम से भी जाना जाता है। उदारवादी की इस कड़ी के चिन्तकों का विश्वास था कि सरकार को उन बाधाओं को हटा लेना चाहिए जो व्यक्ति की स्वतंत्रता के मार्ग में आड़े आती हैं। इस कथन या विवरण के मुख्य व्याख्याता टी.एच. ग्रीन थे। उनके अनुसार, सरकार की अत्यधिक शक्ति प्रारंभिक युग में स्वतंत्रता के विरुद्ध एक बड़ी बाधा थी, परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के माध्य में ये शक्तियाँ भारी मात्रा में कम हो गई थीं या फिर उनका न्यूनीकरण कर दिया गया था। अब एक नए प्रकार की अड़चनें या समस्याएँ पैदा हो गई थीं, जैसे कि गरीबी, रोग फैलना, भेदभाव, शोषण और उपेक्षा। इन सबका निधान

या उपाय केवल एक ही था कि सरकार द्वारा सकारात्मक सहायता (सकारात्मक स्वतंत्रता) प्रदान की जाए।

यह जौन स्टुअर्ट मिल (1806-73) थे जिन्होंने सकारात्मक स्वतंत्रता की संकल्पना को प्रस्तुत किया जिसके परिणामस्वरूप नकारात्मक सकारात्मक उदारवादी में परिवर्तित हुआ। हालाँकि मिल ने अहस्तक्षेप व्यक्तिवाद के संरक्षण के साथ आरंभ किया, किन्तु नई सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए इसकी कमियों को अच्छी तरह से समझ लिया और उन्होंने इसमें सुधार करने की प्रक्रिया आरंभ की। इसलिए, उन्होंने एक ऐसे क्षेत्र की खोज आरंभ की जहाँ पर राज्य के हस्तक्षेप के औचित्य को सिद्ध किया जा सकता था। इस वृत्त के बाहर उन्होंने एक व्यक्ति के कार्यों को दो प्रकार से विभाजित किया थाः "स्वयं से सम्बन्धित कार्य" जिनका प्रभाव व्यक्ति के अपने आप पर होने तक सीमित था तथा दूसरा "अन्य से सम्बन्धित कार्य" जोकि दूसरों को प्रभावित करते थे ऐसे भेद को। इसके पीछे मिल के प्रयास थे एक ऐसे क्षेत्र को परिभाषित करने के जहाँ पर एक व्यक्ति के व्यवहार को समुदाय के हितों में या कल्याण में संचालित किया जा सकता है। अतः वह सामाजिक कल्याण की प्राप्ति में राज्य के लिए सकारात्मक भूमिका की तलाश कर रहे थे, भले ही वह व्यक्ति की स्वतंत्रता को एक सीमा तक नियंत्रित करे। यह मिल ही थे जिन्होंने कर देने का एक ठोस सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जन्मजात प्राप्त अधिकारों को सीमित करने के लिए उनका अनुमोदन किया तथा शिक्षा राज्य द्वारा मुहैया कराई जाए। जे. एस. मिल के पश्चात्, टी.एच. ग्रीन (1836-82), एल.टी. हॉब्हाउस (1864-1929), और एच. जे. लास्की (1893-1950) ने स्वतंत्रता की सकारात्मक संकल्पना को विकसित किया। ग्रीन ने अधिकार के सिद्धान्त की अभिधारणा प्रस्तुत की और इस पर बल दिया कि राज्य सकारात्मक भूमिका निभाते हुए ऐसी स्थितियाँ पैदा करें जिसमें व्यक्तिजन प्रभावी रूप से अपनी नैतिक स्वतंत्रता का प्रयोग कर सके। हॉब्हाउस और लास्की ने इस बात की वकालत की कि निजी सम्पत्ति का अधिकार पूरी तरह से मान्य नहीं है और राज्य को आवश्यक रूप से लोगों के कल्याण करने और सुरक्षित रखने का कार्य करना चाहिए। इसलिए, यह कोई विशेष कठिन नहीं है कि कुछ विशेष अधिकार प्राप्त लोगों की आर्थिक स्वतंत्रता के अधिकार पर पाबन्दी लगा दी जाए।

इस बिन्दु को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि सकारात्मक स्वतंत्रता के प्रारंभिक व्याख्याताओं का राजनीतिक चिन्तन कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्त के साथ जुड़ा हुआ था और यह सबसे पहले हमें इंग्लैंड में दिखाई देता है और इसके बाद विश्व के अन्य भागों में इसका विस्तार हुआ था। सकारात्मक स्वतंत्रता को सभी आधुनिक राज्यों में नकारात्मक स्वतंत्रता का अनुपूरक माना गया था। हालाँकि, कुछ समकालीन उदारवादीी चिन्तकों जिन्हें कि स्वातंत्रयवादी (Libertarians) कहा जाता है जिन्होंने नकारात्मक सिद्धान्त पर पुन ज़ोर दिया। इन में इसाइयह बर्लिन (1909-97), एफ.ए. हेयेक (1899-1992), मिल्टन फ्राइडमैन (1912-2006) और रॉबर्ट नॉज़िक (1938-2002) प्रमुख रहे हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बाद से सामाजिक उदारवादी का एक स्वरूप उत्पन्न हुआ जिसमें कल्याणकारी सुधार और आर्थिक प्रबंधन के पक्ष में और अधिक ध्यान दिया गया। यह आधुनिक या बीसवीं शताब्दी के उदारवादी का एक विशिष्ट लक्षण बन गया। यह जौन स्टुअर्ट मिल के विचारों में श्रेष्ठ उभरा, इसके अतिरिक्त कैंट, ग्रीन और हॉबहाउस के विचारों में प्रतिपादित किए थे। अनेक विशिष्ट प्रकारों से आधुनिक उदारवादी स्वतंत्रता (विशेषकर सकारात्मक स्वरूप) और मानव प्रगति के बीच कुछ सकारात्मक संबंध स्थापित करता है। आधुनिक उदारवादीी विश्वास करता है कि व्यक्ति "प्रगतिशील होता है और उसमें स्वयं के विकास के लिए असीमित संभावनाएँ होती हैं, ऐसी जो अन्यों में इसी संभावना को जोखिम

में नहीं डाली। यह दृष्टिकोण न्याय के वितरण के सिद्धान्त को प्रतिपादित करता है और समर्थन भी; साथ ही प्रयोगों जैसे कि कल्याणकारी राज्य। आधुनिक उदारवादी राज्य के प्रति सहानुभूतिपूर्वक प्रवृत्ति को और अधिकता से प्रदर्शित करता है। इसे कल्याणकारीवाद के रूप में भी जाना जाता है।

आधुनिक उदारवादी या कल्याणवाद की प्रक्रिया में प्रथम विश्व युद्ध के कारण बाधाएँ आई। प्रथम विश्व युद्ध का विनाश व्यापक घातककारी था, परन्तु इसका सकारात्मक परिणाम भी सामने आया वह था यूरोप के चार बड़े साम्राज्यवादी – राजवंश – जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी, रूस और ऑटोमन (Ottoman), तुर्की उदारवादीी स्वतंत्रता लोकतन्त्र में परिवर्तित हो गए थे। यूरोप ने वार्साय की संधि (Treaty of Versailles) के द्वारा जोकि स्वयं निर्धारण के सिद्धान्त पर आधारित थी, अपना पुनः निर्माण किया। इसका व्यवहार में अर्थ यह था कि साम्राज्यवादियों को विघटन राष्ट्रीय समरूप (National homogeneous) राज्यों के रूप में सामने आया। इसके पश्चात् लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य आगे होने वाले युद्धों को रोकना और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शांति से सुलझाना था। हालाँकि ये कदम उठाए गए किन्तु भावी युद्धों को रोकने में यह व्यवस्था सफल नहीं हो सकी। अनेक घटनाएँ घटी, जैसे कि विजयी राज्यों द्वारा समझौते की शर्तें बहुत कर्कश रखी गई जिन्होंने अत्यधिक दबाव का स्वरूप प्रदान किया, नाजीवाद का उद्‌गम हुआ और रूस का साम्यवाद इन सबने उदारवादी को चुनौती दी। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि युद्ध के बाद की अवधि में पुराने नारे सम्पत्ति की भागीदारी के स्थान पर विकास दर को बढ़ाने पर जोर रहा। ऐसा इसलिए क्योंकि ब्रिटिश अर्थशास्त्री जे. एम. कीनज़ की नीति से प्रभावित उदारवादीी चाहते थे कि सरकार ऋण ले, कर लगाए और व्यय करे, न केवल व्यापार चक्र को संकुचित होने से रोकने के लिए अपितु अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए भी। अतः इसके पश्चात् युद्ध के बाद के दशकों में उदारवादीी लोकतन्त्रों में सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों का ओर विस्तार हुआ। आधुनिक कल्याणकारी राज्य की ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में आरम्भ की गई जिनमें न केवल सामाजिक सुरक्षा के सामान्य स्वरूप थे, बल्कि उसमें पेंशन, बेरोज़गारी भत्ते, आर्थिक सहायता से चिकित्सा देखभाल, पारिवारिक भत्ते और सरकारी वित्तीय सहायता से उच्च शिक्षा को संचालित करना शामिल थे। उदारवादी लोकतान्त्रिक मॉडल एशिया और अफ्रीका द्वारा अपनाए गए, उन नए राष्ट्रों द्वारा जिन्होंने ब्रिटिश और फ्रांसिसी औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से सन् 1950 और 1960 के प्रारंभिक दशकों में स्वतंत्रता प्राप्त की थी। इन नवीन राष्ट्रों ने पश्चिमी मॉडल को अपनाया था। इनका विश्वास था कि इस मॉडल और पश्चिमी संस्थाओं को अपनाने से वही स्वतंत्रता और समृद्धि की प्राप्ति होगी जैसे कि यूरोप में हुयी। हालाँकि इसके परिणाम मिश्रित रहे हैं।

3.3.3 नव उदारवादी

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् की अवधि में पश्चिमी देशों ने अपूर्व संवर्धन में तीन दशकों में आधुनिक उदारवादी की सफलता को सिद्ध कर दिया था। हालाँकि, सन् 1970 के दशक के मध्य में पश्चिमी देशों में आर्थिक संवर्धन की गति धीमी हो गई जिसके कारण आधुनिक उदारवादी को एक गंभीर चुनौती मिली। इस दशक के अंत में आर्थिक मंदी, कल्याणकारी राज्य के सामाजिक लाभों के संरक्षण ने सरकारों को अत्यधिक कर लगाने तथा व्यापक कर्ज़ की ओर ढकेला जो कि केनिसियन अर्थव्यवस्था की असफलता दर्शाती थी। जहाँ आधुनिक उदारवादियों ने औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में गिरते जीवन स्तर की चुनौती का सामना किया, अन्यों ने इसमें कुछ संशोधनों के साथ पुरातन उदारवादी को फिर से उभारने का अवसर देखा और इसके परिणामस्वरूप नव उदारवादी का जन्म हुआ।

यह पुरातन उदारवादी का समकालीन व्याख्यान है (जिसे स्वेच्छातंत्रवाद के नाम से भी जाना जाता है) और यह अहस्तक्षेप व्यक्तिवाद को फिर से जीवित करना चाहता है। यह कल्याणकारी राज्य की आलोचना करता है, इसलिए यह राज्य के कार्यों का प्रतिरोध करता है और आर्थिक गतिविधियों में राज्य का कोई नियंत्रण नहीं चाहता है। इस परिप्रेक्ष्य के मुख्य व्याख्याताओं में मिल्टन फ्राइडमैन (1912-2006) और रॉबर्ट नॉजिक (1938-2002) हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, इन चिन्तकों ने महसूस किया कि कल्याणकारी राज्य का विचार व्यक्ति की स्वतंत्रता में अहितकारी है क्योंकि यह संसाधनों को अधिक योग्य व्यक्तियों से कम योग्य व्यक्तियों को बलपूर्वक स्थानान्तरण करता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता को फिर से स्थापित करने की दिशा में इन्होंने अहस्तक्षेप के सिद्धान्त को फिर से स्थापित करने के लिए कहा, न केवल आर्थिक क्षेत्र में अपितु सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी। नव उदारवादी व्यक्ति की संपूर्ण स्वायत्तता और स्वतंत्रता की वकालत करता है। राजनीतिक क्षेत्र में यह विशेषकर व्यक्ति को आर्थिक गतिविधियों की सभी बाधाओं से स्वतंत्र करना चाहता है ताकि वह वास्तविक प्रगति और समृद्धि को प्राप्त कर सकें। यह विचारधारा मुक्त बाज़ार प्रतिस्पर्धा के मूल्यों पर बल देती है, इसलिए यह अहस्तक्षेप अर्थव्यवस्था को भी उन्नत करने के पक्ष में है। इसके अतिरिक्त यह आर्थिक और सामाजिक कार्यों में राज्य के न्यूनतम हस्तक्षेप की सलाह देता है और यह इसकी प्रतिबद्धता है कि व्यापार और पूँजी को मुक्त रूप से कार्य करने देना चाहिए। उसमें राज्य सहित कोई भी बाधक न बने।

यद्यपि शब्द एक समान प्रतीत होते हैं, नव-उदारवादी आधुनिक उदारवादी से अलग है। दोनों की विचारधारा का स्रोत उन्नीसवीं शताब्दी की पुरातन उदारवादी है जोकि आर्थिक अहस्तक्षेप का समर्थक था तथा सरकार की अत्यधिक शक्तियों के विरुद्ध व्यक्ति की स्वतंत्रता चाहता था। उदारवादी इस प्रारूप को प्रायः अर्थशास्त्री एड्म स्मिथ के सिद्धान्त के साथ जोड़ा जा सकता है जो अपनी पुस्तक वेल्थ ऑफ नेशन्स (1776) में तर्क प्रस्तुत करते हैं कि बाज़ार एक "अदृष्य हाथ" से संचालित होता है, और इसलिए सरकार द्वारा इस विषय पर न्यूनतम हस्तक्षेप होना चाहिए।

हालाँकि, उदारवादी के समय के साथ क्रमतर विकास में अनेक विभिन्न (और प्रायः प्रतिस्पर्धाकारी) परम्पराओं का समावेश हुआ। आधुनिक उदारवादी की सामाजिक उदारवादी परम्परा से उत्पत्ति हुई है जोकि व्यक्ति की स्वतंत्रता में अड़चन डालने वाले कारकों पर प्रकाश डालती हैं जिसमें गरीबी, असमानता, रोग, शोषण तथा अज्ञानता शामिल थे और जोकि निरंकुश पूँजीवाद के द्वारा पैदा हुए और जिनको केवल राज्य के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से रोका जा सकता था। इस प्रकार के उपायों का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुआ जब कामगारों के लिए क्षतिपूर्ति योजनाएँ, विद्यालयों और अस्पतालों के लिए सार्वजनिक निधियों का प्रावधान, काम करने के घंटों और शर्तों का विनियम करना शामिल थे और आखिर में बीसवीं शताब्दी के मध्य तक सामाजिक सेवाओं की व्यापकता और तथाकथित कल्याणकारी राज्य के विशिष्ट लाभों का हित मिलने लगा था। सन् 1970 के दशक तक, हालाँकि, कुछ आर्थिक गतिहीनता देखने को मिली और सार्वजनिक ऋणों में वृद्धि हुई। इसको देख कर कुछ अर्थशास्त्री पुरातन उदारवादी की वापसी करने की वकालत करने लगे थे जिसमें कुछ सुधारों के साथ संशोधित रूप का उद्गम हुआ जिसे नव-उदारवादी के नाम से जाना जाता है। इस सुधार की बौद्धिक स्थापना प्राथमिक रूप से ऑस्ट्रेया में जन्में ब्रिटिश अर्थशास्त्री फ्राईडरिच बॉन हेयेक ने की जिन्होंने तर्क प्रस्तुत किया कि प्रतिरोधक उपाय जिनका उद्देश्य सम्पत्ति का पुनर्वितरण है, वो सर्वाधिकारवाद को जन्म देते हैं और अमेरिका के अर्थशास्त्री मिल्टन फ्राइडमैन जिन्होंने सरकारी राजकोषीय नीति को व्यापार चक्र को प्रभावित करने के उपाय के रूप में स्वीकार नहीं किया। इनके विचारों को पुरातनपंथी राजनीतिक दलों ने उत्साहपूर्वक ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में लागू

किया। ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मारग्रेट थैचर (1970-90) और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन (1981-89) इन नीतियों का पालन करते हुए लम्बे समय तक शासन में रहें। थैचरवाद एवं रीगनवाद ने लम्बे समय तक सामाजिक-राजनीतिक आर्थिक विषयों पर अपना आधिपात्य रखा।

नव-उदारवादी की विचारधारा और इसकी नीतियाँ धीरे-धीरे प्रभावशाली होने लगीं। इसके उदाहरण थे ब्रिटिश लेबर पार्टी द्वारा अधिकृत तौर पर "उत्पादनों के साधनों पर सामान्य स्वामित्व की प्रतिबद्धता" को त्यागना, यह घटना सन् 1995 की है। तथा लेबर पार्टी और संयुक्त राज्य अमेरिका की डेमोक्रेटिक पार्टी ने सन् 1990 के दशक से सतर्क व्यवहारवादी नीतियाँ अपनाईं। जैसे-जैसे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएँ आर्थिक भूमण्डलीकरण के नए युग में और अधिक अन्तरनिर्भर हुई, वैसे-वैसे नव-उदारवादियों ने मुक्त व्यापार नीतियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी के मुक्त संचार का समर्थन किया। नव-उदारवादी के नए महत्व का सबसे स्पष्ट चिह्न राजनीतिक शक्ति के रूप में स्वेच्छातंत्रवाद का उद्‌गम था। इसका सबसे बड़ा साक्ष्य संयुक्त राज्य अमेरिका में लिबरटेरीयन पार्टी का महत्वपूर्ण उभार था और विभिन्न देशों में थिंक टैंकों का निर्माण जो बाज़ार और सरकारों की संकुचित शक्ति के समर्थक थे। सन् 1990 के दशक में भारत ने भी उदारवादी की विचारधारा को अपनाया। सन् 1990 का दशक उदारीकरण का युग था। विभिन्न क्षेत्रीय संगठनों और अन्तरसंबंधित व्यापार सम्बन्धों ने नया-उदारवादीी आर्थिक नीति को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, सन् 2007 में लेहमैन बैंक का संकट और इसके पश्चात् सन् 2009 में यूरो मुद्रा का भारी संकट उत्पन्न होने के कारण कुछ अर्थशास्त्री और राजनीतिक नेताओं ने बाज़ार के नव उदारवादीी आधिपत्य को नकार दिया। इसके परिणामस्वरूप वित्तीय तथा बैंकिंग उद्योगों के बढ़े हुए सरकारी नियंत्रण की वकालत की।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) पुरातन और आधुनिक उदारवादी के बीच प्रमुख अन्तर क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 आलोचनात्मक मूल्यांकन

यहाँ पर यह नोट करना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि लौक के दार्शनिक और राजनीतिक विश्वासों के आधार पर प्रारंभिक उदारवादी के सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए जिसके मूल सिद्धान्तों के परिणामस्वरूप ही पूँजीवाद को उभरने और उन्नत होने का अवसर प्राप्त हुआ। लौक ने एक विशेष विचार श्रृंखला को विकसित और उन्नत किया था जोकि उभरते हुए नए सौदागर, औद्योगिक वर्ग के आर्थिक हितों का संरक्षण करती थी और इस वर्ग में राजनीतिक शक्ति को काबिज करने का समर्थन। साथ ही यह पूँजीवाद को भी प्रोत्साहित करती थी। उदारवादी एक गतिशील दर्शन है जोकि समय की परिवर्तनशील आवश्यकताओं के प्रति उत्तर देने में समर्थ था, किन्तु यह असफल भी रहा। इस सिद्धान्त में कुल मूल

समस्याएँ हैं जिनको इसकी असफलता कहा जा सकता हैः इसने अपने बुर्जुआ चरित्र को बनाए रखा है – बुर्जुआ वर्ग के हितों को सुरक्षित रखने या उनको उन्नत करने के लिए इसका जन्म हुआ, जब सामन्तशाही तत्वों के माध्यम से सरकार और शासन के द्वारा स्वार्थों को पूरा किया गया और राजनीतिक शक्ति के पास थी। समूहों के हितों में असंतुलन, समकालीन उदारवादी प्रतिनिधि लोकतन्त्र का इस आधार पर समर्थन करता है, राज्य समाज के अन्दर सभी समूहों के हितों को सुरक्षित रखता है और विवादित हितों के मध्य सामंजस्य बैठाता है। फिर भी, इसके मूल तर्कों में परिवर्तन लाना जैसे कि अहस्तक्षेप, व्यक्तिवाद से कल्याणकारी व्यवस्था, लोकतन्त्र को उन्नत करना और मुक्त बाज़ार का समर्थन इस सबसे उदारवादी की जटिलता के लिए आलोचना की जाती है। मार्क्सवादी नागरिक अधिकारों और संभावित समानता की उदारवादीी प्रतिबद्धता की आलोचना करते हैं क्योंकि यह असमान वर्ग शक्ति की वास्तविकता की अनदेखी करता है। महिलावादी तर्क देते हैं कि व्यक्तिवाद सामान्यतः पुरुष मानकों पर आधारित होता है जो लिंग भेद को विधिगत बनाने का कार्य करता है (हेवुड, 2004)। उदारवादी की प्रारंभिक अवधि ने पूँजीवाद को प्रोत्साहित किया था। बीसवीं शताब्दी में कल्याणकारी नीतियों और राज्य के हस्तक्षेप को आधुनिक उदारवादी के सिद्धान्त में एक सीमा तक शामिल किया गया। इसके माध्यम से राज्य के लोकतान्त्रिकरण को भी उन्नत किया गया। हालाँकि बीसवीं शताब्दी तानाशाही, आर्थिक मंदी और युद्ध से ग्रस्त रही। नव-उदारवादी ने व्यापार और आर्थिक अंतःनिर्भरता को प्रोत्साहित किया। इक्कीसवीं शताब्दी एक आर्थिक संकट का सामना कर रही है, जोकि उदारवादी की परीक्षा ले रहा है। विशेषकर, सन् 2009 का यूरो संकट जिसके पूर्व सन् 2007 की भूमण्डलीय वित्तीय संकट हुआ था। अनेक विद्वानों का यह मानना था कि इस नव-उदारवादी बाज़ार अर्थव्यवस्था में विश्व टैंकों द्वारा किए जाने वाले युद्ध का सामना नहीं कर रहा, बल्कि बैंकों के युद्ध का सामना कर रहा है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) उदारवादी की क्या कमियाँ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

उदारवादी का सिद्धान्त एक प्राचीन विचारधारा है, और इसको एक जीवनशैली के रूप में माना गया क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता को उन्नत करता है। इस सिद्धान्त का क्रमतर विकास हुआ है, इसकी मूल संकल्पना अहस्तक्षेप सिद्धान्त से कल्याणकारी राज्य की ओर और पुनः अहस्तक्षेप के न्यूनतम राज्य के साथ और व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता के ऊपर प्रकाश डालते हुए। हालाँकि, कल्याणकारी राज्य की नीति के असफल होने पर और समकालीन वैश्विक आर्थिक संकट ने उदारवादी के सिद्धान्त की कमियों अनेक प्रश्न उठाएँ हैं। उदारवादी के सिद्धान्त का भविष्य और इसका प्रयोग/व्यवहार इस विषय पर निर्भर करता है कि यह समक्ष आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करता है।

3.6 संदर्भ

बैरी, पी. नॉरमन (1995), *एन इंट्रोडक्शन टू मॉडर्न पॉलिटिक्ल थ्योरी*, दि मैकमिलन प्रेसः लंदन।

बेलीस, जौन एवं अन्य (2011), *ग्लोबलाईज़ेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः न्यूयॉर्क।

भार्गव, राजीव एवं अशोक आचार्य, (2008), *पॉलिटिक्ल थ्योरी एन इंट्रोडक्शन*, पीयरसनः नई दिल्ली।

हेवुड, एड्रंयू (2013), *पॉलिटिक्ल थ्योरी एन इंट्रोडक्शन*, पालग्रेव मैकमिलनः न्यूयॉर्क।

झा, शैफाली (2010), *वैस्टर्न पॉलिटिक्ल थॉट*, पीयरसनः नई दिल्ली।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर को दर्शाना चाहिए कि उदारवादी व्यक्ति को एक साध्य के रूप में देखता है और राज्य को उसके साधन के रूप में। साथ ही जौन लौक, ईम्मैन्युअल कांट एवं जे. एस. मिल के विचार शामिल करें।

बोध प्रश्न 2

1) पुरातन उदारवादी में राज्य की न्यूनतम भूमिका के कारण, पूँजीवाद असमानता को उत्पन्न करता है जोकि व्यक्ति के विकास को दबा देती है। आधुनिक उदारवादी प्रत्यक्ष राज्य हस्तक्षेप का तर्क प्रस्तुत करता है ताकि गरीबी, असमानता आदि का हल हो।

बोध प्रश्न 3

1) इस बात पर प्रकाश डालिए कि उदारवादी अपने बुर्जूआ चरित्र को बनाए हुए है, वर्ग विभाजन को जन्म देता है तथा लिंग भेद (असमानता) को वैध ठहराता है।

इकाई 4 मार्क्सवादी*

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मार्क्सवाद क्या है?

- 4.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद
- 4.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद

4.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत

- 4.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
- 4.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद
- 4.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
- 4.3.4 वर्ग-संघर्ष
- 4.3.5 क्रांति
- 4.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व
- 4.3.7 साम्यवाद

4.4 अलगाव का सिद्धांत

4.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत

4.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन

4.7 सारांश

4.8 संदर्भ

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप कार्ल मार्क्स तथा अन्य द्वारा प्रतिपादित मार्क्सवाद के सिद्धांत और व्यवहार के बारे में जान पाएँगे। इस दर्शन के बुनियादी तत्त्वों, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग-संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद की इस इकाई में विस्तार से चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- समाजवाद के पूर्व-मार्क्सवाद के सूत्र, जैसे कि काल्पनिक समाजवाद की चर्चा कर पाएँगे;
- मार्क्सवाद के बुनियादी परिकल्पनाओं का आंकलन, वर्णन तथा चर्चा कर सकेंगे;
- मार्क्सवादी सिद्धांत के दूसरे प्रमुख अंगों जैसे अलगाव और स्वतंत्रता के सिद्धांत की विवेचना कर पाएँगे और अंततः ;
- मार्क्सवाद की समीक्षा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की विवेचना कर पाएँगे।

*प्रो. तेजप्रताप सिंह, गोरखपुर विश्वविद्यालय

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई का उद्देश्य मार्क्सवाद के सिद्धांतों का परीक्षण और व्याख्या करना है, जोकि हमारे युग की सबसे क्रांतिकारी विचारधारा है। उदारवाद के साथ मार्क्सवाद हमारे समय के सबसे प्रमुख दर्शन की श्रेणी में आता है। उदारवाद, आदर्शवाद और मार्क्सवाद राजनीति विज्ञान के तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं। सी.एल. वेपर ने राज्य संबंधी विभिन्न विचारधाराओं राजनीतिक विचारधाराएँ को तीन भागों में बाँटा है, जैसे मशीनरी के रूप में, यांत्रिक रूप में और वर्ग के रूप में। दूसरे शब्दों में, राज्य की जैविक विचारधारा, राज्य की यांत्रिक विचारधारा और राज्य की वर्ग संबंधी विचारधारा। जैविक विचारधारा आदर्शवाद है, यांत्रिक विचारधारा उदारवाद है और वर्ग की विचारधारा मार्क्सवाद है।

इस इकाई को मार्क्सवाद की परिभाषा, काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, क्रांतिकारी और विकासवादी समाजवाद, मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धांतों, समीक्षा तथा निष्कर्ष के रूप में विभाजित किया गया है।

4.2 मार्क्सवाद क्या है?

मार्क्सवाद सामान्यतया जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स के विचारों को दर्शाता है, लेकिन मार्क्सवाद का अर्थ सिर्फ मार्क्स के विचार नहीं हैं। मार्क्सवाद विचारों के उस भाग को प्रकट करता है, जो मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स के विचारों को समाहित करते हैं। इसके अंतर्गत मार्क्स, फ्रिडरिक एंगेल्ज़ और उनके समर्थकों के विचार शामिल हैं, जो अपने आपको मार्क्सवादियों के नाम से पुकारते हैं। मार्क्सवाद एक जीवन दर्शन है। मार्क्सवाद विचारक लगातार मार्क्सवादी दर्शन को अपना योगदान देते रहे हैं। इस प्रकार यह कहा जाता है कि मार्क्स मर गये हैं, परन्तु मार्क्सवाद अभी भी जीवित है।

मार्क्सवादी दर्शन काल मार्क्स के जन्म के पहले भी अस्तित्व में था। इसी कारण से डेविड मैक्लेलन ने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है; *मार्कसिज़्म बिफोर मार्क्स, थॉट ऑफमार्क्स और मार्कसिज़्म आफ्टर मार्क्स*। उसी प्रकार पोलिश विचार लेसज़ेक कोलाकोस्कीने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है। यह बात फिर उठती है कि मार्क्सवाद का अर्थमात्र कार्ल मार्क्स के विचार नहीं हैं।

4.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मार्क्सवाद का अस्तित्व मार्क्स से पहले से था। ये पहले के समाजवादी विचारकों के रूप में जाने जाते हैं। कार्ल मार्क्स उन्हें काल्पनिक समाजवादी पुकारते हैं। वे काल्पनिक थे, क्योंकि उनकी सामाजिक बुराइयों की पहचान सही थी, लेकिन उनका निदान गलत था। यह अव्यवहारिक था, अतः वे काल्पनिक कहे जाते थे। जहाँ कोई शोषण नहीं था और लोग खुश थे। यूटोपिया शब्द की उत्पत्ति थॉमस मूर की यूटोपिया नामक उपन्यास से हुई। यूटोपिया शब्द एक काल्पनिक द्वीप को सूचित करता है, जहाँ एक दोषरहित सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक प्रणाली का अस्तित्व था; कुछ प्रमुख काल्पनिक समाजवादी विचारक हैं रॉबर्ट ओवेन, चार्ल्स फूरियर, लुइस ब्लां, सेंट साइमन, सिसमोंड़ी और प्राऊधौन। यह वैज्ञानिक है क्योंकि यह द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विज्ञान प्रणाली के द्वारा इतिहास की आर्थिक विवेचना प्रस्तुत करता है। यह शोषण के सच्चे कारणों की व्याख्या करता है और क्रान्ति द्वारा अन्य वैज्ञानिक निदान करने हेतु प्रस्ताव भी देता है। यह वर्ग विभाजन और वर्ग संघर्ष के न सिर्फ वैज्ञानिक कारण बताता है परंतु वर्ग-विहीन और शोषण-विहीन की स्थापना के लिए वैज्ञानिक क्रियाविधि भी बताता है।

4.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद

समाजवाद आगे विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद में विभक्त किया जाता है। विकासवादी समाजवाद क्रांति में विश्वास नहीं करता है और समाजवाद को शांतिप्रिय तरीके से प्राप्त करना चाहता है। विकासवादी समाजवादियों का विश्वास संसदीय प्रजातंत्र में है और वे सामाजिक परिवर्तन मतदान के माध्यम से लाना चाहते हैं। वे हिंसा को त्यागते हैं और इस प्रकार हिंसायुक्त क्रांति के विरोधी हैं। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को भी नहीं स्वीकारते हैं और वर्गयुक्त समाज से वर्गविहीन समाज तक को शांतिप्रिय प्रजातांत्रिक मार्क्सवाद परिवर्तन से लाना चाहते हैं। फेबियन समाजवाद, गिल्ड़ (Guild) समाजवाद और प्रजातांत्रिक समाजवाद विकासवादी समाजवाद के विभिन्न प्रकार हैं।

दूसरी तरफ क्रांतिकारी समाजवाद वर्ग-संघर्ष, क्रांति तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व में विश्वास करता है। उसके अनुसार सामाजिक परिवर्तन शांतिप्रिय ढंग से नहीं हो सकता है, इसे हिंसात्मक होना चाहिए। शांतिप्रिय क्रांति अपने आप में विरोधाभास पैदा करती है। क्रांति सामाजिक परिवर्तन की दाई है और इस क्रांति को हिंसात्मक होना चाहिए। क्रांतिकारी मार्क्सवाद, कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद के समकक्ष, सामान्यतया समझा जाता है। श्रमिक संघवाद भी क्रांतिकारी समाजवाद का एक रूप है।

विकासवादी समाजवाद की जड़ें कार्ल मार्क्स और एंगेल्ज़ की विचारधाराओं में देखने को मिलती हैं। उन्होंने राज्य के अपने आप समाप्त होने की बातें की हैं। विकासवादी समाजवादके प्रतिपादकों ने राज्य के स्वतः विनष्टता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है और तर्कदिया है कि शांतिप्रिय माध्यम से धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित किया जा सकता है और शोषणविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना की जा सकती है। फिर भी विकासवादी समाजवाद के आलोचक इस धारणा को स्वीकार नहीं करते हैं और तर्क देते हैं कि राज्य के स्वतः विनाश की विचारधारा सिर्फ समाजवादी राज्य या सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व पर लागू होती है और पूँजीवादी राज्य पर नहीं। यह स्वतः विनष्ट नहीं होगा। इसे हिंसात्मक क्रांति के द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए। अतः विकासवादी समाजवाद के तर्क में कमी है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद के अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिंद्धात

मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत इस प्रकार हैंः द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद। अब, इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

4.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इतिहास की व्याख्या के लिए मार्क्स और एंगेल्ज़ द्वारा विकसित वैज्ञानिक विधि है। यहाँ मार्क्स पूर्ववर्ती विचारकों, विशेषतया, जर्मन दार्शनिक हेगेल से पूरी तरह प्रभावित हैं। द्वन्द्वात्मक (Dialectics) एक बहुत पुरानी विधि है, विरोधी विचारों के संघर्ष के माध्यम से विरोधाभासों को व्यक्त करते हुए सत्य को जानने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। हेगेल ने संवाद (Thesis), प्रति-संवाद (Anti-thesis) तथा संश्लेषण (Synthesis) के तीनों रूपों को विकसित करके इसे पेश किया है। द्वन्द्वात्मक त्रिगुणं (Dialectical Triad) के नाम से मुख्य रूप से इसे जाना जाता हैं। प्रगति या विकास द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से होता है। विकास की प्रत्येक अवस्था में, यह विरोधाभासों द्वारा व्यक्त किया जाता है। ये विरोधाभास आने वाले परिवर्तन, प्रगति और विकास को प्रेरित करते हैं। संवाद को इसके प्रति-संवाद के द्वारा चुनौती दी जाती है। दोनों में सच्चाई और असत्यता क्षणभंगुर होती है। संवाद और प्रति-संवाद के संघर्ष के परिणामस्वरूप, सच्चाई बरकरार रहती है, लेकिन असत्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। ये असत्य तत्त्व विरोधाभासों को जन्म देते हैं। संवाद और प्रति-संवाद के सच्चे तत्त्व संश्लेषण में एक साथ मिला दिये जाते हैं। यह विकसित संश्लेषण समय के अंतराल में संवाद बन जाता है और इस प्रकार यह पुनः अपने विरोधी प्रति.संवाद द्वारा चुनौती प्राप्त करता है, जो पुनः संश्लेषण में बदल जाता है। यह संवाद, प्रति-संवाद और संश्लेषण की प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक यह पूर्णता की अवस्था तक नहीं पहुँच जाती है। इस विकासवादी प्रक्रिया में नयी अवस्था आएगी, जब कोई असत्य तत्त्व नहीं होगा। ये विकास के विभिन्न अवस्थाओं में नष्ट हो जाएँगे। अंततः सिर्फ सत्य ही बचता है, क्योंकि यह कभी भी नष्ट नहीं होता है। यह पूर्ण अवस्था को जन्म देगा और कोई विरोधाभास नहीं होगा और इस प्रकार आगे कोई विकास नहीं होगा। द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया का अंत पूर्ण सत्य पर पहुँचने के बाद हो जाएगा। यह विरोधाभास है, जो द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को बढ़ाते हैं और विरोधाभास का पूरा विनाश अपने आप से द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के अंत को सूचित करता है।

भौतिकवाद के लिए मार्क्स भौतिकवाद के फ्रेंच विद्यापीठ, मुख्यतया फ्रेंच भौतिकवादी विचारक लुडविग फ्युरबैक के पूरी तरह से ऋणी हैं। यह पदार्थ है, जो आखिरकार में वास्तविकता है न कि विचार। बाद वाला पहले का प्रतिबिम्ब है। हम कैसे अपनी रोटी कमाते हैं, यह हमारे विचारों को निर्धारित करता है। यह व्यक्तियों की चेतना नहीं होती है, जो उनके अस्तित्व का निर्धारण करती है। इसके विपरीत, यह उनका सामाजिक अस्तित्व होता है, जो उनके चेतन का निर्धारण करता है। मार्क्स ने टिप्पणी की है कि

''हेगेल का द्वन्द्वात्मक अपने सिर के बल खड़ा था और मैंने उसे पैरों पर खड़ा किया है''। हेगेल ने द्वन्द्वात्मक आदर्शवाद का विकास किया है। उनके अनुसार ये विचार हैं, जो अंततः पदार्थ होते हैं। विचार आधार या उप-संरचना में निहीत होता है, जो उपरी ढ़ाँचे में सभी चीज़ों को निर्धारित करता है। समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था इस उपरी ढ़ाँचे के अंतर्गत हैं, जिसे उस समय के प्रचलित विचारों द्वारा आकार प्रदान किया जाता है। अंततः विचार का ही महत्व है, बाकि सब इसकी परछाई हैं। मार्क्स ने विचार की जगह पदार्थ को रखा। मार्क्स के अनुसार, भौतिक या आर्थिक बल उप-संरचना के अंतर्गत आते हैं और विचार उपरी ढ़ाँचे का एक अंग हैं। विचार भौतिक बलों का प्रतिबिम्ब हैं। आर्थिक बल विचार को निर्धारित करता है और न कि दोनों को। इस प्रकार मार्क्स ने विचार और पदार्थ की स्थिति को पलट दिया है। यही मार्क्सवाद कारण है कि वे दावा करते हैं कि ''हेगेल का विचार नीचे की ओर झुका हुआ था और मैंने उसे ठीक किया है''।

आधार या उप-संरचना के अंतर्गत उत्पादन का तरीका और उत्पादन के संबंध निहित होते हैं। ये दोनों मिलकर उत्पादन के रूप को जन्म देते हैं। उत्पादन के तरीके में परिवर्तन तकनीकी विकास के कारण होता है, यह उत्पादन के संबंधों में परिवर्तन लाता है। इस प्रकार उत्पादन के रूप के परिवर्तन उपरी ढ़ाँचे में अनुकूल परिवर्तन लाते हैं। समाज, राजनीति, धर्म, नैतिकता, मूल्यों, आदर्शों इत्यादि उपरी ढ़ाँचे के अंग हैं और उत्पादन के रूप द्वारा निर्धारित होते हैं।

4.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

ऐतिहासिक भौतिकवाद द्वन्दात्मक भौतिकवाद के प्रयोग से इतिहास की व्याख्या करता है। यह द्वन्दात्मक भौतिकवाद की मार्क्सवादी विधि को लागू करने में विश्व इतिहास की आर्थिक व्याख्या करता है। विश्व इतिहास को चार अवस्थाओं में बांटा गया है : प्रारम्भिक साम्यवाद, दास प्रथा, सामंतवाद और पूँजीवाद।

प्रारम्भिक साम्यवाद, मानव इतिहास के सबसे प्रारम्भिक काल को सूचित करता है। यह काल सम्पत्तिविहीन, शोषणविहीन, वर्गविहीन और 'राज्यविहीन समाज था। उत्पादन के साधन पिछड़े हुए थे, क्योंकि तकनीक अविकसित थी। समुदाय उत्पादन के साधनों का स्वामी था। वे निजी स्वामीतत्व के अंतर्गत नहीं थे और कोई शोषण नहीं था। शिकार के लिये पत्थर के हथियार, मछली फंसाने के जाल और अंकुड़ी (hooks) उत्पादन के साधन थे। समूचा समुदाय इनका स्वामी था। उत्पादन सीमित था और स्व-खपत के लिए किया जाता था। कोई अतिरिक्त उत्पादन नहीं था, तो कोई शोषण नहीं था। जब कोई शोषण नहीं था तो कोई वर्ग विभाजन नहीं था। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं था, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं था, तो कोई राज्य नहीं था। इस प्रकार यह साम्यवादी समाज था, लेकिन आदिकालीन प्रकार का था। फिर भी ज़िन्दगी कठिन थी। इसे शोषण, कलह और संघर्ष के अभाव के द्वारा निर्धारित किया जाता था।

तकनीक स्थिर नहीं है; यह लगातार विकसित होती है। तकनीकी विकास उत्पादन में सुधार के लिए होता है। जिससे अतिरिक्त उत्पादन होता है, जो व्यक्तिगत् सम्पत्ति का आधार बनता है। अब उत्पादन के साधन समुदाय के अंतर्गत नही होते हैं, बल्कि निजीस्वामित्व के अंतर्गत आ जाते है। इस प्रकार समाज सम्पत्तिवालों और सम्पत्तिविहीन वर्गों में बंट जाता है। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने की वजह से सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन वर्ग का शोषण करते हैं। चूँकि संघर्ष होता है, प्रभावी वर्ग, यानि की सम्पत्ति वाला वर्ग राज्य नाम की एक दमनकारी संस्था का निर्माण करते हैं, जोकि आश्रित वर्ग यानि कि सम्पत्तिहीन वर्ग के विरोध को कुचलता है। इस प्रकार राज्य एक वर्ग यंत्र और दमनकारी संस्था है। यह अपने निर्माता के हितों की रक्षा करता है, जो सम्पत्ति वाले वर्ग हैं।

प्रारम्भ में इस समाज को स्वामी और गुलाम के रूप में बांटा गया है। स्वामी सम्पत्ति वाले (the haves) हैं और गुलाम सम्पत्ति विहीन (the have nots) हैं। गुलाम उत्पादन के सारे कार्य को करते हैं। स्वामी गुलामों की मेहनत पर जीते हैं। वे गुलामों का शोषण करते हैं और जब कभी गुलाम विरोध करते हैं, तब राज्य स्वामी के बचाव में आता है। इस प्रकार, राज्य स्वामी वर्ग के हितों की रक्षा करता है। यह अपनी दमनकारी शक्तियों से गुलामों की आवाज़ को दबाता है।

दास प्रथा का सामंतवाद अनुगामी बन जाता है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधन में परिवर्तन लाता है और यह उत्पादन और उपरी ढ़ाँचे के संबंध में अनुकूल परिवर्तन लाता है। दास प्रथा उत्पादन के सामंती ढ़ांचे में परिवर्तित हो जाता है और यह समाज, राजनीति, नैतिकता और मूल्य प्रणाली में झलकता है। समाज का सामंतों और किसानों में विभाजन सामंतवाद को दर्शाता है। सामंतों का उत्पादन के साधनों पर अधिपत्य होता है, जो कि भूमि है, लेकिन किसान उत्पादन कार्य करता है। भूमि का स्वामित्व होने के कारण, सामंत बिना कुछ किये उत्पादन का बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है। इस प्रकार सामंत परजीवी (parasite) के सामान होता है, जो किसानों की मेहनत पर संपन्न होता है। सामंत किसानों का शोषण करता है और यदि किसान कभी अपने शोषण का विरोध करता है, तो उसके विरोध को राज्य निर्दयता से कुचल देता है, क्योंकि राज्य सामंतों के हितों की रक्षा और उनकी सेवा करता है। जहाँ किसान आश्रित और शोषित वर्ग होता है, वहीं स्वामी प्रभावी और शोषक वर्ग होता है।

पूँजीवाद सामंतवाद का अनुगामी होता है। तकनीकी विकास जारी रहता है, इसलिए उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन होता है, जो उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के बीच बेमेल पैदा करता है, जिसका समाधान क्रांति से होता है। इस प्रकार उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों में विरोधाभास का समाधान होता है। सामंती उत्पादक का ढ़ांचा पूंजीवादी उत्पादन के ढ़ांचे में बदल जाता है। समाज का पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग में विभाजन पूँजीवाद को दर्शाता है। पूंजीपति वर्ग का उत्पादन के साधनों पर अधिकार होता है, लेकिन सर्वहारा वर्ग उत्पादन करता है। सर्वहारा लोग औद्योगिक श्रमिक होते हैं; वे कम वेतन के बदले अपना श्रम बेचते हैं। यह व्यवहारतः आजीविका के लिए वेतन होता है, जिससे श्रम की अबाधित आपूर्ति को बरकरार रखा जा सकता है। उत्पादन स्वयं के खपत के लिए नहीं होता है, बल्कि मुनाफे के लिए होता है। अधिकतम मुनाफे की इच्छा वेतन में कमी और कार्य अवधि में बढ़ोत्तरी करती है। यह आगे श्रमिक वर्ग की स्थिति को बिगाड़ता है, जो अंततः उन्हें इस स्थिति में पहुँचा देता है, जहाँ खोने के लिए कुछ नहीं होता है। यह सर्वहारा क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) द्वन्दात्मक भौतिकवाद के अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रारम्भिक साम्यवाद या सामंतवाद के मुख्य विशेषताओं की गणना और वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

मार्क्स ने पूँजीवादी समाज में शोषण की व्याख्या करने के लिए अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत को विकसित किया है। यहाँ मार्क्स पुराने अर्थशास्त्रियों के सिद्धांतों से प्रभावित थे। वे मूल्य के श्रम सिद्धांत से सहमत थे। सामान का मूल्य इसके उत्पादन में लगे श्रम की मात्रा से आंका जाता है। श्रम भी एक सामान है। इसे दूसरे सामानों की तरह खरीदा और बेचा जा सकता है। उत्पादन के चार कारकों में श्रम सबसे सर्वोच्च है। इसके अभाव में उत्पादन के दूसरे कारक भूमि, पूँजी और संगठन बेकार हैं। उत्पादन के इन कारकों के लिए श्रम का प्रयोग होता है, जो उन्हें उत्पादक बनाता है। श्रम के अभाव में वे बंजर होते हैं।

यदि वेतन श्रमिक द्वारा उत्पन्न की गयी कीमत (Value) के अनुपात में दिया जाता है, तो कोई शोषण नहीं होता है, लेकिन यह अवस्था पूँजीवाद में नहीं होती हैं। श्रम इस अर्थ में अनोखा होता है कि यह अपने रख-रखाव की कीमत से ज़्यादा मूल्य उत्पन्न करता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न किये गये मूल्य तथा श्रमिकों को वेतन के रूप में दिए गए मूल्य में अंतर होता है, और यह अतिरिक्त मूल्य पूँजीपति का मुनाफा होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई श्रमिक एक महीने में 25,000 रुपये मूल्य उत्पन्न करता है और उसे वेतन के रूप में 15,000 रुपये दिये जाते हैं, तो बचे हुए 10,000 रुपये पूँजीपति का लाभ होगा। इस प्रकार श्रमिक सदैव अधिक मूल्य पैदा करते हैं, जबकि उसे वास्तव में कम वेतन मिलता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न यह अतिरिक्त मूल्य पूंजीपति (bourgeois) का लाभ होता है, जिसका बचाव पुराने अर्थशास्त्री करते हैं, क्योंकि यह संपत्ति संग्रह करता है, जिसे आगे नये उद्योगों तथा उपक्रमों में लगाया जाता है और जिससे विकास और खुशहाली आती है। मार्क्सवादियों के अनुसार, यह श्रमिकों का शोषण है, जिसे समाप्त किया जाना चाहिए।

पूँजीवाद के विकास और प्रतियोगिता में बढ़ोतरी होने से श्रमिकों के वेतन में लगातार गिरावट आती है और सिर्फ गुजर-बसर करने के स्तर की अवस्था आ जाती है। जीवन यापन करने लायक वेतन न्यूनतम वेतन होता है। यह वेतन उत्तरजीविता के लिए जरूरी है और लाभ को चिरस्थायी बनाता है। इस प्रकार पूँजीवाद में गहन प्रतियोगिता सर्वहारा की अति क्षति का सूचक होता है। यह वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देता है और अंततः क्रांति को लाता है।

4.3.4 वर्ग संघर्ष

मार्क्स के अनुसार, अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। सिवाय प्रारम्भिक साम्यवादी अवस्था को छोड़कर सभी ऐतिहासिक कालों में प्रभावी और आश्रित वर्गों या सम्पत्ति वाले और सम्पत्ति विहीन के बीच सक्रिय विरोध रहा है। यह सक्रिय विरोध वर्ग विरोधाभासों से पैदा होता है; यह सम्पत्तिविहीन वर्ग का सम्पत्ति वाले वर्ग द्वारा शोषण के परिणामस्वरूप होता है। पूरे इतिहास में प्रत्येक युग में दो विरोधी वर्ग रहे हैं। दास

प्रथा में स्वामी और दास, सामंतवादी प्रथा में सामंत और किसान तथा पूंजीवाद में पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग। दास, किसान और सर्वहारा उत्पादन करते हैं, लेकिन उनके उत्पाद को उनके शोषकों के द्वारा ले लिया जाता है और बदले में उन्हें सिर्फ़ दैनिक गुज़ारे के लिए वेतन देते हैं। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने के कारण सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन का शोषण करते हैं। यही वर्ग संघर्ष का मुख्य स्रोत और कारण हैं। विरोधीवर्गों के बीच कोई समझौता या मेल संभव नहीं है। प्रत्येक युग में विरोधी वर्गों के अन्तर्निहित विरोधाभासों को सिर्फ़ शोषक वर्गों के सर्वनाश से सुलझाया जा सकता है।

4.3.5 क्रांति

वर्ग संघर्ष क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। वर्ग संघर्ष अतींद्रिय (imparceptible) होता है, लेकिन क्रांति अनुभवगम्य (perceptible) होती है। वर्ग संघर्ष की गहनता क्रांति के लिए आधार का निर्माण करती है। वर्ग संघर्ष लम्बे समय तक चलने वाली गतिविधि है, लेकिन क्रांति थोड़े समय के लिए तेज़ी से और हिंसात्सक होती है। मार्क्स के शब्दों में''क्रांति सामाजिक परिवर्तन की आवश्यक दाई होती है''। इतिहास के एक चरण से दूसरे में परिवर्तन क्रांति से होता है।

क्रांति तब होती है, जब उत्पादन की शक्तियों या साधनों और उत्पादन के संबंधों के बीच असामंजस्य होता है। इस असमांजस्य का समाधान करने के लिए क्रांति होती है, जो उत्पादन के साधनों या शक्तियों के साथ सामंजस्य लाने के लिए उत्पादन के संबंधों और उपरी ढ़ाँचे में अनुकूल परिवर्तन लाती है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधनों में परिवर्तन लाता है। हस्तशिल्प आपको सामंती समाज प्रदान करते हैं और भाप चालित (steam) मिल, औद्योगिक पूँजीवादी समाज देते हैं।

सर्वहारा क्रांति इतिहास में अंतिम क्रांति होगी। क्रांति विरोधाभासों के समाधान के लिए होती है। सर्वहारा क्रांति के बाद, आगे कोई क्रांति नहीं होगी, क्योंकि कोई विरोधाभास नहीं होगा फिर भी, क्रांति तब होगी, केवल जब उत्पादन की शक्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जायेंगी और उत्पादन के संबंधों से मेल नहीं खायेंगी। क्रांति इस बेमेल का अंत करती है।

सामाजिक विकास के क्रम और दिशा को परिवर्त्तित नहीं किया जा सकता है। कोई भी अवस्था दूसरी अवस्था को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती है। कोई भी अवस्था छोटी परिधि वाली नही हो सकती है। प्रारम्भिक साम्यवाद से दास प्रथा, दास प्रथा से सामंतवाद और सामंतवाद से पूँजीवाद सर्वहारा का अधिनायकत्व या समाजवाद पूँजीवाद पर विजय प्राप्त करेगा, जो सामाजिक विकास की अंतिम से पहली अवस्था होती है। सर्वहारा का अधिनायकत्व अंततः साम्यवाद की स्थापना करेगा। सर्वहारा क्रांति के साथ, क्रांति का स्वतः अंत हो जाएगा।

4.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व

सर्वहारा क्रांति सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना करेगी। यह समाजवादी राज्य के नाम से भी जानी जाती है। पूंजीपति वर्ग द्वारा उत्पन्न राज्य के अंग, जो सर्वहारा को दबाने का काम करते थे, उसका नियंत्रण सर्वहारा वर्ग के हाथ में ही होगा। पूंजीपति वर्ग पुरानी व्यवस्था को पुनः प्राप्त करने के लिए विरोधी क्रांति करने की कोशिश करेगा और इस प्रकार राज्य मार्क्सवाद की दमनकारी संस्थाओं द्वारा पूंजीपति वर्ग को नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।

राज्य सदैव दमन का साधन रहा है। प्रभावी वर्ग ने आश्रित वर्ग पर दमन करने के लिए राज्य की उत्पत्ति की है। यह एक वर्ग साधन है। राज्य रक्षा करता है और अपने निर्माता के हितों का ख्याल करता है, जो सम्पत्ति संपन्न वर्ग होता है। यह वर्ग सदैव अल्पसंख्यक रहा है, चाहे वह स्वामी या सामंत या पूँजीपति हो। इस प्रकार अल्पसंख्यक बहुसंख्यक का शोषण करते रहे हैं, जैसे गुलामों या किसानों या सर्वहारा का राज्य के दमनकारी अंगों द्वारा। सर्वहारा के अधिनायकत्व के अंतर्गत, पहली बार राज्य बहुसंख्यक के नियंत्रण में आता है। अब पहली बार राज्य के दमनकारी यंत्र का उपयोग बहुसंख्यक के द्वारा अल्पसंख्यक के विरुद्ध होता है।

मार्क्स के अनुसार सभी राज्यों का अधिनायकत्व रहा है। अतः समाजवादी राज्य कोई अपवाद नहीं है। यह भी एक अधिनायकत्व है। राज्य का इस्तेमाल सदैव एक वर्ग का दूसरे वर्ग को दबाने के लिए किया जाता रहा है। समाजवादी राज्य में सर्वहारा वर्ग राज्य के दमनकारी अंगों जैसे सेना, पुलिस, जेल, न्यायिक प्रणाली इत्यादि का प्रयोग पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध करेगा। मार्क्स तर्क देते हैं कि यदि प्रजातंत्र का अर्थ बहुसंख्यक का शासन होता है, तो सर्वहारा राज्य सबसे प्रजातांत्रिक राज्य है क्योंकि पहली बार इतिहास में सत्ता बहुसंख्यक के हाथों में आती है। सर्वहारा राज्य के पहले, सत्ता सदैव अल्पसंख्यकों के हाथों में रही है। इसलिए यदि बहुमत का शासन मापदंड है, तो मात्र सर्वहारा राज्य ही प्रजातांत्रिक राज्य कहा जा सकता है।

4.3.7 साम्यवाद

सर्वहारा के अधिनायकत्व की जीवित देखभाल के अंतर्गत, समाजवादी राज्य साम्यवाद के रूप में उभरेगा। समाजवाद क्षणभंगुर अवस्था है। यह साम्यवाद का रास्ता प्रशस्त करेगा, जो स्थिर और स्थायी होता है। यह सामाजिक विकास का काल होगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद आगे कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं होगा। द्वन्दात्मक प्रक्रिया का अंत हो जाएगा। एक पूर्ण, विवकेशील सामाजिक प्रणाली की स्थापना होगी जोकि शत्रुओं और विरोधाभासों से मुक्त होगी। कोई वर्ग विरोधाभास नहीं होगा, इसलिए कोई वर्ग संघर्ष नहीं होगा। वास्तव में साम्यवाद वर्गविहीन, निजी सम्पत्तिविहीन और शोषणविहीन समाज होगा।

साम्यवाद समाज में उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व के रूप में कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। उत्पादन के साधनों पर समुदाय का स्वामित्व होगा। सहयोग न कि प्रतियोगिता साम्यवादी समाज का आधार होगा। उत्पादन खपत के लिए होगा न कि मुनाफा कमाने के लिए; मुनाफे की प्रवृत्ति सामाजिक आवश्यकताओं में बदल जाएगी। जब कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी, तो कोई शोषण नहीं होगा। जब कोई शोषण नही होगा, तो कोई वर्ग विभाजन, कोई सम्पत्ति सम्पन्न और सम्पत्तिविहीन वर्ग, या कोई प्रभावी और आश्रित वर्ग नहीं होगा। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं होता है, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं होता है, इसलिए राज्य की आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण से साम्यवादी समाज वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज होगा।

राज्य शोषण का मंत्र होता है, यह वर्ग यंत्र होता है, परिणामस्वरूप समाज में वर्ग विभाजन होता है। साम्यवाद में श्रमिकों का मात्र एक वर्ग होता है, कोई दूसरा वर्ग दबाने और दमन करने के लिए नहीं होता है, अतः राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होगी। यह साम्यवादी समाज में फालतू बन जाएगा। इसे संग्राहालय को सौंप दिया जाएगा। राज्य फिर भी खत्म नहीं होगा। यह धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा।

साम्यवादी समाज लुईस ब्लां (Louise Blanc) के सिद्धांत – 'प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करेंगे और प्रत्येक को अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त होगा,' –पर

शासित होगा। परजीवियों के लिए कोई स्थान नहीं होगा। जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा नहीं। सिर्फ श्रमिकों का एक वर्ग होगा। समूचा समाज श्रमिक वर्ग में बदल जायेगा। शोषण का कोई स्थान नहीं होगा। यह समतावादी समाज होगा। लोगों के बीच सद्भावपूर्ण संबंध होगा।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) वर्ग संघर्ष की अवधारणा की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) साम्यवादी समाज की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन तथा मूल्यांकन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 अलगाव का सिद्धांत मार्क्सवाद

मार्क्सवादी दर्शन में दो विशिष्ट काल रहे हैं। 1844 का इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्युस्क्रिप्टस मार्क्सवाद के मानवीय चेहरे को उजागर करता है। इसमें बिना वर्ग शत्रुता, वर्ग संघर्ष तथा हिंसात्मक क्रांति के संदर्भ के पूँजीवाद को विश्लेषित किया गया है। यहाँ पूँजीवाद के बुरे प्रभावों की अलगाव, पहचान और स्वतंत्रता के खोने के आधार पर व्याख्या की गयी है। मार्क्स के इन दृष्टिकोणों को युवा मार्क्स के साथ जोड़ा जाता है। 1848 के साम्यवादी कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो में मार्क्स के दर्शन में एक बदलाव देखने को मिलता है। बाद का मार्क्स परिपक्व मार्क्स के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत की स्थापना की। मार्क्स के प्रारम्भिक विचारों को सिर्फ 1932 में प्रकाशन के साथ ही जाना गया था।

अलगाव का सिद्धांत एक मार्क्सवादी अवधारणा है। हंगेरियन मार्क्सवादी जार्ज लुकास ने 1932 के प्रकाशन के पहले ही पूरी तरह से अपने बलबूते अलगाव के सिद्धांत को विकसित किया है। फिर भी अलगाव की अवधारणा मैन्युस्क्रिप्टस प्रकाशन के बाद ही लोकप्रिय बनी।

मार्क्स ने अलगाव के चार स्तरों का ज़िक्र किया है। सर्वप्रथम मनुष्य अपने उत्पाद और कार्य प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ जाता है, क्योंकि श्रमिक को यह तय करने में कोई भूमिका नहीं है कि किस चीज का उत्पादन करना है और कैसे। द्वितीय, व्यक्ति प्रकृति से अलग हो जाता है। उसका कार्य उसे एक रचनात्मक श्रमिक के रूप में संतोष प्रदान नहीं करता है। यांत्रिकीकरण के अन्तर्गत, कार्य तेज़ी से समयबद्ध और उबाने वाला बनता जा रहा है। तीसरे, व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अलग से हो जाता है। पूँजीवादी प्रणाली का प्रतियोगी चरित्र प्रत्येक को अन्य व्यक्ति की कीमत पर जीने को मजबूर कर एक दूसरे से अलग कर देता है। आखिरकार व्यक्ति स्वयं से कट जाता है। आवश्यकता का क्षेत्र उसके जीवन को काबू करता है और सांस्कृतिक विरासत के लिए कोई समय नहीं होता है। पूँजीवादी प्रणाली पूँजी और सम्पत्ति के निजी स्वामित्व के द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं को सभी मानवीय संकायों और क्षमताओं में अधीनस्थत करती है। पूँजीपति अपने आप में श्रमिक से कम नहीं होता है, और पैसे के निरंकुश शासन का गुलाम बन जाता है।

4.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत

मानववादी दर्शन के रूप में मार्क्सवाद मुख्यतया मानव स्वतन्त्रता का दर्शन है। स्वतन्त्रता न सिर्फ मानवीय आवश्यकताओं की भौतिक संतष्टता है, बल्कि अमानवीयकरण, संबंध विच्छेद और अलगाव की अवस्थाओं को दूर करना भी है। पूँजीवादी प्रणाली आवश्यकता को स्वतंत्रता के विरोधी के रूप में वर्गीकृत करती है। आवश्यकता उन अवस्थाओं को सूचित करती है, जिसके अंतर्गत प्रकृति के अनिवार्य नियम व्यक्ति के जीवन को शासित करते हैं। प्रकृति के ये नियम मानव इच्छा से परे होते हैं। व्यक्ति इन नियमों के वैज्ञानिक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, लेकिन उन्हें अपनी इच्छा से बदल नहीं सकता है। स्वतंत्रता आवश्यकता से अलग हट नहीं सकती है। स्वतन्त्रता प्रकृति के इन नियमों के ज्ञान में निहित होती है और इन नियमों को क्षमता प्रदान करने में जो मानव समाज के कल्याण लिए कार्यरत है।

इस प्रकार पूँजीवादी प्रणाली को चलाने वाली उत्पादक शक्तियों का ठोस ज्ञान और एक कार्यक्रम जो इन शक्तियों को मानव कल्याण के लिए चलाए, स्वतंत्रता का जरूरी भाग है। मानव समाज की स्वतंत्रता और सच्ची स्वतन्त्रता का अनुभव सिर्फ पूँजीवाद के विनाश और साम्यवाद की स्थापना से ही संभव होता है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) आप अलगाव के सिद्धांत या स्वतन्त्रता के सिद्धांत का वर्णन करें।

.....

.....

.....

4.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन

मार्क्सवाद कठोर आलोचना का विषय रहा है। इसने समाज को दो वर्गों, जिनके पास सबकुछ (the haves) है और जिनके पास कुछ नहीं है (the have-nots) में विभाजित किया है। यह वास्तविकता से दूर है। समाज बहुत जटिल होता है और कुछ समूहों में बंटा होता है। जैसे कि मार्क्सवाद की परिकल्पना है, वैसा कोई स्पष्ट वर्गों का विभाजन नहीं होता है। ज्यादातर, इसमें विशाल मध्यम वर्ग होता है। मार्क्सवादी विचारकों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद के विकास के साथ, मध्यम वर्ग विलीन हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग के साथ मिल जाएगा लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है और ऐसा होने की कोई संभावना नहीं है। वास्तव में इसके विपरीत हुआ है; मध्यम वर्ग ने अपनी स्थिति को मजबूत किया है और अपने आकार को बढ़ाया है। मार्क्सवादियों ने पूँजीपति वर्ग के सिमटने की बातें की थीं। यहाँ पुनः ठीक इसके विपरीत हुआ है। सिमटने के बदले पूँजीपति वर्ग का आधार विस्तृत हुआ है। मार्क्स ने पूँजी संग्रह की बात की थी, लेकिन पूँजी का बिखराव हो गया है। सर्वहारा वर्ग की स्थिति वैसी नहीं बिगड़ी है, जैसे कि मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार, पूँजीवाद की वास्तविक कार्यकारी प्रणाली ने वर्गों के मार्क्सवादी सिद्धांत को गलत साबित किया है।

मार्क्सवादियों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद अन्तर्विरोध के कारण बिखर जाएगा। लेकिन, अभी तक ऐसा घटित नहीं हुआ है। कोई विकसित पूँजीवादी व्यवस्था ध्वस्त नहीं हुई है। पूँजीवाद ने अपने लचीलेपन को साबित किया है। दूसरी ओर, समाजवादी व्यवस्था, दुनिया के विभिन्न भागों में ध्वस्त हो गयी है। पूँजीवाद के पास सामंजस्य बिठाने की अपारशक्ति है। यही इसके जीवंत होने का मुख्य कारण है। मार्क्स पूँजीवाद का सही आंकलन करने में असफल रहे हैं।

मार्क्स के अनुसार, सर्वहारा क्रांति तभी होगी, जब पूँजीवाद परिपक्व हो जायेगा। पिछड़े सामंतवादी समाज में सर्वहारा क्रांति के घटित और सफल होने का अवसर नहीं होता है। लेकिन वास्तव में यही घटित हुआ है। क्रांति सिर्फ सामंतवादी समाजों जैसे रूस, चीन, वियतनाम, क्यूबा इत्यादि देशों में हुई हैं। यह रूसी मार्क्सवादियों के दो गुटों, प्लैखनॉव (Plekhnov) के नेतृत्व में मैनशेविक्स (Mensheviks) और लेनिन के नेतृत्व में बॉलशेविक्स (Bolsheviks) के बीच विवाद का मुख्य मुद्दा था। अंततः बॉलशेविक्स का मैनशेविक्स के ऊपर वर्चस्व रहा, लेकिन मैनशेविक्स मार्क्स के विचारों के अधिक नज़दीक थे। मार्क्स के अनुसार, मार्क्सवाद उनके विचार सामाजिक विकास के जन्म की वेदना को कम कर सकते हैं, लेकिन किसी भी अवस्था को नज़रअंदाज नहीं कर सकते। फिर भी लेनिन और ट्रॉटस्की ने रूस में और माओ ने चीन में पूँजीवाद की स्थापना की प्रक्रिया से गुज़रे बिना सामंतवादी समाज में साम्यवाद की स्थापना की। इस प्रत्यक्ष विरोधाभास के समाधान के लिए ट्रॉटस्की ने थ्योरी ऑफ परमानेंट रिवॉल्युशन, को विकसित किया। उन्होंने अपने सिद्धांत में पूंजीपति वर्ग की क्रांति को सर्वहारा की क्रांति के साथ मिला दिया। ये दोनों क्रांतियां ट्रॉटस्की की दृष्टि में साथ-साथ घट सकती हैं। यद्यपि यह अधिक व्यवहारिक विचार प्रतीत होता है, यह मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों को नहीं स्वीकार करता है।

आर्थिक निर्धारकवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत की कठोर आलोचना की गयी है। यह सिर्फ आर्थिक कारक ही नहीं होता है, बल्कि दूसरे कारक भी सामाजिक परिवर्तन लाने में समानरूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज, नैतिकता, मूल्य प्रणाली इत्यादि को निर्धारित करती है, तब अर्थव्यवस्था भी अपने आप इनके द्वारा निर्धारित होती है। यह दो तरफा प्रक्रिया है। आर्थिक शक्तियाँ राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म, मूल्यों, आदश को इत्यादि के प्रभावों से अछूती नहीं है। यदि आधार या नींव उपरी ढ़ांचे को आकार

देते हैं, तो उपरी ढ़ांचे भी नींव को आकार देती है। इस प्रकार आर्थिक निर्धारकवाद के सिद्धांत को स्वीकारा नहीं जा सकता है। बाद के मार्क्सवादी विचारकों, जैसे कि ग्रामसी ने उपरी ढ़ांचे की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की मार्क्सवादी अवधारणाओं, में कई कमियाँ हैं। सर्वहारा क्रांति के बाद सर्वहारा पूंजीपति वर्ग से राज्य की मशीनरी को छीन लेगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद राज्य फालतू हो जाएगा और धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा। यह घटित नहीं हुआ है। समाजवादी समाज में राज्य वास्तव में सर्व-शक्तिमान बन गया। कमज़ोर होने के बदले राज्य ने अपनी स्थिति दृढ़ बना ली है और इसके मुरझाने की कोई संभावना नहीं है। राज्य समाजवादी और मार्क्सवादी समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा और इसे संग्रहालय को कभी भी सौंपे जाने की कोई संभावना नहीं है।

समाजवादी समाज की जहाँ कहीं भी स्थापना की गयीं है, या तो उसे उतार फेंका गया या नज़रअंदाज किया गया है। जहाँ कहीं भी यह अभी भी जीवित है, इसे बहुत सारे परिवर्त्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जो वर्गीय मार्क्सवाद की विचारधारा से मेल नहीं खाता है। पूर्वी यूरोप में सामयवाद की असफलता, रूस में बिखराव और चीन में आर्थिक सुधारों ने फ्रांसिस फुकुयामा सरीखे विचारकों को मार्क्सवाद का मृत्युलेख (obituary) लिखने को बाध्य किया है। फुकुयामा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक एण्ड ऑफ हिस्ट्री में शीतयुद्ध के बाद (post-coldwar) की दुनिया में साम्यवाद के ऊपर पूँजीवाद की विजय का दावा किया है। उनके अनुसार पूँजीवाद की साम्यवाद पर विजय, इतिहास के अंत को दर्शाता है। यहाँ फुकुयामा हेगेल के अर्थ में इतिहास की बात करते हैं। पूँजीवाद के बाद आगे कोई आर्थिक और राजनीतिक विकास नहीं होगा। पूँजीवाद सबसे विवेकशील और पूर्ण प्रणाली है। यह सबसे पूर्ण विचारधारा और दर्शन है। इसलिए, वैचारिक और दार्शनिक विकास का अंत पूँजीवाद के उद्‌भव के साथ ही हो जाता है। इसका मुख्य चुनौतीकर्त्ता साम्यवाद पराजित हो गया है और यह आगे अपने दावों को साबित करता है कि यह मानवता द्वारा कभी भी विकसित प्रणालियों में से सबसे उत्तम सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली है।

फुकुयामा के द्वारा दिए गए सिद्धांत को स्वीकार करना बहुत ही कठिन है। मार्क्सवाद की प्रमुखता दो क्षेत्रों में निहित है। सर्वप्रथम, इसे सामाजिक विश्लेषण का एक जरिया बनाया गया है। द्वितीय, यह आवाज़विहीन को आवाज़ देता है। यह गरीबों, उत्पीड़ित और दमित लोगों का दर्शन हैं। यदि मार्क्सवाद की देन का विश्लेषण इन दोनों क्षेत्रों के संदर्भ में किया जाये तो, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यह अभी भी प्रासंगिक है और फिजूल नहीं है, जैसा कि उदारवादी आलोचकों द्वारा दावा किया जाता है। सामाजिक विश्लेषण के एक आयाम के रूप में मार्क्सवाद आज भी प्रासंगिक है, जैसा कि यह पहले था। सामाजिक विश्लेषण की एक विधि के रूप में इसका महत्त्व कभी भी समाप्त नहीं होगा, चाहे समाजवादी राज्य जीवित रहता है या समाप्त हो जाता है।

मार्क्सवाद एक विचारधारा के रूप में अपनी श्रेष्ठता निश्चियतया खो चुका है, लेकिन यह पूरी तरह से फालतू नहीं है। जब तक शोषण रहेगा, लोगों का दमन और उत्पीड़न होता रहेगा, मार्क्सवाद प्रासंगिक बना रहेगा। मार्क्सवाद, शोषित और उत्पीड़ित के दर्शन के रूप में उनकी मुक्ति के लिए जनता को प्रेरित करता रहेगा। इसलिए, इसकी पराजय और अप्रासंगिकता का प्रश्न नहीं है। वास्तव में, प्रणालियाँ जो बिखर चुकी हैं, वे वर्गीय मार्क्सवादी सिद्धांतों पर संगठित नहीं थी। वे मार्क्सवादी-लेनिनवाद और स्टालिनवाद से अलग थीं। इसलिए यह लेनिनवादी-स्टालिनवादी प्रणालियाँ है, जो यूरोप और जहाँ कहीं भी वे हैं, बिखर चुकी हैं और जो वर्गीय मार्क्सवाद नहीं है।

मार्क्सवाद एक आयाम के रूप में सामाजिक विश्लेषण के लिए विद्वानों के द्वारा उपयोग किया जाता रहेगा और शोषित-दमित लोग अपनी मुक्ति के लिए मार्क्सवादी दर्शन का समर्थन करते रहेंगे। यहाँ मार्क्सवाद कभी भी अप्रासंगिक नहीं बनेगा। यह सदैव उदारवाद का वैकल्पिक दर्शन बना रहेगा। मार्क्सवाद उदारवाद के अत्याचारों पर प्रभावकारी रोक के रूप में भी कार्य करेगा। यह पूँजीवादी प्रणाली की कठोरता को कम करेगा।

बोध प्रश्न 5

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) मार्क्सवादी सिद्धांत पर प्रहार के प्रमुख आधारों की विवेचना करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मार्क्सवाद की समकालीन प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 सारांश

इस इकाई में हमने विभिन्न प्रकार के समाजवाद जैसे काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, विकासवादी तथा क्रांतिकारी समाजवाद की चर्चा की है। मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों जैसे द्वन्दात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी है। ये सिद्धांत वैज्ञानिक और क्रांतिकारी समाजवाद के आधार का निर्माण करते हैं। मार्क्सवाद मात्र वर्ग विद्वेष, वर्ग संघर्ष, वर्ग विरोध और हिंसात्मक क्रांति का दर्शन नहीं है। यह बुनियादी तौर पर मानवता और स्वतन्त्रता का दर्शन है। पूँजीवादी समाज ने संबंध-विच्छेद, विलगाव और पहचान और स्वतंत्रता के विनाश को बढ़ावा दिया है। हम मार्क्स के मानवीय चेहरे को उनके प्रारम्भिक लेखों में, विशेषकर उनके इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्यूस्क्रिपट्स ऑफ *1844* में पाते हैं। विलगाव और स्वतंन्त्रता के सिद्धांत में, हम मानववादी मार्क्स को पाते हैं। साम्यवादी घोषणा पत्र और दास कैपिटल में, जो कि उनके बाद के लेखन हैं, उसमें हम एक परिपक्व और क्रांतिकारी मार्क्स को पाते हैं। इस प्रकार युवा और मानववादी मार्क्स और परिपक्व और क्रांतिकारी, दो मार्क्स हैं। फिर भी, दोनों के बीच कोई विभाजन नहीं हैं। दोनों के मध्य विचारों का प्रवाह है, और इसलिए कोई भी भिन्नता छिछोली है।

मार्क्सवाद एक जीवंत दर्शन है। मार्क्स के बाद इसे लेनिन, ट्रॉटस्की, स्टैलिन, रोजालग्जंमबर्ग, ग्राम्सी, लुकास, ऐलथूज़ैर, माओ आदि विचारकों ने समृद्ध किया है। विचारधारा और इतिहास के अंत के प्रतिपादकों ने मार्क्सवाद को दरकिनार किया है। लेकिन मार्क्सवाद सामाजिक विश्लेषण के एक आयाम और उत्पीड़ित वर्ग के दर्शन के रूप में प्रासंगिक रहेगा। यह जनमानस को उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित करेगा।

मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी दर्शन है। यह एक सामाजिक परिवर्तन का दर्शन है। मार्क्स के शब्दों में, दार्शनिकों ने विश्व की व्याख्या का प्रयास किया है, पर सवाल है इसे बदलने का इसका उद्देश्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण से मुक्त समतावादी समाज की स्थापना करना है। सिर्फ मार्क्सवाद के माध्यम से, शायद मानवता आवश्यकता के क्षेत्र से स्वतन्त्रता के क्षेत्र तक बढ़ेगी।

4.8 संदर्भ

ऐविनेरी, लोमों, *द सोशल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिजयूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

बर्लिन, इज़ाइया, *कार्ल मार्क्स : हिज़ लाईफ एण्ड ऐनवाइरमैंट,* न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

फुकुयामा, फ्रांसिस, *दी एण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन,* न्यू यार्क, फ्री प्रेस, 1992

टकर, रॉबर्ट, *फिलॉस्फी एण्ड मिथ ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1961

मैकक्लेलैंड़, जे.एस., *ए हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लंदन, राऊटलेज, 1996

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) काल्पनिक समाजवाद ने सामाजिक बुराइयों की पहचान सही की पर उनका निदान गलत किया। इसके विपरीत वैज्ञानिक समाजवाद शोषण के सच्चे कारणों की व्याख्या करता है तथा क्रांति द्धारा इनका वैज्ञानिक निदान हेतु सुझाव भी देता है।

2) विकासवादी समाजवाद क्रांतिकारी समाजवाद की तरह क्रांति में विश्वास नहीं रखता अपितु शांति से समाजवाद स्थापना करना चाहता हैं।

बोध प्रश्न 2

1) अपने उत्तर में द्वन्दात्मक का अर्थ स्पष्ट करें और यह बताएं कि कैसे विचार पर पदार्थ को ज्यादा महत्व दिया जाता है।

2) प्रारंम्भिक साम्यवाद में समुदाय उत्पादन के साधनों का स्वामी था। उत्पादन स्व-खपत के लिए भी और अतिरिक्त उत्पादन नहीं था। सामंतवाद में समाज दों वर्गों में – सामंत और किसान – में बंटा था तथा सामंत किसान का शोषण करते थे।

बोध प्रश्न 3

1) अपने उत्तर में यह दर्शाएं कि कैसे पूंजीवादी मुनाफा कमाता है। वह श्रमिक को उसके श्रम के मुकाबले कम पैसा देकर ऐसा करता है।

2) इतिहास की हर अवस्था में संपत्ति वर्ग और संपत्तिविहीन वर्ग में संघर्ष रहा है।

3) यह बताएं कि कैसे साम्यवादी समाज एक वर्ग विहीन, शोषणविहीन तथा राज्यविहीन समाज है।

बोध प्रश्न 4

1) मार्क्स द्वारा दिए गए अलगाव के चार प्रकार लिखें।

2) स्वतंत्रता, अमानवीकरण, संबंध विच्छेद और अलगाव को दूर करती है, जो पूँजीवाद की विशेषताएँ हैं।

बोध प्रश्न 5

1) निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डालें –

- मार्क्स का वर्ग सिद्धांत ज्यादा ही की सहज व साधारण है।
- कैसे समाजवाद का पतन हुआ जबकि पूंजीवाद का नहीं।
- राज्य विलुप्त नहीं हुआ है समाजवाद में ।
- आर्थिक निर्धारकवाद की आलोचना।

2) निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डालें–

- सामाजिक विश्लेषण का जरिया।
- आवाजहीन को आवाज देता है।

इकाई 5 रूढ़िवादी*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 रूढ़िवाद की अवधारणा और अर्थ

5.2 रूढ़िवाद शब्द के अनगिनत उपयोग

- 5.2.1 स्वभावगत रूढ़िवाद
- 5.2.2 परिस्थितिजन्य रूढ़िवाद
- 5.2.3 राजनीतिक रूढ़िवाद

5.3 रूढ़िवादः चारित्रिक विशेषताएं

- 5.3.1 इतिहास और परंपरा
- 5.3.2 मानव अभिरुचि, पूर्वाग्रह और तर्क
- 5.3.3 जैविक समाज, स्वतंत्रता और समानता
- 5.3.4 सत्ता और शक्ति
- 5.3.5 संपत्ति और जीवन
- 5.3.6 धर्म और नैतिकता

5.4 कुछ प्रतिनिधि परंपरावादीः एडमंड बर्क और माइकल ओकशॉट

5.5 सारांश

5.6 संदर्भ

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य रूढ़िवादी राजनीतिक सिद्धांत, इसकी विशेषताओं और राजनीतिक सोच के पहलू के कुछ महत्वपूर्ण समर्थकों की एक बुनियादी समझ प्रदान करना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न को समझने में सक्षम होंगेः

- रूढ़िवाद के अर्थ को;
- रूढ़िवाद की विशेषताओं को; और
- रूढ़िवादिता की आलोचना।

5.1 रूढ़िवादता का अर्थ और अवधारणा

रूढ़िवाद का सिद्धांत पारंपरिक संस्थानों और प्रथाओं पर आधारित है। माना जाता है कि फ्रांसीसी विचारक शातोब्रायाँद ने 1818 में इस शब्द को गढ़ा था क्योंकि उन्होंने अपनी पत्रिका का नाम *ल कंजरवेटर* रखा था। हालांकि, रूढ़िवादी विचारों और सिद्धांतों ने आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की बढ़ती गति के खिलाफ प्रतिक्रिया में 18वीं और 19वीं सदी की शुरुआत में दिखाई देना शुरू कर दिया, जो मुख्य रूप से फ्रांसीसी क्रांति द्वारा फैलाया गया था। एक अवधारणा के रूप में, रूढ़िवाद आदर्श और ऐतिहासिक के बजाय ऐतिहासिक रूप से जो विरासत में मिला है, उसे अधिक महत्व देता है। रूढ़िवादी समाज

*एन डी अरोड़ा, रीडर, राजनीति विज्ञान, डीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

के एक जैविक दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं, जिसका अर्थ है कि समाज व्यक्तियों का एक लचर संग्रह नहीं है, बल्कि एक जीवित अस्तित्व है जिसमें निकट से जुड़े, अन्योन्याश्रित सदस्य शामिल हैं। रूढ़िवादी यह भी तर्क देते हैं कि सरकार इस अर्थ में एक नौकर है कि उसे जीवन के मौजूदा तरीकों को आगे बढ़ाना चाहिए और राजनीतिक वर्ग को उन्हें बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। एक प्रतिक्रियावादी के रूप में, एक पिछले राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की बहाली का पक्षधर है, जो कि पुराने ढंग का हो गया है। रूढ़िवाद परंपरा को संरक्षित करने की कोशिश करता है और एक तरह से यह संरक्षित करना चाहता है कि किसी के पास कुछ पाने के लिए क्या है, जो किसी अन्य के पास नहीं है। एडमंड बर्क ने कहा कि, "हमें अपने आप को न केवल उन लोगों के बीच साझेदारी में देखना चाहिए, जो जीवित हैं, बल्कि, उन लोगों में भी देखना चाहिए, जो जीवित हैं, जो मृत हैं और जो पैदा होने वाले हैं"। एक अन्य प्रमुख रूढ़िवादी विचारक, माइकल ओकशॉट ने कहा कि एक रूढ़िवादी होने का मतलब है कि, "अज्ञात से जान पहचान होना, वास्तविकता से संभव तक, सीमित से असीमित तक, पास से दूर तक, सही से लेकर बहुत सही तक होना"। परंपरावादियों का मानना है कि मानव अपूर्ण और एक कार्रवाई के अप्रत्याशित परिणामों के साथ संयुक्त है, यह आकलन करना मुश्किल हो जाता है कि कोई बदलाव बेहतर होगा या अन्यथा। इसीलिए; वे मौजूदा क्रम में परिवर्तन का विरोध करने का प्रयास करते हैं। अपरिहार्य होने तक परिवर्तन का विरोध किया जाता है। बर्क का मानना था कि संरक्षण के लिए किसी को बदलना चाहिए, लेकिन इस बदलाव की गति को क्रमिक होना चाहिए, क्रांतिकारी नहीं। फ्रांस में क्रांति (1790) में परावर्तन पर अपने मौलिक काम में, बर्क ने विरोधाभासी आख्यान देते हुए कहा कि क्रांति के हिंसक, अनैतिक रूप से उखाड़ने वाले तरीकों ने इसके मुक्तिदायक आदर्शों को पछाड़ दिया। यही कारण है कि उन्होंने क्रांति के बाद अनिश्चितता के बजाय स्थिरता और समृद्धि के लिए पूर्व-क्रांति के दिनों के पारंपरिक अभिजात वर्ग का बचाव किया। उसके लिए, आधुनिक राष्ट्र राज्यों के काम करने में जटिलता है और तत्वमीमांसा सम्बन्धी सिद्धांतों के आधार पर उन्हें सुधारने के प्रयासों से निरंकुशता हो सकती है। रूढ़िवाद का विरोध उदारवाद और समाजवाद से है, क्योंकि ये विचारधाराएं किसी व्यक्ति को परंपराओं से मुक्त करने की कोशिश करती हैं, लेकिन एक रूढ़िवादी इस तरह की मुक्ति नहीं चाहता है। उदारवाद, समाजवाद और राष्ट्रवाद के उदय द्वारा निर्मित दबावों का विरोध करने के अपने प्रयासों में, रूढ़िवाद पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था की रक्षा करने के लिए खड़ा है। रूढ़िवाद के समर्थकों का भी मानना है कि धन और स्थिति की असमानताएं अपरिहार्य हैं और उनके उन्मूलन पर चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है। रूढ़िवाद के लिए जिम्मेदार कुछ विशेषताएं हैं:

- शक्ति, अधिकार और सामाजिक पदानुक्रम की आवश्यकता
- परंपरा का सम्मान
- धर्म और प्राकृतिक कानून पर ज़ोर
- समाज की जैविक प्रकृति पर ज़ोर
- मुक्त बाजार और सीमित सरकार

रसेल कर्क के अनुसार, रूढ़िवाद के छह धर्म सिद्धांत हैं –

- एक ईश्वरीय आशय समाज के साथ-साथ विवेक को भी नियंत्रित करता है– "राजनीतिक समस्याएं, सबसे नीचे, धार्मिक और नैतिक समस्याएं हैं।"
- पारंपरिक जीवन विविधता और रहस्य से भरा है, जबकि अधिकांश कट्टरपंथी प्रणालियों की विशेषता एक संकीर्ण एकरूपता है।

- सभ्य समाज को आदेशों और वर्गों की आवश्यकता होती है– "एकमात्र सच्ची समानता नैतिक समानता है।"
- संपत्ति और स्वतंत्रता अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।
- मनुष्य को उसकी इच्छा और उसकी भूख को नियंत्रित करना चाहिए, यह जानकर कि वह तर्क से अधिक शासित है।
- "परिवर्तन और सुधार समान नहीं हैं" –सुरक्षा को धीरे-धीरे बदलना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूढ़िवाद का अर्थ और विशेषताएं बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

5.2 रूढ़िवाद शब्द के अनगिनत व्यवहार

ऐतिहासिक संदर्भ का पता लगाना बहुत आसान है, यानी, 1750 और 1850 के बीच की अवधि, परिवर्तनों की तीव्र श्रृंखला की प्रतिक्रिया के रूप में, जिसमें रूढ़िवाद क्या है या रूढ़िवादी क्या मानते हैं, यह निर्दिष्ट करने के परिप्रेक्ष्य में विकसित हुआ। कभी-कभी, रूढ़िवाद का अर्थ है सभी और हर परिवर्तन का एकमुश्त विरोध; दूसरों पर, इसका मतलब है कि समाज का एक ऐसा स्वरूप फिर से संगठित करने का प्रयास जो पहले के दौर में मौजूद था। फिर भी, अन्य समय में, यह मुख्य रूप से एक राजनीतिक प्रतिक्रिया प्रतीत होता है और दूसरा, विचारों का एक निकाय। रूढ़िवाद, जैसा कि क्लिंटन रॉसिटर कहते हैं, "एक ऐसा शब्द है जिसकी उपयोगिता केवल भ्रमित करने, बिगाड़ने और चिड़चिड़ाने की क्षमता से मेल खाती है।" वह कहते हैं: "विचार और क्रिया के तरीके के बाद से यह निरूपित होता है कि यह वास्तविक और स्थायी है, और चूंकि कोई विकल्प आमतौर पर स्वीकार किए जाने की संभावना नहीं है, रूढ़िवाद निः संदेह एक लंबा जीवन होगा ....." द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, शब्द 'रूढ़िवाद' कई तरीकों से इस्तेमाल किया जा रहा है।

5.2.1 स्वभावगत रूढ़िवाद

रूढ़िवाद, एक परिभाषा के अनुसार, एक 'प्राकृतिक' और संस्कृति-निर्धारित स्वभाव को दर्शाता है, जिसमें रहने और काम करने के एक प्रथागत तरीके में अव्यवस्थित परिवर्तनों का विरोध करना है। रॉसिटर के अनुसार, "यह प्रभावी रूप से, एक स्वभाव या मनोवैज्ञानिक रुख, गुण का एक समूह है जो सभी समाजों में अधिकांश पुरुषों द्वारा दैनिक प्रदर्शन पर है; वह रूढ़िवादी स्वभाव के महत्वपूर्ण तत्वों को सूचीबद्ध करता है;

क) आदत (समाज और उसके सबसे कीमती रूढ़िवादी घातक तेज़ी से चलना)

ख) जड़ता (एक ताकत जो अक्सर सामाजिक दुनिया में भौतिक रूप में उतनी ही शक्तिशाली लगती है),

ग) भय (विशेषकर अप्रत्याशित, अनियमित और असहज होने का डर), और

घ) अनुकरण (समूह से अलगाव का भय और इसके अनुमोदन की इच्छा दोनों का निर्माण)।

5.2.2 परिस्थितिजन्य रूढ़िवाद

रूढ़िवाद, एक दूसरी परिभाषा से, पहले से संबंधित है, सामाजिक, आर्थिक, कानूनी, धार्मिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक व्यवस्था में विघटनकारी परिवर्तनों के विरोध का एक दृष्टिकोण है। "यह वर्णन करता है", रॉसिटर स्पष्ट करते हैं, "कुछ हद तक कम और कुछ हद तक प्रभावी रूप से, सामाजिक व्यवहार का एक तरीका, सिद्धांतों और पूर्वाग्रहों का एक समूह जो सभी विकसित समाजों में बहुत से लोगों द्वारा रोज़ाना प्रदर्शित होती हैं।" इस रूढ़िवाद की विशिष्ट विशेषता परिवर्तन का भय है, जो राजनीतिक क्षेत्र में रूपांतरित हो जाता है, जैसा कि रॉसिटर बताते हैं, "कट्टरपंथ के डर में ....." इस उदाहरण में, "उन पुरुषों का कट्टरवाद जो दुनिया को आदेश देने का प्रस्ताव रखते हैं ..... पुराने मूल्यों, संस्थानों और जीवन जीने के तरीके की क़ीमत पर।" परिस्थितिजन्य रूढ़िवादिता केवल भलाई तक ही सीमित नहीं है; यह उन लोगों के सभी स्तरों तक फैला हुआ है, जो यथास्थिति में परिवर्तन को विलाप करते हैं।

5.2.3 राजनीतिक रूढ़िवाद

रूढ़िवाद, एक और परिभाषा द्वारा, आकांक्षाओं और गतिविधियों को संदर्भित करता है, उनमें से ज्यादातर रचनात्मक, दलों और आंदोलनों के बजाय रक्षात्मक हैं, जो नैतिकता और परीक्षण किए गए संस्थानों के विरासत के रूप में जश्न मनाते हैं, जो उदारवादी वामपंथियों और अतिवादी योजनाओं की सुधार योजनाओं का विरोध करते हैं। राजनीतिक रूढ़िवाद एक घटना है जो संगठित समाज की सार्वभौमिकता है, और अनिवार्य रूप से, एक समाज की रक्षक है। प्रतिक्रिया रूढ़िवाद नहीं है। यह उन लोगों की स्थिति है जो अतीत का अधिक गहनता से पालन करते हैं क्योंकि वे वर्तमान का जश्न मनाते हैं और भूतकाल में जाकर उस स्थिति को महसूस करने की कोशिश करते हैं। एक रूढ़िवादी अनिवार्य रूप से बाकियों परः आम तौर पर, मनोवैज्ञानिक रूप से और साथ ही साथ "जिस दुनिया में वह बना है, उसके लिए कार्यक्रमात्मक रूप से अच्छी तरह से समायोजित होता है।" एक प्रतिक्रियावादी व्यक्ति हमेशा चलायमान होता है, "रुकता नहीं", जैसा कि रॉसिटर बताते हैं, "स्वीकृति प्रदान करते हैं कि जो कुछ भी तय किया गया है उसे अच्छा या कम से कम सहनीय माना जाना चाहिए, और वह संस्थाओं की बढ़ती शक्ति को मिटाने के लिए तैयार लगता है, कुछ संस्थाओं को मिटा भी देते हैं।" यहां तक कि अपने देश के संविधान में संशोधन करता, ताकि वह उस सामाजिक प्रक्रिया को उस समय तक वापस ला सकें, जब उनके देशवासी पहली बार मूर्खतापूर्ण तरीके से भटक गए थे"। रॉसिटर लिखते हैंः "वह (रूढ़िवादी), उदारवादी की तरह, तर्क और भेदभाव करते हैं, वह कट्टरपंथी की तरह, योजना बनाते हैं और दांव खेलते हैं। पूर्व के रूढ़िवादियों की तरह, सही-गलत राजनीतिज्ञ, जो कल्याणकारी कानून के क्षेत्र में उदारवादियों को पछाड़ने की कोशिश करता है, एक असहज व्यक्ति है। क्रांतिकारी के रूप में रूढ़िवादी, परंपरावादी जो अपने समुदाय के ढहते मूल्यों और संस्थानों को संरक्षित करने के लिए 'मौलिक रूप से' कार्य करता है, बिल्कुल भी रूढ़िवादी नहीं है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूढ़िवाद के विभिन्न उपयोगों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 रूढ़िवादः चारित्रिक विशेषताएं

जैसा कि बर्क ने घोषणा की, "संरक्षण करने की इच्छा", रूढ़िवादी विचारधारा का अंतर्निहित विषय है, हालांकि यह एकमात्र उद्देश्य नहीं है जो सभी तरह के रूढ़िवादी प्राप्त करना चाहते हैं। अधिनायकवादी रूढ़िवाद अक्सर प्रतिक्रियावादी होता है; यह या तो बदलने के लिए उपज से इनकार करता है या; समय को वापस मोड़ने का प्रयास। क्रांतिकारी रूढ़िवाद शब्द कट्टरपंथी रूढ़िवाद का उपयोग कर सकता है और क्रांतिकारी चरित्र के रूढ़िवादी रंग में रंगने के लिए पुनः प्राप्त या फिर से स्थापित करने या बहस करने के लिए जाता है। रूढ़िवाद की विशिष्ट विशेषताएं नीचे सूचीबद्ध हैं।

5.3.1 इतिहास और परंपरा

किसी भी प्रकार के रूढ़िवाद के लिए उसकी बुनियाद के लिए इतिहास और परम्परा की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इतिहास, इसकी अनिवार्यता में कमी, अनुभव के अलावा और कुछ नहीं है। यह मानवीय संबंधों के मामलों को निम्न स्तर पर ले जाने वाला विचार है; वैधता प्रदान करना इतिहास का काम है। "चीज़ों को प्रामाणिक रूप से एक रूढ़िवादी के रूप में देखने के लिए", मैनहेम लिखते हैं, "अतीत में घटनाओं का अनुभव करना है" यह सच है, इतिहास रेखीय और कालानुक्रमिक फैशन में व्यक्त नहीं किया गया हैः लेकिन संरचनाओं, समुदायों, आदतों और पीढ़ी दर पीढ़ी के दृढ़ता के बाद व्यक्त किया जा सकता है। उस मामले के लिए इतिहास या अनुभव की शुद्धता एक स्थायी रूढ़िवादी जोर है। यह बर्क, राउरके, ओकशॉट और वोगलिन द्वारा उल्लेख करते हुए दिखाया गया है। सामाजिक वास्तविकता को एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण के माध्यम से समझा जा सकता हैः "हम यह नहीं जान सकते कि हम कहाँ हैं, जहाँ हम जा रहे हैं उसके बारे में बहुत कम जानते हैं जब तक कि हम यह न जान लें कि हम कहाँ तक पहुँच चुके हैं। यह इतिहास के रूढ़िवादी दर्शन की आधारशिला है"। ('रूढ़िवादः सपना और वास्तविकता')

परंपराओं में इतिहास का प्रतिनिधित्व किया जाता है, और परंपराएं इतिहास का एक महत्वपूर्ण घटक होती हैं। जैसे, रूढ़िवाद का एक केंद्रीय विषय इतिहास के बारे में है, परंपराओं की रक्षा, स्थापित रीति-रिवाजों और संस्थानों को बनाए रखने की अपनी इच्छा। बर्क परंपरा के बारे में बात करते हैं जब वे समाज के बारे में कल्पना करते हैं और कहते हैं कि "जो लोग जीवित हैं, जो मर चुके हैं और जो पैदा होने वाले हैं" के बीच हमेशा एक साझेदारी रहती है। परंपरा के बारे में चेस्टरटन कहते हैं कि यह, ''मृतकों का लोकतंत्र है"। इस अर्थ में, परंपरा अतीत के संचित चिंतन को दर्शाती है। अतीत की संस्थाओं और प्रथाओं

का समय से परीक्षण किया गया है, और जैसा कि रूढ़िवादी मांग करते हैं, इसको संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों को इसका लाभ मिल सके व जीविकोपार्जन मिल सके।

5.3.2 मानव अभिरुचि, पूर्वाग्रह और तर्क

रूढ़िवाद मानव अपूर्णता का दर्शन है; मनुष्य के आधार की जड़ें तर्क के मुक़ाबले पूर्वाग्रह से अधिक हैं। उदारवादियों के खिलाफ, जो मनुष्य को नैतिक, तर्कसंगत और सामाजिक मानते हैं। रूढ़िवादी पुरुषों को अपूर्ण और पूर्ण दोनों मानते हैं। रूढ़िवादियों के अनुसार मानव आश्रित प्राणी है, हमेशा अलगाव और अस्थिरता से डरता है, और इसलिए, हमेशा सुरक्षा की तलाश करते हैं और जो परिचित है, हमेशा सामाजिक व्यवस्था के लिए स्वतंत्रता का त्याग करने के लिए तैयार है। रूढ़िवादियों का कहना है कि लोग अपने स्वभाव के कारण से अमूर्त विचारों पर संदेह करते हैं और अपने विचारों को अनुभव और वास्तविकता की ज़मीन पर रखना पसंद करते हैं। उनके पास आमतौर पर अतीत से विकसित एक पहले से ही तैयार किया गया दृष्य होता है। पूर्वाग्रह पर रूढ़िवादियों की तरफ से निस्बत यह तर्क देते हैं कि, ""पूर्वाग्रह" की अपनी एक आंतरिक बुद्धि है, जो कि बुद्धि का पूर्वकाल है। पूर्वाग्रह आपातकाल में तैयार एक अनुप्रयोग है; यह पहले मन को ज्ञान और सद्गुण के एक स्थिर दिशा में संलग्न करता है और निर्णय के क्षण में संकोच करने वाले, संदेहपूर्ण, हैरान और अनसुलझे व्यक्ति को नहीं छोड़ता है। तर्क उस ज्ञान से उपजा है जो प्रदान किये जाने की तुलना में सीखा जाता है। रूढ़िवादी यह राय रखते हैं कि प्रदान किया गया ज्ञान अमूर्तता, अमूर्त ज्ञान की तरफ ले जाता है, और मनुष्य के लिए, यह पूरी तरह से समझा जाना बहुत जटिल है। सीखा हुआ ज्ञान अनुभव में निहित होता है और कुछ करने के लिए यह सीमित होता है। गलितयां करके भी हम कुछ सीख जाते हैं। ऐसा ज्ञान नियमों और सामान्यताओं का ज्ञान नहीं है, बल्कि वह है जो एक व्यक्ति के अनुभव से आता है और दूसरे के खून में उतर जाता है।

5.3.3 जैविक समाज, स्वतंत्रता और समानता

समाज का रूढ़िवादी दृष्टिकोण समाज का एक जैविक दृष्टिकोण हैः व्यक्ति समाज के बाहर नहीं होते हैं और नहीं हो सकते हैं, लेकिन वे समाज में निहित हैं, और इसके लिए 'संबंधित' हैं; वे सामाजिक समूहों के हिस्से हैं और ये समूह व्यक्तियों के जीवन को सुरक्षा और अर्थ प्रदान करते हैं। स्वतंत्रता के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण 'अकेले व्यक्ति को छोड़कर' नहीं है, लेकिन वहाँ है जहां सामाजिक दायित्वों और संबंधों की स्वीकृति है। परंपरावादियों के लिए, स्वतंत्रता मुख्य रूप से "अपना कर्तव्य" करते रहना है। जब माता-पिता, उदाहरण के लिए, अपने बच्चों को एक विशेष तरीके से व्यवहार करने की सलाह देते हैं, तो वे अपनी स्वतंत्रता में बाधा नहीं डालते हैं, लेकिन जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो वे स्वतंत्रता का एक आधार प्रदान करते हैं। स्वतंत्रता के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण न तो अलग-अलग भागों में बंटा है और न ही जड़विहीनः यह कर्तव्यों के प्रदर्शन के साथ-साथ या उससे पहले या बाद में अधिकारों का आनंद है।

समाज का रूढ़िवादी दृष्टिकोण वह है जो एक जीवित चीज है, एक ऐसा जीव जिसके हिस्से न तो समरूप हैं और न ही समान हैं। एक साथ काम करते हैं और मानव शरीर को ठीक से काम करने देते हैं; जैविक समाज (यानी, परिवार, सरकार, एक कारखाने) का प्रत्येक भाग समाज के स्वास्थ्य को बनाए रखने में एक विशेष भूमिका निभाता है। हेवुड

बताते हैं, "यदि समाज जैविक है, तो इसकी संरचना और संस्थानों को प्राकृतिक बलों द्वारा आकार दिया गया है, और इसलिए इसके रूपरंग को, इसके भीतर रहने वाले व्यक्तियों द्वारा संरक्षित और सम्मानित किया जाना चाहिए।"

जैविक समाज का रूढ़िवादी दृष्टिकोण विविधता से बानी एक इकाई हैः ऐसा समाज हमेशा एक पदानुक्रमित रूप में होता है जहां स्वतंत्रता प्रभावी ढंग से और अर्थपूर्ण तरीके के साथ काम करती है। सामाजिक रूप से विभेदित समाज में, जैसा कि जैविक होता है, समानता का कोई स्थान नहीं है। "..... समानता के अधिकांश रूप ..... रूढ़िवादी लगते हैं, दोनों व्यक्तियों और समूह की स्वतंत्रता के लिए खतरा हैं। इस संदर्भ में बर्क का तानाशाही रवैया इस प्रकार है, ''जो प्रयास करते हैं वे कभी बराबरी नहीं करते।"

5.3.4 सत्ता और शक्ति

एक रूढ़िवादी के साथ सत्ता और शक्ति में बहुत समानता है। शक्ति का उपयोग एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो इसे प्रयोग करने के लिए कानूनी रूप से अधिकृत होता है, और यह एक वैध कार्य होगा जो इसे हासिल करेगा। जैविक समाज में, व्यवस्था को बनाए रखना पड़ता है, इसलिए, शक्ति जैविक समाज का एक अनिवार्य घटक है; एक पदानुक्रमित प्रणाली में, विभिन्न स्तर होते हैं; इसलिए सत्ता आवश्यक हो जाती है। रूढ़िवादी दर्शन में शक्ति और सत्ता महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। ये, बिना कुछ सोचे, रूढ़िवादी स्वतंत्रता के बारे में जो विचार रखते हैं, उसमें एक गतिरोध उत्पन्न करते हैं। "एकमात्र स्वतंत्रता" के बारे में बर्क ने कहा, "स्वतन्त्रता एक आदेश के साथ जुड़ा हुआ मामला है; जो केवल आदेश और गुण के साथ ही नहीं, बल्कि उनके बिना बिल्कुल भी अस्तित्व में नहीं आ सकता है।" रूढ़िवादी मानते हैं कि सत्ता; जिस प्रकार से समाज स्वाभाविक रूप से विकसित होता है; शक्ति प्रकार्यों से निकलती है। रूढ़िवादी ये अच्छी तरह महसूस करते हैं कि शक्ति और सत्ता प्राकृतिक समाज से विकसित होते हैं। ये स्वाभाविक हैं क्योंकि वे समाज और सभी सामाजिक संस्थाओं की प्रकृति में निहित हैं। एक स्कूल में शिक्षक द्वारा अधिकार या शक्ति का प्रयोग किया जाना चाहिए; नियोक्ता द्वारा कार्यस्थल में; और सरकार द्वारा समाज में। रूढ़िवादी कहते हैं कि अधिकार आवश्यक है क्योंकि यह फायदेमंद है, क्योंकि सभी को यह जानने के लिए मार्गदर्शन, समर्थन और सुरक्षा की आवश्यकता है कि लोग कहां खड़े हैं और उनसे क्या उम्मीद की जाती है। इसीलिए सभी रूढ़िवादी नेतृत्व और अनुशासन पर जोर देते हैं। "नेत्तृत्व" के बारे में हेवुड कहते हैं, "किसी भी समाज में नेत्तृत्व एक महत्वपूर्ण घटक होता है क्योंकि इसमें दूसरों को दिशा देने और प्रेरणा प्रदान करने की क्षमता है।

कोई भी रूढ़िवादी समानता में विश्वास नहीं करता है, सामाजिक समानता के अंतर्गत वे सोचते हैं कि लोग असमान रूप से पैदा होते हैं, इस अर्थ में कि प्रतिभा और कौशल असमान रूप से वितरित किए जाते हैं, असमान के साथ समान व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। यह सत्ता की प्रशंसा करता है, क्योंकि यह सत्ता ही है जिसके माध्यम से समाज में आदेश स्थापित किया जाता है। रूढ़िवादी एक सत्तावादी और सर्व-शक्तिशाली राज्य के पक्ष में हैं। सार्वजनिक व्यवस्था और समाज के नैतिक ताने-बाने को राज्य की शक्ति और अधिकार के माध्यम से बनाए रखा जा सकता है। हेवुड लिखते हैंः "इसके अलावा, रूढ़िवाद के भीतर, एक मजबूत पैतृक परंपरा है जो सरकार को समाज के भीतर एक पिता के रूप में चित्रित करती है।"

5.3.5 संपत्ति और जीवन

रूढ़िवादी के लिए संपत्ति एक गहरा और रहस्यमय महत्व रखता है। रूढ़िवादी मानते हैं कि संपत्ति में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक फायदे हैं: यह सुरक्षा प्रदान करती है; लोगों को विश्वास की भावना देती है और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देती है। जैसे, रूढ़िवादी चाहते हैं कि संपत्ति को अव्यवस्था और अराजकता से सुरक्षित रखा जाए। वे कहते हैं कि संपत्ति के मालिकों की समाज में प्रमुख भूमिका है। कानून और व्यवस्था बनाए रखने में उनकी रुचि है। संपत्ति का स्वामित्व कानून, सत्ता और सामाजिक व्यवस्था का सम्मान करने के रूढ़िवादी मूल्यों को बढ़ावा देता है। "एक गहरा और अधिक व्यक्तिगत कारण", हेवुड लिखते हैं, "रूढ़िवादी संपत्ति का समर्थन क्यों करते होंगे तो इसका अर्थ यह है कि, यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के लगभग विस्तार से सम्बंधित सोच हो सकती है। लोग खुद को 'महसूस' करते हैं; यहां तक कि खुद को भी देखते हैं, जो वे खुद के हैं। रूढ़िवाद संपत्ति की पवित्रता की वकालत करता है। हर सच्चे रूढ़िवादी के दिल में, जैसा कि रसेल कर्क लिखते हैं, "यह मानना कि संपत्ति और स्वतंत्रता अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं और यह कि आर्थिक स्तर आर्थिक प्रगति नहीं है। निजी संपत्ति और स्वतंत्रता से अलग संपत्ति मिट जाती है"। इरविंग बेबबिट ने कहा: "सामाजिक न्याय का हर रूप ... बड़े पैमाने पर प्रचलन, और जब्ती की ओर जाता है, जब नैतिक मानकों को कमजोर करता है, और अब तक, वास्तविक न्याय के लिए चालाक और बल के कानून का विकल्प है।" लोग खुद में महसूस कर सकते हैं कि यहाँ तक कि वे देख सकते हैं कि वे अपने आप में क्या हैं? रूढ़िवाद संपत्ति की पवित्रता की वकालत करता है। हर सच्चे रूढ़िवादी के दिल में, जैसा कि रसेल कर्क लिखते हैं, "यह मानना कि संपत्ति और स्वतंत्रता अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं और यह कि आर्थिक स्तर आर्थिक प्रगति नहीं है। निजी संपत्ति और स्वतंत्रता से अलग संपत्ति मिट जाती है।" इरविंग बेबिट ने कहा: "सामाजिक न्याय का हर रूप ..... बड़े पैमाने पर प्रचलन, और जब्ती की ओर जाता है, जब नैतिक मानकों को कमजोर करता है, और अब तक, वास्तविक न्याय के लिए चालाक और बल के कानून का विकल्प है।"

5.3.6 धर्म और नैतिकता

रूढ़िवाद, वास्तव में, धर्म और नैतिकता पर ज़ोर देने वाली प्रमुख विचारधाराओं में अद्वितीय है। संप्रदाय की परवाह किए बिना, हेगेल, हैलर और कोलरिज सहित सभी रूढ़िवादियों ने रूढ़िवाद, वास्तव में, धर्म और नैतिकता पर ज़ोर देने वाली प्रमुख विचारधाराओं में अद्वितीय है। संप्रदाय की परवाह किए बिना, हेगेल, हैलर और कोलरिज सहित सभी रूढ़िवादियों ने धर्म, और उसी तरह नैतिकता को भी, राज्य और समाज का एक प्रमुख आधार बनाया है। धर्म और नैतिकता के लिए रूढ़िवादी समर्थन अच्छी तरह से स्थापित विश्वास पर टिकी हुई है कि मानव, एक बार जब वे प्रमुख रूढ़िवादी से लाभ उठाते हैं, तो संतुलन के कुछ उपाय, संतुलन के नुकसान का शिकार होने की संभावना होती है। रूढ़िवाद, वास्तव में, धर्म और नैतिकता पर जोर देने वाली प्रमुख विचारधाराओं में अद्वितीय है। संप्रदाय की परवाह किए बिना, हेगेल, हैलर और कोलरिज सहित सभी रूढ़िवादियों ने धर्म, और उसी तरह नैतिकता को भी, राज्य और समाज का एक प्रमुख आधार बनाया है। रूढ़िवादी, नैतिकता और विश्वास पर टिके हुये अच्छी तरह से स्थापित धर्म का समर्थन करते हैं, ताकि मनुष्य, एक बार जब वे बड़ी कट्टरपंथिता से बाहर आते हैं, तो असंतुलन का सामना करते हैं, और समरूपता से होने वाली हानि का सामना करते हैं। "धर्म", बर्क ने अपने बेटे को लिखा, "धर्म व्यक्ति का एक क़िला है, एक अन्यथा असंगत है, और इस तरह से दुनिया को शत्रुतापूर्ण देखता है। टॉकवील ने अपनी मृत्युशय्या पर स्वीकारोक्ति की, उन्होंने सरकार और समाज के लिए धर्म और नैतिकता के मूल्य का वर्णन किया, और स्वतंत्रता के बारे में कहते हैं, "जब

राजनीति में धर्म के किसी भी सिद्धांत का कोई मूल्य नहीं रह गया है, तो पुरुष तेजी से निर्बाध स्वतंत्रता की संभावना से भयभीत हैं। ... मेरी तरफ से, मुझे संदेह है कि क्या एक आदमी कभी भी पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता और संपूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन कर सकता है। और, मैं यह सोचने के लिए इच्छुक हूं कि अगर उसमें आस्था है, तो उसे उसके अधीन होना चाहिए; और यदि वह स्वतंत्र है, तो उसे विश्वास करना चाहिए।" धर्म एक आध्यात्मिक घटना है। लेकिन साथ ही, यह आवश्यक जुड़ाव का साधन भी है। परंपरावादियों के लिए, धर्म और रूढ़िवाद के बीच घनिष्ठ संबंध है, धर्म समाज को नैतिक संरचना प्रदान करता है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूढ़िवाद की प्रधान विशेषताएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 कुछ प्रतिनिधि परंपरावादीः एडमंड बर्क और माइकल ओकशॉट

यह रूढ़िवाद के लिए एक तर्क को पूरा करने के माध्यम से ही है कि कुछ, और उनमें से, दो प्रमुख प्रतिनिधि परंपरावादी; एडमंड बर्क और माइकल ओकशॉट का उल्लेख करने का प्रयास किया जा रहा है। बर्क का 'फ्रांस में क्रांति पर विचार' को आधुनिक रूढ़िवाद के निश्चित और सौभाग्यशाली के रूप में लिया गया है, जिसमें अमूर्त सिद्धांतों पर आधारित कट्टरपंथी सुधार के विरोध और स्थापित और विकसित संस्थानों के गुणों के लिए अपनी दलील है। बर्क का अतीत में विश्वास, वर्तमान के बारे में उनकी प्रशंसा, नवीनीकरण के प्रति उनका विरोध, मानव प्रकृति का उनका छोटा दृष्टिकोण समाज के पारंपरिक दृष्टिकोण में विश्वास रखता है और पुरुषों की संपत्ति के साथ उनकी सहानुभूति, ये सभी उन्हें रूढ़िवादी विचारक बनाते हैं। कॉबान टिप्पणी करते हैंः "हालांकि बर्क लॉक और व्हिग राजनेताओं का शिष्य था, लेकिन वास्तविक व्यक्ति और दार्शनिक के तौर पर अठारहवीं शताब्दी के समय से काफी अलग है, वह एक युग में उसकी पुरातनता में विश्वास करने वाला, जब आधुनिकता ने प्राचीनता के साथ संघर्ष करके उसके ऊपर विजय प्राप्त कर ली थी, जिस उम्र में वो भविष्य की ओर देख रहा था उस युग में अतीत से जुड़े रहने वाला, वह तर्क के महान युग में विद्रोह के दार्शनिक भी थे। बर्क की रुढ़िवादिता उनके सभी लेखन का आधार है।

रूढ़िवाद, एक सिद्धांत के रूप में इसमें, आमतौर पर तीन किस्में होती हैंः

अ) **यथास्थितिः** यह वह है जिसमें चीज़ें वैसी की वैसे ही उस स्थिति में रखी जाती हैं, जैसे वे हर समाज में होती हैं। व्यक्ति ऐसे लोगों को ढूंढते हैं, जो, चीज़ें जैसी होती हैं उसे

वैसे ही स्थिति में रखने में रुचि रखते हैं और जो लोग यथास्थिति में बदलाव लाना नहीं चाहेंगे, उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं रहेगा।

ब) **संगठनात्मक रूढ़िवादः** यह पुरुषों के ऐसे हितों को, जो यथास्थिति के समर्थन में हैं, उन्हें बचाने, उनके प्रचार के लिए तरीके और उपायों को तलाशेंगे। इस प्रकार, संगठन उन लोगों की सेवा करता है जो यथास्थिति बनाए रखना चाहते हैं। जो संगठनात्मक है वो रूढ़िवादी हैं। कल का विचार आज का आंदोलन बन जाता है और आज का आंदोलन कल का संगठन बन जाता है।

स) **दार्शनिक रूढ़िवादः** एक बार जब यथास्थिति में रुचि होती है और इसे बचाने के लिए एक संगठन होता है, तो एक विचारधारा का निर्माण किया जाता है, और हितों के चारों ओर के उस दर्शन को संरक्षित करना होता है। रूढ़िवाद, एक दर्शन के रूप में, हितों का संरक्षण और संवर्धन करने के लिए एक व्यवस्था को बढ़ावा देता है। अपने लेखन में बर्क रूढ़िवाद की उपरोक्त विविधताओं से गुजरे हैं। यथास्थिति की प्रशंसा करने के साथ साथ यथास्थिति का समर्थन करने के लिए उन्होंने संगठन का भी निर्माण किया (संसदीय प्रणाली, राष्ट्रीय हितों के साथ राजनीतिक दल आदि)। लेकिन रूढ़िवाद के ढांचे के भीतर, बर्क सुधारवाद को प्रदर्शित करते हैं। पारंपरिक रूप से ओकशॉट की दलील, राजनीति, नैतिकता और जीवन में उनके रूढ़िवाद के एक पहलू के रूप में, सामान्य रूप से तर्कवाद के अपने आलोचनात्मक रूप से आगे बढ़ती है। ओकशॉट के अनुसार, राजनीति की वैचारिक शैली (यानी, बुद्धिवादी शैली) एक भ्रमित शैली है, क्योंकि विचारधारा के लिए तर्कवादी योजना में, जैसा कि वह सोचता है, केवल एक संक्षेपण है, एक क्रम है। इसलिए, ओकशॉट का जवाब है कि एकमात्र शैली, जिसे अपनाना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए, वह पारंपरिक है। ओकशॉट पुष्टि करते हैं कि राजनीतिक गतिविधि एकाएक नहीं हो सकती है, लेकिन प्रचलित परंपराओं के व्यवहार से, और यह जो रूप लेता है, मौजूदा व्यवस्थाओं का संशोधन करता है, जो कि उनके द्वारा खोजा और आगे बढ़ाया जाता है। इसलिए, उसके लिए, सभी गतिविधि प्रकृति में पारंपरिक हैं। ओकशॉट द्वारा वर्णित प्रत्येक विचार, प्रत्येक आदर्श, प्रत्येक विचारधारा, यहां तक कि सबसे बड़ा क्रांतिकारी, पारंपरिक होता है, हमेशा एक क्रम होता है, समाज की व्यवस्थाओं में भाग लेने के पारंपरिक तरीके का संक्षेपण है।

ओकशॉट राजनीति की पारंपरिक शैली को एकमात्र वैध शैली मानते हैं। "एक रूढ़िवादी होना" नाम के निबंध में, वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि एक रूढ़िवादी होना एक अज्ञात से भी परिचित होना है, अविश्वसनीय से विश्वसनीय होना, रहस्य से वास्तविकता, यथार्थ से संभव तक, सुदूर के पास, पूर्ण रूप से सुविधाजनक, काल्पनिक आनंद के लिए हंसी प्रदान करना है। रूढ़िवादी होना किसी के अपने भाग्य के बराबर होना है, किसी के अपने साधनों के स्तर पर रहना है। ओकशॉट कहते हैं, स्थिरता कभी भी सुधार से अधिक लाभदायक है।

ओकशॉट को परिवर्तन और नवीनीकरण दोनों पर संदेह है और इसलिए, चाहेंगे कि लोग बदलाव द्वारा किये गए दावों पर दो बार सोचें। यदि परिवर्तन अपरिहार्य है, तो ओकशॉट केवल छोटे और धीमे परिवर्तनों का पक्ष लेगा। केवल सुधार के लिए, वह ज़ोर देकर कहते हैं कि उस दोष को दूर किया जाए या जो असमानता है उसको दूर करने में मदद करे।

ओकशॉट के अनुसार, परंपरा को कहीं भी किसी भी तरह से परिभाषित किया गया है। वह कहते हैं, यह निरंतरता है, यह स्थिर है, हालांकि यह गतिमान है, यह पूरी तरह से धीमी नहीं हुयी है, जबकि यह पूरी तरह से कभी थमा नहीं है। इसे जानने के लिए, ओकशॉट

कहते हैं, परंपरावाद का सार केवल कुछ भी नहीं जानना है; इसका ज्ञान, इसके विस्तार से अपरिचित रूप से ज्ञान है। किसी भी चीज़ के अर्थ को समझने या न समझने की ओकशॉट की परिभाषा बहुत व्यापक है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रुढ़िवाद पर बर्क और ओकशॉट के विचारों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 सारांश

रूढ़िवाद संरक्षण की एक विचारधारा है। यह अनिवार्य रूप से राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों की बढ़ती गति के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ, खासकर पश्चिम में। यही एक कारण है कि 'रूढ़िवाद' शब्द का कोई भी उपयोग परिवर्तन का विरोध करता है। एक दर्शन के रूप में, यह औद्योगिकीकरण द्वारा उत्पन्न दबावों के खिलाफ पदानुक्रम, परंपरा और आदेश के मूल्यों का बचाव करता है और उदारवाद और सामाजिकता की राजनीतिक चुनौतियों का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए; वामपंथियों और समाजवादियों, उदारवादियों और रूढ़िवादियों के बीच एक बुनियादी अंतर है। वामपंथी और समाजवादी नौकरशाही (यानी कट्टर कम्युनिस्ट) के पक्षकार हैं; उदारवादी बाजार के; और रूढ़िवादी परंपरा के पक्षकार हैं। रूढ़िवादी विचारधारा की अपनी अजीब विशेषताएं हैंः परंपरा और इतिहास, पूर्वाग्रह के लिए एक आसक्ति और तर्क के खिलाफ मानव ख़ामियां, स्वतंत्रता और असमानता के साथ जैविक समाज, सत्ता और शक्ति की प्रशंसा, संपत्ति और जीवन के अधिकारों के लिए एक मज़बूत दलील, और नीति विषयक, नैतिक और धार्मिक मूल्यों में विश्वास। रूढ़िवादिता का भविष्य अपनी सीमाओं से ही जुड़ा है। समानता का विरोध और इससे अधिक, इसकी असमानता का बचाव इसे समाजों में अलोकप्रिय बना देता है, जिनकी एक मजबूत लोकतांत्रिक प्रवृत्ति है। परिवर्तन का विरोध करने की दलील देने में, रूढ़िवाद को अक्सर यथास्थिति को वैध बनाने और कुलीन वर्ग के हितों की रक्षा के रूप में देखा जाता है। लैंगिक न्याय जैसी अवधारणाएं कभी भी रूढ़िवादियों के साथ पक्षपात नहीं करेंगी। रूढ़िवाद विश्वव्यापी महत्व की विचारधारा के रूप में विकसित होने में सफल नहीं हुआ है। अपने आप में, रूढ़िवाद बहुत व्यापक है और इस हद तक, एक विचारधारा भी अस्पष्ट हैः जो आज कट्टरपंथी है, हो सकता है वो कल वैसा न रहे।

5.6 संदर्भ

अलेक्जेंडर, जेम्स, (2014), द मेजर आइडियोलोजीस ऑफ लिवरिज्म, सोशियलिज्म एंड कंजरवेटिज्म पाल्टिकल स्टडिज, खंड 63, अंक 5, पृ. 980 - 994

बर्क, एडमंड, (1993), रिफ्लेक्शन आन द रेवलुशन इन फ्रांस, ऑक्सफोर्डः ओयूपी.

हेवुड, एंड्रयू (2007) पाल्टिकस, हैम्पशायरः पालग्रेव मैकमिलन

ओकशॉट, माइकल, (1962), रेशनलिज्म इन पाल्टिकस ऐंड अदर एसेस लंदनः मेथुएन।

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में यह बताया जाना चाहिए कि फ्रांसीसी क्रांति द्वारा शुरू किए गए परिवर्तनों के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में रूढ़िवाद कैसे पैदा हुआ?

   विशेषताओं के बारे में, उल्लेख करें:

   - शक्ति, अधिकार और सामाजिक पदानुक्रम की आवश्यकता
   - परंपरा का सम्मान
   - धर्म और प्राकृतिक कानून पर ज़ोर
   - समाज का जैविक स्वरूप
   - मुक्त बाज़ार और सीमित सरकार

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में स्वभावगत, स्थितिजन्य, राजनीतिक रूढ़िवाद को उजागर करना चाहिए

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में निम्न उजागर होना चाहिए:

   - इतिहास और परंपरा
   - मानव अपूर्णता, पूर्वाग्रह और तर्क
   - जैविक समाज, स्वतंत्रता और समानता
   - सत्ता और शक्ति
   - संपत्ति और जीवन
   - धर्म और नैतिकता

बोध प्रश्न 4

1) बर्क के सन्दर्भ में, आपके जवाब को उसके काम, "फ्रांस में क्रांति पर विचार", में अपने विचारों को उजागर करना चाहिए। ओकशॉट के सन्दर्भ में, उनके निबंध 'एक रूढ़िवादी होना' से उनके विचारों को उजागर करें।

इकाई 6 नारीवादी*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय : नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ

6.2 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर

6.3 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की द्वितीय लहर

- 6.3.1 उदारवादी नारीवाद
- 6.3.2 मार्क्सवादी नारीवाद
- 6.3.3 समाजवादी नारीवाद
- 6.3.4 रैडिकल नारीवाद
- 6.3.5 इकोलाजिकल नारीवाद

6.4 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की तृतीय लहर

- 6.4.1 सांस्कृतिक नारीवाद
- 6.4.2 अश्वेत नारीवाद
- 6.4.3 उत्तर आधुनिक नारीवाद

6.5 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अर्थ और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के विकास के महत्त्वपूर्ण घटनाक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, जैसे नारीवाद और राजनीतिक चिन्तन की प्रथम, द्वितीय और तृतीय लहरें। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपको निम्नलिखित बातों में सक्षम होना चाहिए:

- उस मुख्य विचार को समझना जिसके कारण नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का विकास हुआ;
- नारीवाद की तीन अलग लहरों के राजनीतिक विचारों के बीच अन्तर का विवेचन;
- नारीवादी चिन्तन के अन्तर्गत उन वैचारिक दृष्टिकोणों की समालोचना करना जो नारीवादी राजनीतिक चिन्तन में नवाचाराएं; और
- नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अन्तर्गत विभिन्न वाद-विवादों की व्याख्या करना।

6.1 परिचय : नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ

इस इकाई का उद्देश्य नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अर्थ, उद्‌भव और उसके विकास के प्रक्षेपपथ का पता लगाना है। नारीवाद की प्रथम लहर ने पितृसत्ता की गिरफ्त से महिलाओं की मुक्ति के लिए, एक उपकरण के रूप में, राजनीतिक और कानूनी अधिकारों की

*सुश्री गीतांजली अत्री, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

उपलब्ध पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। नारीवादी की द्वितीय लहर ने पुरुषों के लैंगिक तरीकों के विरुद्ध नारीत्व की राजनीति के क्षेत्र का विस्तार महिलाओं के निजी जीवन तक किया और इस प्रकार उदारवादी नारीवाद मार्क्सवादी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, रैडिकल नारीवाद, और ईकोलॉजिकल नारीवाद (पारिस्थितिक या पर्यावरणीय नारीवाद) जैसी विचारधाराओं के उदय को प्रोत्साहित किया। नारीवाद की तृतीय लहर ने पूर्ववर्ती नारीवादी राजनीतिक रूक्षनों की गतिशील समालोचना प्रस्तुत की जिसे सांस्कृतिक नारीवाद, अश्वेत नारीवाद, और उत्तर आधुनिक नारीवाद, जैसी समावेशी विचारधाराओं के साथ वैश्विक मान्यता मिली। नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत, राजनीतिक सिद्धांत के व्यापक संभाशण का एक उपवर्ग है। यह राजनीतिक सिद्धांत में नारीवादी पहलू को जोडता है जिसे अक्सर उसके उपेक्षित हिस्से के रूप में देखा जाता है। महिलाओं की चिन्ताओं को सम्मिलित करने के द्वारा, यह 'राजनीतिक क्या है' की सामाओं के विस्तार का प्रयास करना है। 'नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत' शब्द की उत्पत्ति बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पश्चिम के (मुख्यरूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम) महिला मुक्ति आन्दोलन के दौरान हुई। ये परिकल्पना की गई कि पश्चिमी। पाश्चान्य राजनीतिक सिद्धांत ने अपने अधिकांश इतिहास के दौरान महिलाओं की अवहेलना की। इसके विपरीत, नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत ने महिलाओं और उनके अनुभवों को एक निश्चित समय और समाज के राजनीतिक विश्लेषण के लिए आधारभूत माना। इसने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया - किसी भी एक निश्चित समाज में महिलाओं की तुलना में केवल पुरुष ही क्यों ताकतवर और विशेष अधिकरों से युक्त है?

यह नारीवादी राजनीतिक चिन्तन के साथ महिलाओं के लिए समान दर्जा कैसे प्राप्त किया जाए इसके लिए निरंतर प्रयास है। एक राजनीतिक आन्दोलन के रूप में, नारीवाद महिलाओं के राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक अधीनता के विरुद्ध है। नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत, उन सिद्धांतों और संस्थाओं की आलोचना और परिर्वतन द्वारा महिलाओं पर प्रभुत्व को समाप्त करने का प्रयास करना है, जो महिलाओं के निम्न दर्जे का समर्थन करते है। परन्तु नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का विकास एक असमान अभ्यास रहा है जिसमें नारीवादी विचारधारा की विविध लहरों के रूप में परिवर्धन और मतभेद उभरकर आए हैं।

6.2 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर

नारीवाद की प्रथम लहर का संबंध नारीवादी गतिविधियों से है जो मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड़ किंगडम में सन् 1820 से लेकर 1840 तक हुई। इस लहर की औपचारिक पहल का श्रेय एलिज़बेथ केडी स्टेंटन द्वारा 1848 में न्यूयॉर्क में रचित "सेनेका फॉल्स डेक्लरेशन", को दिया जाता है। इस उद्घोषणा ने नारीवादी आन्दोलन के लिए नई राजनीतिक रणनीतियों और विचारधाराओं को विशेष रूप से दर्शाया। इसका प्रारंभ महिलाओं के लिए सम्पति के समान अधिकारों और घर – गृहस्थी में एक गरिमामय स्थान के विचार के साथ हुआ। इस प्रकार, इसने महिलाओं के आर्थिक, यौन और प्रजनन के अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित किया। परन्तु, बीसवीं सदी के प्रारंभ होने पर, नारीवादी सक्रियतावादियों ने अपना ध्यान महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की ओर मोड़ लिया, विशेष रूप से महिलाओं का मतदान का अधिकार या महिला निर्वाचनाधिकार।

आंदोलन के भीतर कुछ सक्रियतावादियों का विश्वास था कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ नैतिक रूप से श्रेष्ठतर है ''अतः राजनीतिक क्षेत्र में उनकी उपस्थिति राजनीतिक प्रक्रिया के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। परिणामस्वरूप, ब्रिटेन में सन् 1918 में जन प्रतिनिधित्व

अधिनियम पारित किया गया। इसने महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान किया। परन्तु इसका क्षेत्र सीमित था। क्योंकि ये अधिकार केवल उन महिलाओं को उपलब्ध था, जिनकी आयु 30 वर्ष से ऊपर थी और जिनके पास अपने निजी स्वामित्व वाले घर थे। इस प्रकार नारीवादियों के प्रयास जारी रहे और सम्पति के स्वामित्व की शर्त के बिना, महिलाओं के लिए मतदान के लिए योग्य आयु को घटाकर 21 वर्ष कर दिया गया। परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका में इस लहर का एक अलग राजनीतिक प्रक्षेयपथ रहा यहाँ एलिज़ेबेथ कैडी स्टेंटन, सूजन बी. ऐंटनी, लूसी स्टोन, और लुकीशिया मोट, जैसी नारीवादी नेताओं का मानना था कि महिलाओं के लिए मतदान का अधिकार प्राप्त करने से पहले, दासता या दास प्रथा के उन्मूलन का समर्थन करना अधिक महत्वपूर्ण था। ऐसा माना जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी राज्यों में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान करने वाले संविधान के 19वें संशोधन के पारित होने के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम लहर धीरे-धीरे समाप्त हो गई। गैर-पाश्चात्य संदर्भ में, महिलाओं के आन्दोलन की पहली अवस्था को उसकी पाश्चात्य समय-सीमा के लगभग समरूप समझा जाता है। फिर भी यहाँ इसकी व्याख्या 19वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर बीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक के उपनिवेशवाद – विरोधी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता और योगदान के रूप में की जाती है। इन देशों की महिलाओं ने अपने पश्चिमी समकक्षों को एक आदर्श माना और उनके द्वारा की गई आर्थिक, शैक्षणिक और चुनावी अधिकारों की माँगों पर अपनी माँगों को संरचित किया। उदाहरण के लिए भारत में महिलाओं के आन्दोलन की उत्पति को मद्रास में सन् 1917 में इण्डियन विमेन्स एसोसिएशन की स्थापना से जोड़ा जाता है। धनवंथी रामा राव के अनुसार इस संस्था द्वारा नारी मुक्ति के लिए चुने गए कार्यक्षेत्र ठीक वही थे, जिनका तादात्म्य या संबंध पाश्चात्य विश्व में नारीवाद की प्रथम लहर से था जैसे न्यायसंगत उत्तराधिकार कानून, तलाक देने का अधिकार, तथा महिला मताधिकार का विस्तार आदि।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर की व्याख्या करें?

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की द्वितीय लहर

नारीवाद की प्रथम लहर महिलाओं के आन्दोलन के लिए वरदान और अभिशाप दोनों साबित हुई। अपने सकारात्मक पक्ष में इसने सक्रियतावादियों को एक सामान्य उद्देश्य के लिए एकजुट किया और आन्दोलन को उसकी सुव्यवस्थित संरचना प्रदान की। परन्तु मलिाओं के लिए मताधिकार की प्राप्ति के बाद इसे महिलाओं की संपूर्ण मुक्ति के रूप में देखते हुए, कुछ सक्रियतावादी आत्मसंतुष्ट हो गए। सन् 1960 के दशक में नारीवाद की द्वितीय लहर के उदय के बाद जाकर आन्दोलन पुनर्जीवित हुआ विशेष रूप से वर्ष 1963 में बेट्टी फ्रीडन की पुस्तक 'द फेमिनिस्ट मिस्टीक', के प्रकाशन के साथ। इस पुस्तक में फ्रीडन यह ध्यान दिलाती है कि एक माँ और गृहणी की भूमिकाओं में घरेलू कामकाज तक परिसीमित रहने

के कारण महिलाएँ कुष्ठाग्रस्त रही। परिणामस्वरूप, नारीवाद की द्वितीय लहर ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि कानूनी और राजनीतिक अधिकारों की उपलब्धि के बावजूद महिलाओं का प्रश्न अनसुलझा रहा। जरमेन ग्रीयर और केट मिल्लेट की कृतियों के प्रकाशन के साथ जो चिन्ता महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों से इससे पहले जुडी थी उसका आमूल परिवर्तन करते हुए, उसमें महिलाओं के उत्पीडन के यौन, मनोवैज्ञानिक और निजी पहलुओं को शामिल किया गया। द्वितीय लहर के दौरान ही कैरल हानिष ने "दी परसनल इज पोलिटिकल" अर्थात "निजी ही राजनीतिक है" का नारा गढ़ा। इसके आधार पर नारीवादी संक्रियतावादियों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक असमानताओं के बीच निकट का अन्त संबंध देखा। यह वो समय था जब महिलाओं के निजी जीवन को पितृसत्तात्मक समाज के गहन राजनीतिक सत्ता के ढ़ाँचों के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा जाता था। इस प्रकार, पारंपरिक नारीवादियों से भिन्न, इस काल के रैडिकल या उग्र-सुधारवादी) नारीवादियों ने निजी की राजनीति को अपने आन्दोलन के केन्द्र में रखा। परिणामस्वरूप, इस लहर ने 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, न्यू जर्सी संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राज्य में मिस अमेरिका सौंदर्य प्रतियोगिता, के विरुद्ध प्रदर्शन देखे क्योंकि नारीवादियों द्वारा इसे एक "मवैशी परेड़" या "पशु प्रदर्शन" के सहश देखा गया। उन्होंने ऐसी घटनाओं को महिलाओं के सौंदर्य के विषयीकरण या वस्तुकरण के रूप में देखा।

जहाँ नारीवाद की प्रथम लहर की पहचान विषमलिंगकामी श्वेत महिलाओं के साथ की गई, जिनमें अधिकांश पाश्चात्य मध्यवर्ग से थीं, वहीं द्वितीय लहर ने विकासशील देशों की महिलाओं और अश्वेत महिलाओं को साथ लाने के लिए कठिन परिश्रम किया, जो एकजुटता तथा भगिनीत्व बहनसंघ की विचारधारा पर आधारित था। सिमोन द बोउवार ने 1949 में अपनी कृति 'दी सेकेंड सेक्स' में यह तर्क दिया कि नारीवादी राजनीति की समस्या यह थी कि मज़दूरों और अश्वेतों की तरह न होकर, महिलाएँ "हम" नहीं कहती हैं। महिलाओं के आन्दोलन में एकजुटता के अभाव का पर्यवेक्षण करते हुए, इस तर्क को उन्होंने केन्द्रीय स्थान दिया। इस समस्या से जूझने के लिए यह भविष्यवाणी की गई कि महिलाओं का संघर्ष है, जिसमें महिलाएँ एक सामाजिक वर्ग हैं जिसके मामले में जाति, लिंग और वर्ग, एक साथ मिलकर, पितृसत्तात्मक वर्ग के हाथों उनके उत्पीडन का कारण बनते हैं। उभरता हुआ नारीवादी सिद्धांत, विचार-धाराओं के तीन समूहों के प्रतिच्छेदन की अभिव्यक्ति थी – उदारवादी नारीवाद, मार्क्सवादी नारीवाद और उसका विस्तार जो समाजवादी नारीवाद, के नाम से जाना जाता है, और रैडिकल नारीवाद या उग्र नारीवाद या उग्र-सुधारवादी नारीवाद)। इसके अतिरिक्त, इस लहर के दौरान, नारीवादियों ने महिलाओं को अपने उत्पीडन के लम्बे इतिहास अथवा अपनी जैविक बनावट के कारण पुरुषों की तुलना में अधिक संवेदनशील होने के नाते, सामाजिक समस्याओं के समाधान की दिशा में बेहतर उपागम अपनाते हुए देखा। इस संदर्भ में, परिस्थितिक नारीवाद शब्द को गढ़ा गया यह सूचित करने के लिए कि महिलाओं के रूप में जन्म लेने के नाते महिलाएँ स्वाभाविक पर्यावरणविद् हैं।

6.3.1 उदारवादी नारीवाद

नारीवादी विद्वतत्ता ने अपने राजनीतिक सिद्धांत का विकास सन् 1792 में पहली बार प्रकाशित मैरी वोल्स्टोनक्राफ्ट पथ प्रवर्तक कृति "ए विंडिकेशन आफॅ द राइट्स आफॅ वीमेन" से प्रारंभ की सूचना दी। वोलस्टोनक्राफ्ट, महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए शिक्षा तक समान पहुँच की माँग करती हैं ताकि उत्पीड़क पितृसत्तात्मक परम्पराओं और संस्थाओं का सामना करने में महिलाएँ पुरुषों के समान स्वतंत्र और नैतिक रूप से बलशाली बन सकती हैं। इस प्रकार यह सार्वजनिक क्षेत्र में लैंगिक समानता को सुनिश्चित कर पाएंगी। 19वीं

सदी के आते, उदारवादी नारीवाद का संभाषण, जॉन स्टूअर्ट मिल की कृतियों के माध्यम से स्थानाथरित (बदल दिया) कर दिया गया। मिल ने पुरुषों और महिलाओं के लिए समान आर्थिक अवसरों, राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्र के पक्ष में तर्क दिया। इस बात पर बल देते हुए कि महिलाओं के मुक्ति आन्दोलन में राज्य को एक मित्र की भूमिका निभानी चाहिए, उदारवादी नारीवादियों ने सन् 1920 में, संयुक्त राज्य अमेरिका में 19वें संवैधानिक संशोधन द्वारा महिलाओं के लिए मताधिकार सुनिश्चित या उपलब्ध कराया। परन्तु, महिलाओं को पुरुषों के समान बनने की आवश्यकता पर अत्यधिक बल देते हुए उनकी पारम्परिक भूमिकाओं की अवहेलना करने के कारण ड्रसिल्ला कोरनेल, ऐलिजवेथ फॉक्स –जेनोवीस, कैट्रियोता मेकेंजी जेन मैन्सब्रिज, मार्था-सी. नैसबॉम, सूज़न ओकिन और ग्रेगोरी बैशम आदि जैसे उदारवादी नारीवादियों की अक्सर समालोचना होती है।

6.3.2 मार्क्सवादी नारीवाद

मार्क्सवादी नारीवादी अपने उदारवादी प्रतिपक्षों या समकक्षों के सुधारवादी झुकाव या रूझानों का पालन नहीं करते, बल्कि वे महिलाओं के उत्पीडन को पूँजीवाद से संबंधित आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढ़ाँचों से जोडते हैं। मार्क्स के लिए, पूँजीवाद पश्चिम का निर्धारक लक्षण है या विशेषता है। मार्क्सवादी नारीवादियों ने अपने आप को 1960 के दशक के उतरार्ध में प्रक्षेपित किया तथा मार्क्स तथा ऐंगिल्स के दर्शनों से प्रधान रूप से अपनी प्रेरणा ली। यद्यपि इन दार्शनिकों ने विशेष रूप से महिलाओं के उत्पीडन का संकेत देने वाली और गहरी संरचनाओं या ढाँचों का गूढ़वाचन (व्याख्या) करने के लिए सशक्त अन्तर्दृष्टि प्रदान की। इस प्रकार, आइरिस मैरियन यंग और ऐलिसन जैगर जैसे मार्क्सवादी नारीवादियों के लिए लैंगिक उत्पीडन वर्ग शोषण पर आधारित है और इसपर भी कि किस प्रकार घरेलू और कार्य स्थलों पर श्रम सामाजिक रूप से पुनरूत्पन्न किया जाता है। उदाहरण के लिए, फ्रेडरिक ऐंगिल्स ने अपनी कृति "दी ऑरिजिन ऑफ फैमिली, प्रॉपर्टी एण्ड द स्टेट" 1884 में यह विस्तारपूर्वक बताया है कि किस प्रकार महिलाओं के यौन और शारीरिक श्रम को शिशु प्रजनन तथा पारिवारिक संस्था के अन्दर उनके पालन पोषण के लिए स्वीकृत माना जाता है। इस सिद्धांत के आधार पर मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार, पितृसतात्मक बलों के आदेश से महिलाओं के उत्पीडन को स्वाभाविक जताने का प्रयास किया जाता है। ऐंगिल्स इसे "नारी लिंग की अन्तिम पराजय" के रूप में संदर्भित करते हैं और महिलाओं को मुक्त करने के लिए वे समाज की पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति की माँग करते हैं। परन्तु, नारीवाद के अन्तर्गत इस दृष्टिकोण की दो आधारों पर समालोचना की जा सकती है। प्रथम, महिलाओं के विरुद्ध काम करने वाले उत्पीडन के अन्य कारकों जैसे सजातीयता, जाति आदि को मान्यता न देने के कारण। द्वितीय, यह महिलाओं के उस वर्ग को अहश्य बना देता है जो वेतन भोगी मज़दूर के रूप में कार्य करती हैं और उन्हें 'वेतन श्रम या मज़दूर' के अधिक व्यापक वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित कर देता है जिसमें संभवत़ पुरुष और महिलाएँ, दोनों शामिल हैं। इस प्रकार इसी वर्ग द्वारा उत्पीडन के तरीकों का जो सामना किया जाता है, उसकी चर्चा नहीं करता।

6.3.3 समाजवादी नारीवाद

मार्क्सवादी नारीवादियों के इस तर्क से जुडते हुए कि पूंजीवाद महिलाओं के विरुद्ध उत्पीडन का मूल कारण है, समाजवादी नारीवादी सता वितरण के पितृसतात्मक प्रबन्ध को इसी स्थिति के सहायक कारण के रूप में स्वीकार करते हैं। समाजवादी नारीवादी आन्दोलन के केन्द्र में यह समझ निहित है कि महिलाओं का उत्पीडन दमन की किसी एक प्रणाली की उपज नहीं है, बल्कि वह लैंगिकता, वर्ग, जाति, सजानीयता और बेशक या बिना संदेह के

लिंग या जैंडर जैसे विविध शक्तियों का सामान्य परिणाम है। इस प्रकार, महिलाओं की मुक्ति को प्राप्त करने के लिए इस आन्दोलन ने इन सभी मुद्दों से सामूहिक रूप से निपटने को अपना लक्ष्य बनाया। फिर भी चुंकि समाजवादी नारीवादियों के लिए आर्थिक उत्पीडन और पितृसता अन्य सभी प्रकार के दमन के आधार हैं, वे यह तर्क देते हैं कि यद्यपि लगभग सभी समाजों में महिलाओं का उत्पीडन होता है, उस उत्पीडन की मात्रा और प्रकृति एक निश्चित समाज की आर्थिक वास्तविकताओं पर निर्भर करती है। बार्बरा एहरेनशइश, सिल्विया वॉलबी शार्लट परकिन्स गिलमेन, डोना हेरवे, एम्मा गोल्डमेन तथा सेल्मा जेम्स आदि जैसे समाजवादी नारीवादी, महिलाओं की इस भूमिका के महत्व पर बल देते हैं जो एक जन्मदाता, शिशु-पालक तथा संसर्गकर्ता, रोगी की देखभाल करने वाले के रूप में अभीक्षक है तथा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में, जो घर से बाहर जाकर अपने श्रम का निवेश करने वाले पुरुषों के लिए घर – गृहस्थी को एक जीने लायक स्थान के रूप में परिणत कर देता है। इनका कहना है कि समाज की पितृसतात्मक प्रकृति के कारण महिलाओं के इस भावपूर्ण श्रम को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। और यहाँ तक जब महिलाएँ नोकरी बाजार में कार्यरत होती हैं जिसे मार्क्सवादी उत्पादक श्रम कहते हैं, तब भी उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में निम्नतर मज़दूरी (या वेतन) तथा यौन उत्पीडन जैसे पक्षपातों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, समाजवादी नारीवादियों ने एक गरिमापूर्ण जीवन-निर्वाह के लिए न्यायोचित अधिकारों की माँग करने के लिए अपने आपको शिकागो वीमेन्स लिबरेशन यूनियन जैसे महिला संघों ने संगठित किया।

6.3.4 रैडिकल नारीवाद

बेट्टी फ्रीडन जैसे प्रारंभिक रैडिकल नारीवादियों का उद्देश्य अपनी अप्रतिष्ठिता पहचान को पुनः प्राप्त करना था जिसका समाज की सांस्कृतिक बनावट द्वारा क्रमबद्ध तरीके से दमन किया गया था। सन् 60 के दशक के उत्तरार्ध और 70 के दशक के पूर्वार्ध में रैडिकल्स को प्रचंड भौतिकवादियों के रूप में देखा जाता था, जिन्होंने पितृसत्ता के भौतिक आधार पर बल दिया। उदाहरण के लिए; न्यूयॉर्क शहर में स्थित रैडिकल नारीवादी समूह 'द रेडस्टॉकिंग्स' ने यह उपदेश दिया कि एक महिला द्वारा विवाह करने का निर्णय एक भ्रामक मनोभाव के प्रति समर्पण न होकर एक तर्कसंगत रणनीति होनी चाहिए। इसे उपार्जित (प्राप्त) करने के बाद, एक अर्थपूर्ण सामाजिक वर्ग के रूप में, वे "लिंग" या जेंडर का ही उन्मूलन करना चाहते थे। उन्होंने जेंडर को सामाजिक रूप से आविष्कार की गई एक पूर्ण श्रेणी के रूप में देखा जहाँ पुरुषत्व का अर्थ उस 'अन्य" से पूर्णतया प्रतिकूल था – अर्थात नारीत्व परन्तु आधुनिक रैडिकल नारीवादियों ने स्वीकार किया कि लैंगिक अन्तर इन दोनों परिवर्ती कारकों के बीच पारस्परिक क्रियाओं या अन्योन्यक्रियाओं के प्रतिबिम्ब है। उदाहरण के लिए मेरी डेली सूज़न ग्रिफिन जूलिया पेनेलोपी और एड्रिएन रिच जैसे अनेकों ने यह तर्क दिया है कि महिलाएँ पर्यावरण के अधिक निकट होती हैं जबकि पुरुष अपनी लैंगिकता के। यद्यपि अपनी टिप्पणियों में गलती से सामान्य होने के लिए और इस प्रकार के अन्तर (चाहे जैविक हो या सांस्कृतिक) के मूल को पता लगाने में इनके द्वारा प्रयास के अभाव के लिए इनकी समलोचना की जाती है, फिर भी ये नारीवादी इस नैतिक गुण या सद्‌गुण को उत्पीडन के प्रतिनिधित्व के रूप में न देखकर अपने पुरुष समकक्षों से लाभ-प्राप्ति के रूप में देखते हैं। रैडिकल नारीवादियों ने पहले के समाजवादी नारीवाद से हटते हुए अपनी यह राय दी कि उत्पीडन निजी या व्यक्तिगत स्तर पर नही होता और यह आवश्यक नही कि वह हमेशा एक संस्थात्मक परिणाम हो। परन्तु उनका विश्वास था कि इस निजी स्तर पर एक नर होने के नाते मात्र से एक पुरुष को उत्पीड़क या दमनकर्ता नहीं कहा जा सकता है। बल्कि एक नर के रूप में जन्म लेने के नाते वह महिलाओं पर अपने वर्चस्व को जब तर्कसंगत ठहराता है, केवल तब रैडिकल नारीवादियों द्वारा उसके एक उत्पीडक के रूप में देखा जाता है। इस

प्रकार, अन्य उद्देश्यों के साथ जैसे लैंगिक राजनीति का सार्वजनिक संभाषण में शामिल किया जाना, गर्भपात को वैध बनाना, शिशु पालन-पोषण और घरेलू कामकाज के बराबर बंटवारे की माँग करना आदि, के साथ, वे महिलाओं की मुक्ति को अपनी प्राथमिक राजनीतिक कार्यसूची में केन्द्रीय स्थान देते हैं।

6.3.5 इकोलॉजिकल नारीवाद

महिलाओं के उत्पीडन और प्रकृति पर प्रभुत्व का एक दूसरे से संबंध है और दोनों एक दूसरे को परस्पर शुद्ध करते हैं अतः उन्हें सामूहिक रूप से संबोधित किया जाना चाहिए – यह दार्शनिक दृष्टिकोण वर्णक्रम के आर पार ईकोफेमिनिस्टों को एकजुट करता है। अधिकांश ईकोफेमिनिस्टों विद्वता जैसे ऐलिस वॉकर वंदना शिवा इवोन गेबारा, रोज़मेरी रूथर सैली मैकफेग, पौला गन ऐलन, ऐंडी स्मिथ और कैरन वॉरन अन्य, प्रकृति के साथ मानव संबंध के नैतिक आधार पर विचार करती हैं। बीसवीं सदी के उतरार्ध में ईकोलॉजिकल नारीवाद या पारिस्थितिक नारीवाद का उदय पर्यावरण संबंधी और नारीवादी सिद्धांतों के प्रतिच्छेन के साथ हुआ। इस शब्द को सर्वप्रथम 1974 में फ्राँस्वा ओबन द्वारा लिखित पुस्तक "ल फेमिनिज़्म ऊ ला मोर्त" अर्थात नारीवाद या मृत्यु में प्रस्तावित किया गया। ईकोफेमिनिस्ट यह तर्क देते है कि पितृसता पदानुक्रम के द्वैतवादी ढ़ाँचों के माध्यम से समाज में अपने आपको अभिव्यक्त करती हैः संस्कृति बनाम प्रकृति, नर बनाम नारी, भौतिक बनाम भाव, श्वेत बनाम अश्वेत इत्यादि। पितृसत्तात्मक उत्पीडन की व्यवस्थित प्रणाली इन विचरों बाईनरी को आरोपित करते हुए न केवल अपने आपको सुदढ़ बनाती है बल्कि ईकोफेमिनिस्टों के अनुसार, वह विज्ञान और धर्म, दोनों का प्रयोग उपकरणों के रूप में करते हुए, इन्हें पवित्र भी बना देती है। इस प्रकार जब तक किसी भी सामाजिक संरचना के परम आवश्यक या अनिवार्य घटक के रूप में ये द्वैध अवस्थाएँ बनी रहेगी, ये पितृसता को पनपने में मदद करेंगी। इन आधारों पर ईकोफेमिनिस्ट बाईनेरी पदानुक्रमों में संस्कृति के विभाजन की अवज्ञा करते है। उनकी ऐतिहासिक पद्वति पदानुक्रमित द्विविधनाओं के स्थान पर विविधा के अन्तर्गत एक संबंध के अनुपालन का सुझाव देती हैं। यह पद्धति, ऐसी विविधताओं की शक्ति पर बल देने के कारण, एक नारीवादी उपागम है जो पर्यावरण के विचारों को नारीवाद के विचारों से जोडती है। रूथर अपनी 1975 की कृति 'न्यू वुमन न्यू अर्थ' और मेरी डेली 1978 में अपनी कृति 'गाइनइकोलजी' के माध्यम से इस विचारधारा के पथप्रदर्शक बने।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवाद की द्वितीय लहर की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की तृतीय लहर

नेन्सी फ्रेज़र की पुस्तक 'जस्टिस इंटरप्टस' (1997) के अनुसार सन् 1980 के दशक में पहचान की राजनीति में जेंडर (लैंगिक) के अन्तर पर अधिक बल दिए जाने के कारण भेदभाव के अन्य सीमांतों (सीमाओं) जैसे वर्ग लैंगिकता या सेक्सुएलिटी, सजातीयता और जाति की ओर नारीवादी सक्रियतावादियों का ध्यान अधिक आकर्शित नही हुआ। यह नारीवादियों को आत्म-निरीक्षण की ओर ले गया जिसने उनकी स्थिति या दिशा के पुनर्निधारण का रास्ता तैयार किया। इसके कारण वे नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत को अन्य राजनीतिक संघर्षों के समरूप उच्चरित (करने की दिशा में बढ़े। नारीवादी बुद्धिजीवी वर्ग के बीच इस प्रकार की चेतना की उत्पति के कारण सन् 90 के दशक के मध्य में नारीवाद की तृतीय लहर का उदय हुआ, जो उत्तर आधुनिकवाद और उत्तर औपनिवेशिकवाद की परिस्थितियों द्वारा प्रभावित था। इस लहर में, नारीवाद की दो पूर्व अवस्थाओं में सक्रियतावादियों द्वारा व्यवहार में लाए गए जेंडर, लैंगिकता या सेक्सुएलिटी और हेटेरोनॉर्मेटिविटी के अनेक विचारों को पलट दिया गया। उदाहरण के लिए समकालीन सक्रियतावादियों ने लिपस्टिक, गहरे वक्ष विपाटन वाले वस्त्रों तथा ऊँची एडी के जूतों के फैशनेबल प्रदर्शन को फिर शुरू किया, जिन्हें इससे पहले पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के चिन्ह के रूप में किनारे कर दिया जाता था। ऐसा इसलिए था क्योकि युवा सक्रियतावादियों का मानना था कि महिलाओं के पास एक ही समय में पुश-अप ब्रा और बुद्धि दोनों का होना संभव था। उन्होंने अपनी चुनी हुई आत्मपरकताओं के साथ नारीजातीय सौंदर्य के आदर्शों को लिंग-भेद का मानने वाले सेक्सिस्ट पुरुषों के द्वारा दमनपूर्ण विषयीकरण के रूप में न देखा, उन्हें सशक्तीकरण प्रदान करने वाला माना। इसे द्वितीय लहर के नारीवादियों के संभव प्रयासों के द्वारा महिलाओं का व्यवसायिक ओहदा या दर्जा तथा उनकी सफलताओं के फलस्वरूप देखा गया। तीसरी अवस्था ने नारीत्व को नए सिरे से परिभाषित किया जो सशक्त था, उनकी (महिलाओं की) लैंगिकता उनके नियंत्रण में थी और स्वत्वसूचक थी। इसके अतिरिक्त, तृतीय लहर की सूक्ष्म राजनीति की स्पष्ट अभिव्यक्ति में जिसने योगदान दिया, यह बीसवीं सदी के उतरार्ध की इंटरनेट क्राँति थी। इंटरनेट ई-मेगेज़ीन (पत्रिकाओं) के रूप में केवल-महिलाएँ स्थल उपलब्ध कराया जो नारीवादी विचारों के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण मंच बने। इंटरनेट ने महिलाओं को विकासशील विश्व की महिलाओं और अश्वेतज महिलाओं के साथ एकजुटता को अभिव्यक्त करने में भौगोलिक सीमाओं पर काबू पाने में सहायता की। इस प्रकार, तृतीय लहर का राजनीतिक उपागम अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक समावेशी बहुसांस्कृतिक और वैश्विक था। इसका अनुप्रस्थ राजनीतिक नारीवादी सिद्धांत इस तर्क पर आधारित था कि जाति सजातीयता लैंगिक अभिविन्यास वर्ग इत्यादि का अपनी व्यक्तिपरक स्थिति की गतिशीलता के रूप में अनुष्ठान किया जाना चाहिए। यह इस अवस्था के दौरान विकसित बहुल राजनीतिक विचारधाराओं के रूप में अनुगूंजित हुई – सांस्कृतिक नारीवाद ब्लेक या अश्वेत नारीवाद और उत्तर आधुनिक नारीवाद।

6.4.1 सांस्कृतिक नारीवाद

सन् 1975 तक रैडिकल नारीवाद के स्थान पर सांस्कृतिक नारीवाद आ गया। सांस्कृतिक नारीवादी अपने रैडिकल समकक्षों के विचारों से ग्रहण भी करते हैं और उनसे हट (अलग) भी जाते है। वे रैडिकल नारीवादियों से सहमत हैं कि महिलाओं की स्वतंत्रता का प्रारंभ परपीड़ित कामुकता के अरचीकरण से होता हैं परन्तु वे भौतिक यथार्थ या वास्तविकता को अपने अनुभव की परिधि में ढ़केल देते है। जबकि रैडिकल नारीवादियों ने नारी शरीर को एक बाधा के रूप में देखा, जेन एलपर्ट एड्रियन रिच आदि जैसे सांस्कृतिक नारीवादियों ने महिलाओं के उद्भिज शरीर को एक प्रबल संसाधन के रूप में देखा। पितृसतात्मक व्यवस्था

द्वारा अभिज्ञान किया गया नारीवाद जिसमें आज्ञाकारित। दब्बूपन और वश्यता के आदर्श हैं और नारीप्रकृति के स्वाभाविक लक्षण जिन्हें वे स्नेहमय अनुरक्षक और समतावादी के रूप में देखते हैं, इन दोनों के बीच रॉबिन मोर्गन ऐंड्रिया द्वोरकिन तथा फ्लोरेन्स रश जैसे सांस्कृतिक नारीवादी अन्तर स्थापित करते हैं। दूसरी ओर, पुरुषत्व को अमिट के अर्थ में लेने के साथ सांस्कृतिक नारीवादी, महिलाओं के उत्पीडन का संपूर्णदोश पुरुषों की कल्पित मर्दानगी या नरजातीयता पर मढ़ देते हैं और पितृसतात्मक प्रणाली के भीतर (अन्दर) की शक्ति गतिकी पर इतना नहीं। इस प्रकार, सूजन ब्राउन मिल्लर के लिए बलात्कार पुरुष जीव विज्ञान का कृत्य या कार्य है। अन्त में, सांस्कृतिक नारीवादी लैंगिक अन्तर या जेंडर के अन्तर के बचाव की माँग करते हैं, चूकि, उनके अनुसार स्नेह, पोषण और समानता के स्त्रीजातीय मूल्यों में संस्कृति की पुनर्स्थापना होने पर ही समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सकता है। स्त्रीजातीय मूल्यों के ताल के माध्यम से नारीवाद की व्याख्या करते हुए सांस्कृतिक नारीवादियों ने राजनीतिक सिद्धांत के स्थान पर एकजुट या संयुक्त भगिनीत्व के अपने दर्शन को स्थापित किया।

6.4.2 अश्वेत नारीवाद

संयुक्त राज्य अमेरिका में जहाँ एक ओर महिला मुक्ति और अश्वेत मुक्ति आन्दोलन तीव्र गति से बढ़ रहे थे, वहीं ब्लैक महिलाओं को नहीं लगा कि इन दोनों में से किसी ने भी उनका राजनीतिक प्रतिनिधित्व किया हो। महिला मुक्ति आन्दोलन ने मूल रूप से मध्यवर्गीय श्वेत महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जबकि दूसरे आन्दोलन में अश्वेत या ब्लैक का अर्थ केवल ब्लैक या अश्वेत पुरुष रहा। इस प्रकार अश्वेत या ब्लैक महिलाएँ एक अदृष्य वर्ग बनी रही थीं और अश्वेत मुक्ति आन्दोलनों के भीतर भी व निरंतर सेक्सिज़्मया लिंगभेद की अधीनता का शिकार बनी रहीं। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में अश्वेत या ब्लैक नारीवादी आन्दोलन का, एक पृथक आन्दोलन के रूप में, विकास हुआ। इस आन्दोलन का उद्देश्य इस विषय को संबोधित करना था कि किस प्रकार वर्ग, जाति और जेंडर प्रतिच्छेदन द्वारा इन महिलाओं को अपने उत्पीडन का अनुभव कराते हैं और साथ ही, इसके विरूद्व एक कार्ययोजना का सुझाव देना भी था। ऐलिस वॉकर ने ब्लैक या अश्वेत नारीवादी आन्दोलन का वर्णन करने के लिए "वुमनिस्ट" शब्द का नामकरण किया। उनका तर्क है कि एक नारीवादी के लिए वुमनिस्ट वैसे ही है जैसे लैंवेंडर (हल्का जामुनी रंग) पर्पल (जामुनी) के लिए है। इस आन्दोलन के माध्यम से जिन सिद्धांतों को प्रवर्तित किया गया, उनमें नारीत्व के सभी पहलुओं की अभिस्वीकृति और प्रशंसा, आत्मनिर्णय पर बल और महिलाओं व पुरुष, दोनों की समृद्वि के प्रति प्रतिबद्वता की स्थापना शामिल थी। इस प्रकार इस आन्दोलन ने महिलाओं की व्यक्तिगत क्षमता के विस्तार की माँग की और साथ ही मानवता की समृद्वि की भी परवाह की। इस आन्दोलन ने अपनी महिला सहभागियों को बड़े पैमाने पर समुदाय से जुडे रहने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इस प्रकार अश्वेत या ब्लैक नारीवाद एक राजनीतिक संघर्ष था जिसका उद्देश्य किन्ही भी ब्लैक या अश्वेत महिलाओं द्वारा सामना किए जा रहे उत्पीडन का प्रतिरोध या विरोध करना था।

6.4.3 उत्तर आधुनिक नारीवाद

उत्तर आधुनिक नारीवाद अपने इस तर्क के साथ कि भाषा ही है जो जेंडर का निर्माण करती है, नारीवाद के अन्तर्गत या भीतर के पूर्व बहसों की तुलना में सबसे बृहद आकार का विचलन करते हैं। व जुडिथ बटलर की 1990 की कृति "जेंडर ट्रबिल" के तर्कों से प्रभावित हुए जिसमें वह जीव वैज्ञानिक लिंग और जेंडर के बीच वर्तमान में कायम अन्तर की समालोचना करती हैं, जिसे इससे पूर्व के नारीवादियों ने सामाजिक रूप से निर्मित माना

था। वे तर्क देती हैं कि "महिला" एक "अकेली खडी" श्रेणी नहीं है, उसकी उत्पति अनेक कारकों द्वारा वहन से होती है, जैसे वर्ग, जाति, सजातीयता और सेक्शुएलिटी। ऐसे कारक साथ मिलकर उस पहचान की व्याख्या करते हैं जिसे हम एक "महिला" कहते हैं। इस तर्क के आधार पर वे मानती हैं कि इनमें से कोई भी कारक महिलाओं के उत्पीडन के लिए अकेला जिम्मेदार नहीं है और न ही इनमें से किसी एक से निपटने से महिलाओं की अधीनता की समस्या का हल हो पाएगा। उनके लिए, जेंडर क्रियाशील है और उसे किसी द्विचर या बाइनरी के रूप में नही समझा जा सकता अर्थात वे शरीर की सामाजिक मानदंडों और भाषा से अविभाज्यता की ओर इशारा करती हैं। उदाहरण के लिए चिकित्सा पेशेवरों के पास अस्पष्ट जननांग वाले एक शिशु को शल्यक्रिया द्वारा एक ऐसी लडकी में परिवर्तित करने की क्षमता है जिसे एक "शुद्व" लडकी के रूप में सांस्कृतिक स्वीकृति दी जाती है। चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपें ने यौन पुनर्निर्माण सर्जरी को भी एक वास्तविकता बना दिया है, जिसने पुरुष और स्त्री के बीच की सीमाओं को धुंधला करते हुए जेंडर की पूरी श्रेणी को लचीला बना दिया है। डोन्ना हेरअवे, मेरी जो फ्रुग आदि जैसे उत्तर आधुनिक नारीवादी यह तर्क देते हैं कि सभी महिलाएँ उत्पीडन के सामान्य अनुभवों में सहभागी नहीं होती। इस प्रकार, आजकल की महिलाओं के विषय में पहचान की राजनीति को समझने के लिए वे क्वीयर समलैगिक और ट्रॉंसजेंडर आदि श्रेणियों को चरम महत्व देते हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवाद की तृतीय लहर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

6.5 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति "जेंडर अंधी" रही है और नारीवादी लेखन में सन् 1980 के दशक में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में असर दिखाना प्रारंभ किया। कुछ श्रेण्यग्रंथो या क्लासिक कृतियों में शामिल हैः जीन बेथके एल्शटेन की "वीमेन एण्ड वॉर" (1987), सिंथिया एन्लो का बनानास, बीचेस एण्ड बेसस', (1989) और जे.ऐन टिक्नर का 'जेन्डर इन इन्टरनेशनल रिलेशन्सः फेमिनिस्ट पर्सपेक्टिव्ज़ ऑन अचीविंग ग्लोबल सेक्यूरिटी'' (1992). नारीवादी विद्वानों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति केवल सुरक्षा, सतायुद्व और राज्यों के बारे में नही है, और ऐसा एक तरीका है जिसके द्वारा जेंडर वैश्विक राजनीति को आकार देता है। बार्बरा एहरेनराईश ने ध्यान दिलाया है "पुरुष युद्व करते हैं.... क्योंकि युद्व उन्हें मर्द बनाता है''। राज्य पर केन्द्रित सुरक्षा की यथार्थवादी अवधारणा से भिन्न, नारीवादी, अभाव और भय से मुक्ति पर केन्द्रि मानव सुरक्षा को महत्व देते हैं। युद्व को अपने आप में एक जेंडर्ड घटना या लैंगिक घटना के रूप में देखा जाता है, क्योंकि अधिकांश उच्च सैन्य पदों और राजनीतिक पदों पर पुरुषों का प्रभुत्व होता है। यह कुछ मिथकों का भी प्रभाव है कि असहाय महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए मर्दाना पुरुष योद्धाओं की आवश्यकता होती है।" जीन एल्शटेन ने पुरुष को एक "सुन्दर आत्मा" के रूप में प्रस्तुत करने वाले मिथकों को विस्तार से संबोधित किया है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि यह

विभाजन अयोधियों के रूप में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और योद्वाओं के रूप में पुरुषों की पहचान को पुनर्निर्मित और सुनिश्चित करने में सहायता करती है। सिंथिया एन्लो ने तर्क दिया है कि बागानों में श्रमिकों के रूप में, राजनयिकों की पत्नियों के और सैनिक अड्डों में यौन कर्मियों या सेक्स वर्कर्स के रूप में महिलाओं के कार्य को वैश्विक राजनीति का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। जे.एन टिक्नर ने हेन्स मॉर्गेन्थो के यथार्थवाद के छः सिद्धांतों की आलोचना की और यह तर्क दिया कि राष्ट्रीय हित एक व्यापक विषय है जिसे केवल सता के संदर्भ में परिभाषित नहीं किया जा सकता। परमाणु युद्व और पर्यावरण पतन जैसे मुद्दों से निपटने के लिए प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) जे.ऐन. टिक्नर द्वारा यथार्थवाद की आलोचना का विवेचन करें

.....

.....

.....

.....

6.6 सारांश

इस इकाई में हमने मूलरूप से तीन महत्वपूर्ण बातों की चर्चा की है–

नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की उत्पति, इसके विकास की प्रधान लहरें या अवस्थाएँ/चरण और इन अवस्थाओं के अन्तर्गत जो महत्वपूर्ण वैचारिक धाराएँ विकसित हुई और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के समेकन के प्रक्षेपपथ को प्रभावित किया। नारीवादी चिन्तन की प्रथम लहर का उदय सन् 1948 में न्यूयार्क में इस प्रमुख प्रेरणा के साथ हुआ कि महिलाओं को पितृसतात्मक समाज के दमनकारी तरीकों से मुक्त करने के लिए, महिलाओं को मताधिकार का हक प्राप्त होना चाहिए। परन्तु, द्वितीय लहर के समर्थकों ने प्रचलित या मौजूदा राजनीतिक विचारों को सिमित मानते हुए उनकी समालोचना की और महिलाओं के अधिकारों की राजनीति का विस्तार उनके घरेलू जीवन के निजी क्षेत्र तक किया। ये तर्क दिया गया कि महिलाओं को शिशु वाहक, शिशु पालक और गृहिणी की नियंत्रित भूमिकाओं से मुक्ति की आवश्यकता है। इसका समाधान रोजगार बाजार में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों की उपलब्धि में देखा गया। यद्यपि प्रथम लहर के नारीवादी सक्रियतावादी अपनी माँगों में इतने गतिशील नहीं थे, द्वितीय लहर वालों ने नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के मोर्चे को रैडिकलाइज़ किया। उन्होंने एक ओर महिलाओं का दबंग के रूप में प्रक्षेपण या प्रस्तुत किया और दूसरी ओर इन्होने नारी शरीर को लैंगिक पितृसतात्मक ताकतों के हाथों उत्पीडन के एक प्रधान उपकरण के रूप में देखा। इसने समर्थकों को उलझा दिया। इन समर्थकों ने नारीवाद की तृतीय लहर को उत्पन्न किया। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं के पास दोनों का होना संभव था – बुद्धि या मस्तिष्क और पुशअप ब्रा। इसके साथ रैडिकल नारीवाद ने सांस्कृतिक नारीवाद के लिए मार्ग प्रशस्त किया जिसने अश्वेत महिलाओं और विकासशील विश्व की महिलाओं को अपने आन्दोलनों में निमग्न (घेर) किया। इस प्रकार उस समय के विभिन्न आन्दोलनों के बीच राजनीतिक संलाप या वार्तालाप का उन्होंने विस्तार किया। जबकि, नारीवाद की द्वितीय लहर को उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी,

रैडिकल और पारिस्थितिक नारीवाद के राजनीतिक विचारों द्वारा प्रस्ताविक किया गया तृतीय लहर, सांस्कृतिक, ब्लैक या अश्वेत और उत्तर आधुनिक नारीवाद द्वारा अंक्ति की गई। उदारवादी नारीवादी जेंडर समानता (लैंगिक समानता) के विचार को सार्वजनिक क्षेत्र में पहली बार उन्नीसवीं सदी में लेकर आया। इन्होंने महिलाओं की मुक्ति को प्राप्त करने के लिए राज्य की भूमिका को, महिला आन्दोलन के एक मित्र के रूप में देखने की माँग की। रैडिकल नारीवादियों ने महिलाओं की मुक्ति की राजनीति को वैयक्तिक स्तर पर पहुँचाया और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की गति को स्थूल से सूक्ष्म संभाषण में परिमित किया। सांस्कृतिक नारीवादियों ने सार्वभौमिक भगिनीत्व की माँग की और भिन्न रंग, सजातीयता, लैंगिक अभिविन्यास और वर्गों की महिलाओं को मुक्ति के सामान्य लक्ष्य के लिए एकजुट करने को प्रयास किया। इसमें, किसी भी अश्वेतज महिला द्वारा सामना किए जाने वाले उत्पीडन से जूझने के लिए अश्वेत नारीवाद एक राजनीतिक संघर्ष था। उत्तर आधुनिक नारीवादी क्वीयर समलैंगिक और ट्रॉसजेंडर आदि श्रेणियों को आजकल की महिलाओं से संबंधित पहचान की राजनीति को समझने के लिए अत्यन्न महत्वपूर्ण मानते हैं।

6.7 संदर्भ

फ्रीडन, बेदशी, *द फेमिनिन मिस्टीक,* न्यू यॉर्क, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एण्ड को., 1963

द बोउवार, सिमोन, *द सेंकड सेक्स,* लंदन, विंटेज हाऊस, 1949

मिल्लेद, केट, *सेक्शुअल पॉलिटिक्स,* न्यू यॉर्क, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969

डेली, मेरी, *गाइन/इकॉलजी,* बॉस्टन, बीकन प्रेस, (1978 (1990))

बैरी, कैथलिन, *फीमेल सेक्शुअल स्लेवरी,* एंगलवुड क्लिफ्स, प्रेंटिस हॉल, 1979

हेवुड, ऐंड्रू, *ग्लाबल पॉलिटिक्स,* हैंपशायर, पॉलग्रेव मेक्मिल्लन, 2011

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उतर में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया जाना चाहिए

- सेनेका फॉल्स उद्घोषणा (1848)
- महिला मताधिकार पर कल (उसके लिए किए गए संघर्ष समेत)
- गैर-पाश्चात्य विश्व में स्थिति

बोध प्रश्न 2

1) आपके उतर में उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी, रैडिकल और ईकोलॉजिकल या पारिस्थितिक नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख होना चाहिए।

2) आपके उतर में सास्कृतिक, ब्लैक (अश्वेत) और उत्तर आधुनिक नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) सांस्कृतिक नारीवाद, अश्वेत तथा उत्तर–आधुनिक नारीवाद पर प्रकाश डालें।

बोध प्रश्न 4

1) टीक्नर द्वारा मोगेन्याऊ के सिद्धांतों की आलोचना का ज़िक्र करें।

इकाई 7 उत्तर-आधुनिकवाद*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 प्रमुख उत्तर आधुनिक विचारक

- 7.2.1 जाँ फ्राँस्वा लियोतार्ड
- 7.2.2 जाक देरीदा
- 7.2.3 मिशेल फूको
- 7.2.4 एरनेस्टो लाकलू और शांताल मूफ

7.3 उत्तर-आधुनिकवाद और उत्तर-संरचनावाद

7.4 उत्तर-आधुनिकवाद और वैश्वीकरण

7.5 समालोचना

7.6 सारांश

7.7 संदर्भ

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप उत्तर-आधुनिकवाद के अर्थ और उससे संबंधित प्रमुख चिंतकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बातों में सक्षम होंगेः

- उत्तर-आधुनिकवाद के अर्थ की व्याख्या करना;
- इस पर विभिन्न मतों की चर्चा करना;
- उत्तर-आधुनिकवाद और उत्तर संरचनावाद के बीच संबंध को समझना;
- उत्तर-आधुनिकतावाद और वैश्वीकरण के बीच कड़ी की विवेचना।

7.1 प्रस्तावना

उत्तर-आधुनिकवाद को आधुनिकतावाद को प्रभुत्व के विरुद्ध एक तीव्र प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। आधुनिकतावाद औद्योगिक युग का उत्पाद था जब व्याख्या और अभिव्यक्ति की पारम्परिक पद्धति का स्थान 'तर्क' और 'विज्ञान' ने ले लिया। तर्क और विज्ञान के मौलिक गुण हैं महाआख्यानों (grand narratives) और सिद्धांतों को सूत्रबद्ध करना। उत्तर-आधुनिकवाद आधुनिकता के एक परिवर्तनकारी विकल्प के रूप में उत्पन्न हुआ। इसका तर्क है कि आधुनिकवाद की प्रकृति अत्यधिक केन्द्रीकृत और एकारम (monolithic) है, अतः यह गौण पहचानों और स्वरों का दमन करता है। यह सत्य के एकमात्र अर्थ की धारणा को अस्वीकार करता है। समाज, संस्कृति और ज्ञान की प्रकृति से संबंधित विभिन्न प्रभावित और व्यवस्थित मान्यताओं को यह चुनौती देता है। इसने ज्ञान-मीमांसा के मूलभूत आधारों को सामान्य रूप से और समाज शास्त्रों के व्यवहारों को विशेष रूप से क्षति पहुँचाई। यह

*श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान संकाय, इग्नू

आख्यानों की बहुलता का समर्थन करता है और अधि-आख्यानों या मेटा-आख्यानों (meta-narratives) की संभावना का खंडन करता है। यद्यपि उत्तर आधुनिकवाद ज्ञान के सिद्धांत में एक मुख्य प्रवृति है, इसकी उत्पत्ति के संबंध में आम सहमति कम है। इस शब्द का पहली बार प्रयोग सन् 1914 में "द हिब्बर्ट जर्नल" में प्रकाशित जे.एम. थॉम्पसन के एक लेख में किया गया था। इस लेख ने तत्कालीन ईसाई समाज के भीतर दृष्टिकोणों और आस्थाओं में रूपांतरण का वर्णन किया। इसके पश्चात् उत्तर-आधुनिकवाद की अवधारणा वास्तुकला और साहित्यक समालोचना में एक ऐसे उपकरण के रूप में प्रचलित हुई जिसका प्रयोग आधुनिक वास्तुकला के प्रति असंतोष का वर्णन और व्याख्या करने तथा सता-ज्ञान के छिपे हुए संबंध के रहस्य का उद्घाटन करने के लिए साहित्यिक ग्रंथों के विखंडन में किया गया। उन्नीसवीं सदी के समय से सभी शास्त्रों ने इसे अपना लिया है, जैसे वास्तुकला, साहित्य, कला, दर्शन, नीतिशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, (नृविज्ञान या anthropology), अर्थशास्त्र, बंदीग्रहों के प्रबंध संबंधी विद्या या दंडशास्त्र (Penology) आदि, इनमें से प्रत्येक शास्त्र के अन्तर्गत भिन्न बलाघान या प्रभाव के साथ। उत्तर-आधुनिकवाद को यकीनन बडे पैमाने पर अस्पष्ट माना जाता है, चूंकि उसका हर चीज़ के प्रति अविश्वास है और उसमें सुस्पष्ट दिशा निर्देश का अभाव है। उत्तर-आधुनिकवाद की यह मूलभूत प्रकृति उसके संबंध में एक सर्वसम्मिलित परिभाषा प्रस्तुत करने में कठिनाई उत्पन्न करती है क्योंकि यह उसे कसकर पकडने का प्रयास करता है जो सरल परिभाषाओं की प्रक्रियाओं से बच निकलता है और उसका गुणगान करता है जो इनका विरांध और विच्छेद करता है। उत्तर-आधुनिकवादियों के बीच भी इस बात को लेकर मतभेद है कि क्या उत्तर- आधुनिकता आधुनिकता के साथ निरन्तर है अथवा उससे परिवर्तनकारी संबंध-विच्छेद का प्रतिनिधित्व करती है; या क्या वे एक दूसरे के साथ एक लंबी अवधि के संबंध ा में जुडे हुए हैं जिसमें उत्तर-आधुनिकवाद निरंतर आधुनिकता की सीमा की ओर संकेत करती है। यद्यपि लियोतार्ड, देरीदा, और फूको, जैसे उत्तर-आधुनिकवादी विचारकों की प्रतिक्रियाएँ ज्ञानोदय की परियोजना के विरुद्ध हैं, जिसके अन्तर्गत इन्होंने अपने सिद्धांतों का निर्माण किया था, फिर भी कुछ हद तक इनकी कृत्तियों में एकरूपता लाई हैं। इस प्रकार की एकरूपताओं की झलक के फलस्वरूप टेरी ईगलटन जैसे समालोचनात्मक विचारकों द्वारा इस अवधारणा का वर्गीकरण और निरूपण हुआ है।

उत्तर-आधुनिकवाद चिन्तन की एक शैली है जो सत्य, तर्क, पहचान और वस्तुनिष्ठता के संबंध में शास्त्रीय विचारों, सार्वभौमिक प्रगति या उद्धार के विचार, एकल ठाँचों, भव्य आख्यानों अथवा व्याख्या के परम आधार के विचारों को संदेह की दृष्टि से देखती है। इन ज्ञानोदय मानदंडों के विरुद्ध, यह विश्व को आकस्मिक (contingent), निराधार, विविध, अस्थिर, अनिर्धारित, विभाजित संस्कृतियों या व्याख्याओं का एक समूह मानता है जो सत्य, इतिहास और मानदंडों की वस्तुनिष्ठता, प्रकृतियों की "प्रदत्तता" (givenness) और पहचानों की सुसंगति के संबंध में एक उच्च-स्तरीय संदेह को उत्पन्न करते है। उत्तर आधुनिकवाद के सार को समझने के लिए लियोतार्ड, देरीदा और फूको, लाक्लू (l और मूफ जैसे कुछ प्रमुख उत्तर-आधुनिक विचारकों की मौलिक रचनाओं को एक नज़र देखने की आवश्यकता हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) उत्तर-आधुनिकतावाद से आप क्या समझतें हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

7.2 प्रमुख उत्तर-आधुनिक विचारक

7.2.1 ज़ाँ फ्राँस्वा लियोतार्ड

ज़ाँ फ्राँस्वा लियोतार्ड, फ्राँसिसी राजनीतिक दार्शनिक और सांस्कृतिक समालोचक, ज़ाँ फ्राँस्वा लियोतार्ड, उत्तर आधुनिक दर्शन के सर्वाधिक प्रभावशाली हस्तियों में से एक हैं। इनकी पुस्तक "द पोस्टमॉडर्न कंडिशनः ए रिपोर्ट ऑन नॉलेज" को उत्तर-आधुनिकवाद का बाईबल (Bible) अर्थात आधिकारिक पुस्तक माना जाता है। और यह इसकी एक सुसंगत संकल्पना उपलब्ध करती है। यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की स्थिति का सर्वेक्षण करती है, ज्ञान की दशा और उसकी बदलती प्रकृति का परीक्षण करती है, और उत्तर-आधुनिक काल में भव्य आख्यानों का प्रतिस्थापन लघु आख्यानों (little narratives) द्वारा किए जाने पर बल देती है। लियोतार्ड डैनियल बैल और ऐलन तुरेन द्वारा एक उत्तर-औद्योगिक समाज में औद्योगिक समाज के मौलिक परिवर्तन के विश्लेषण का अनुमोदन करते हैं जिसमें उत्पादन का प्रधान बल ज्ञान है और इसी का प्रयोग उत्तर-आधुनिक की व्याख्या के लिए करते हैं। वे लिखते हैंः "हमारी कायचालन परिकल्पना यह है कि ज्यों ही समाज उस युग में प्रवेश करते हैं जिसे उत्तर-औद्योगिक युग के नाम से जाना जाता है और संस्कृतियाँ उस युग में प्रवेश करती हैं जिसे उत्तर-आधुनिक युग के नाम से जाना जाता है, ज्ञान की स्थिति में परिवर्तन होता है"।

लियोतार्ड का तर्क है कि उत्तर-आधुनिक काल में ज्ञान एक व्यापार का वस्तु बन गया है (ज्ञान चलित अर्थव्यवस्था) जो उतरजीवन समृद्वि और मुनाफा कमाने (सता) का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके फलस्वरूप, भाषा, भाषा-विषयक सिद्धांतों, संचार, संतांत्रिकी (cybernetics), कंप्यूटर तथा परिकलित भाषाओं (computed languages), सूचना विज्ञान (informatics), सूचना संचयन (information storage) और डाटा बैंकों के पहलुओं के अन्तर्गत विज्ञान द्वारा तीव्रगति से तकनीकी नवाचार के कारण ज्ञान की खातिर ज्ञान और पाश्चात्य आधुनिकता द्वारा सही ठहराए गए सार्वभौमिक और उद्धारविषयक लक्ष्यों की प्राप्ति सामजिक उतरजीवन के लिए कम महत्वपूर्ण हो रहे हैं। व लिखते हैः

"ज्ञान का उत्पादन इसलिए किया जाता है और किया जाएगा ताकि उसे बेचा जा सके, उसका उपभोग इसलिए किया जाता है और किया जाएगा ताकि एक नए उत्पादन में उसका मूल्यवर्धन किया जा सकेः दोनों ही स्थितियों में विनिमय ही लक्ष्य हैं।"

उनके लिए, ऐसे ज्ञान पर जिसका नियंत्रण है, अब वह राजनीतिक नियंत्रण का प्रयास करता है। व परिकल्पना करते हैं कि भविष्य में ज्ञान राष्ट्रों के बीच संघर्ष का स्त्रोत बनेगा और इस कारण से सूचना तक पहुँच को लेकर। व मानते हैं कि उत्तर-आधुनिक युग में इस प्रकार के सता-उन्मुख ज्ञान का प्रभुत्व आधुनिकता की सार्वभौमिक उद्वार-विषयक परियोजना (ज्ञानोदय) के पतन की सूचना देता है। वे आगे आग्रह करते हैं कि ज्ञान न तो वैज्ञानिक है और न ही पूर्ण रूप से मूल्य निरपेक्ष क्योंकि वह वैधता हासिल करने के लिए आख्यानों पर निर्भर होता है– जिन तरीकों से विश्व को, उसके बारे में हमारे द्वारा कही कहानियों के माध्यम से समझा जाता है। वे इतिहास और समाज की समग्रतावादी प्रवृतियों को अस्वीकार

करते हैं जिन्हें वे "भव्य आख्यानों" के नाम से पुकारते हैं, जैसे मार्क्सवाद। भव्य/मेटा आख्यान वे सिद्धांत और संरचानाएँ हैं जो सब कुछ समझा पाने की क्षमता का दावा करते हैं और लियोतार्ड उनके दृष्टिकोण का विरोध करने पर बल देते हैं। नीत्शे द्वारा ईश्वर की मृत्यु की घोषणा के समान लियोतार्ड ने तीन मेटा आख्यानों की मृत्यु की घोषणा की – ईसाईयत, उदारवादी मानवतावाद और मार्क्सवाद।

"मेटा आख्यानों की सहायता चाहे विज्ञानों (सत्य का रहस्योद्घाटन), राजनीतिक आन्दोलनों (मानवता का उद्वार) अथवा कलात्मक आन्दोलनों (और सूक्ष्मदृष्टी हासिल करने), के समर्थन के लिए ली जाए फिर भी वे उस वैधता को उपलब्ध नही करा पाते जो वे आधुनिक युग में करा पाते थे। "वे स्पष्ट करते हैं कि ऐसे अनगिनत लघु आख्यान हैं (little narratives) जो पदवी के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं और हमारे ध्यान तथा निष्ठा के लिए निवेदन करते हैं जबकि कोई एकल सच्चाई (मेटा-आख्यान) नहीं है और जिन समग्रतावादी संरचनाओं के रूप में मेटा आख्यानों ने आधुनिकता को मज़बूती दी, वे अब समालोचना या क्रिया के लिए समकालीन उत्तर-आधुनिक विश्व में आधार उपलब्ध नहीं करते। इसकी जगह, हस्तक्षेप स्थानीय और अस्थायी होने चाहिए और सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर वे अब अपने आपको न्यायसंगत नहीं ठहरा सकते। इसके फलस्वरूप लियोतार्ड ने उत्तर-आधुनिक को "मेटा आख्यानों के प्रति अविश्वास" (incredulity towards meta narrative) कहकर पुकारा। अतिसंक्षेप में, लियोतार्ड ने वैज्ञानिक चेतना प्रतिमान (scientific rationality paradigm) के खंडन पर बल दिया और बहुल विवेकों का, संस्कृतियों का और ज्ञान के सापेक्षवाद का समर्थन किया। जैसा कि व कहते हैं–

7.2.2 ज़ाक देरीदा

ज़ाक देरीदा एक फ्राँसिसी दार्शनिक हैं जो लक्षण-विज्ञान या लाक्षणिकी विश्लेषण (semiotic analysis) के एक रूप को विकसित करने के लिए सुप्रसिद्व हैं जिसे विखंडन के नाम से जाना जाता है, जिसकी चर्चा इन्होंने अनेक ग्रंथों (texts) में की है और जिसे दृष्य प्रपंच शास्त्र अथवा घटना-क्रिया-विज्ञान- (phenomenology) के संदर्भ में विकसित किया। वे उत्तर-संरचनावाद और उत्तर-आधुनिक दर्शन से जुड़ी प्रमुख हस्तियों में से एक हैं। विखंडन शब्द का पहला प्रयोग इनके द्वारा अपनी पुस्तक "ऑफ ग्रेम्मेटॉलोजी" में किया गया और इसने अभूतपूर्व तरीके से पाश्चात्य दार्शनिक परम्परा की मान्यताओं को चुनौती दी और साथ ही और व्यापक रूप से पाश्चात्य संस्कृति को दी गई अपनी चुनौती को विखंडन कहा। उन्होंने विखंडन के वास्तविक अर्थ के संबंध में एक स्पष्ट एवं ठोस परिभाषा देने से इनकार कर दिया और अपनी रचनाओं का वर्णन इसे जानने के लिए चल रहे प्रयासों की एक श्रृंखला के रूप में किया। जैसा वे लिखते हैं:

"मेरे सभी निबन्ध इस विकट प्रश्न से निपटने का प्रयास हैं।"

विखंडन शब्द का प्रयोग उनके अनुयायियों और दूसरों द्वारा उस निश्चित संदर्भ से परे किया गया है जिसमें देरीदा उसका इस्तेमाल करते हैं और तर्क (reasoning) के सभी रूपों के विरूद्व प्रहार के रूप में इसका निरंतर गलत अर्थ लगाया गया है। देरीदा की रचनाओं का एक गहरा परीक्षण यह प्रदर्शित करता है कि विखंडन (जैसे देरीदा इसका प्रयोग करते हैं) एक सक्रिय आन्दोलन है (एक पद्वति नहीं) जो, अर्थ का उसके बारे में संदेह की सीमा (aporie) तक पीछा करते हुए, उस अपरिवर्तनीय परिवर्तकीयता (irreducible alterity) पर उसकी निर्भरता का प्रदर्शन करना चाहता है, जो पारगमन को और आगे बढ़ाने से इनकार करता है। परन्तु, यह मूलतः संघर्षों चुप्पियों, अन्तर्विरोधों और दरारों का खुलासा करने के लिए ग्रंथों के पठन का दार्शनिक और साहित्यिक विश्लेषण की एक विशेष विधि है। प्लेटो,

हइडेगर, हुर्सेल, नीत्शे, ऑस्टिन, मार्क्स, रूसो, सौस्सूर और फ्रोयड के ग्रंथों के सूक्ष्म पठन द्वारा देरीदा अक्सर एक ऊपरी तौर से उपांतिक या हाशिए की एक टिप्पणीया मूलभाव (motif) को चुनते हैं और उसे अपने वृतांत में केन्द्रीय बना देते हैं, ग्रंथ के आन्तरिक तनावों और अन्तर्विरोधों तथा उन क्षणों को दर्शाते हैं जब वह ग्रंथ स्वयं अपना विखंडन करते हैं, अतः उनका दावा है कि विखंडन की परिभाषा नहीं दी जा सकती और सही अर्थों में वह एक पद्वति ही नहीं है। उदाहरण के लिए, प्लेटो के "फाइड्रस इन डिस्सेमिनेशन" "Phaedrus in Dissemination") के एक पठन में, देरीदा फार्माकोन (Pharmakon) शब्द के दोहरे और अन्तर्विरोधी अर्थों का अन्वेषण करते हैं, एक उपचार और एक विष, दोनों के रूप में। देरीदा का विखंडन का सिद्धांत एक स्थिर केन्द्र की उपस्थिति, वस्तुनिष्ठता और परम सत्य की पुरानी मान्यता जिसे सामान्यरूप से धारण किया गया है उसके द्वारा जिसे देरीदा "लोगोसेंट्रिज़्म" (logocentrism) के नाम से पुकारते हैं – पाश्चात्य दर्शन द्वारा सभी ज्ञान के आधार की खोज, एक तर्क, या विवेक या सत्य में जो स्वयंसिद्व और स्वतः प्रभावित है, फोनोसेंट्रिज़्म (Phonocentrism) अर्थात लेखन की तुलना में भाषण या वाणी को प्राथमिकता देना तथा भाषा मूलक संरचनावाद के विरूद्व प्रतिक्रिया है जो इन वर्गीकरणों के प्रति भाष्य विज्ञान शैली (hermeneutics) में संदेह का पक्ष लेता है। देरीदा के लिए विखंडन राजनीति इस विचार से प्रारंभ होती है कि अतीत की तात्विक (metaphysical), ज्ञानमीमांसक (epistemological), नैतिक और तार्किक प्रणालियों (लोगोसेंट्रिज़्म-logocentrism) का निर्माण संकल्पनात्मक विरोधों या (द्विआधारी विरोधों) के आधार पर किया गया था जैसे अनुभवातीत/आनुभविक, आंतरिक/बाह्य, मौलिक/अमौलिक, अच्छाई/बुराई सार्वभौमिक/निजी (universal/personal) तथा ईश्वर/शैतान(good/devil) प्रत्येक द्विआधार जोडी के पदानुक्रम (hiererchy) में किसी एक शब्द को प्राथमिकता दी जाती है, दूसरे को दबाया अथवा अपवर्जित किया जाता है। हाशियाकृत शब्दों (marginalized terms) और उनके अपवर्जन की प्रकृति के विश्लेषण द्वारा विखंडन यह प्रदर्षित करना चाहता है कि एक शब्द के लिए अपने विलोम की तुलना में प्राथमिकता अन्ततः अनुचित है। प्राधिकृत शब्द (privileged term) केवल उस सीमा तक अर्थपूर्ण है जहाँ तक उसकी तुलना उसके तथाकथित अपवर्जित विलोम से की जाती है। अर्थात प्राधिकृत शब्द का गठन उससे होता है जिसे वह दबाता है, जो उसे परेशान करने के लिए अनिवार्य रूप से लौटेगा। इस प्रकार, प्राधिकृत शब्द कभी उत्तम पहचान या संकल्पनात्मक पवित्रता हासिल नहीं कर पाता; वह हमेशा हाशियाकृत शब्द पर परजीवी रहता है या उसके द्वारा संदूशित (contaminated) इस तरीके से देरीदा विखंडन के बल पर प्रदर्शित करते हैं कि अर्थ की शुद्ध उपस्थिति या पूर्ण मूल या आधार या स्थिर प्रकृति नाम की कोई वस्तु नहीं है जैसा कि पाश्चात्य दर्शन द्वारा दावा किया जाता है लोगोंसेंट्रिज़्म या उपस्थिति की तत्वमीमांसा (logocenteism or metaphysics of presence)। आगे बढ़ते हुए, फोनोसेंट्रिज़्म (phonocentrism) की परंपरा के विरूद्व, देरीदा लेखन को प्राथमिकता देते हैं। अपने ग्रंथ "ऑफ ग्रैमेटोलजी"के पहले अध्याय में, जिसका शीर्षक है" द एंड ऑफ द बुक एण्ड द बिगिनिंग ऑफ राइटिंग" (the end of the book and the beginning of writing), देरिदा तर्क प्रस्तुत करते हैः "पुस्तक की मृत्यु ने निःसंदेह घोषणा की.... केवल भाषण की मृत्यु की और लेखन के इतिहास में एक नए उत्परिवर्तन की" उनके लिए, भाषण द्वारा प्राधिकृत अर्थ की तथाकथित स्थिरता और लेखन से जुडा अनेक अर्थों का गुण (पॉलीसेमी) (polysemy) ही मुद्दा है। उनके तर्क का यहाँ मूल यह है कि फोनोसेंट्रिज़्म चेतना की आत्मउपस्थिति को, जिसे सूचित किया जा सके ऐसा एक प्राथमिक यथार्थ बनाने का कपटपूर्ण तरीका है। परन्तु, देरीदा के लिए भाषण, नाद के रूप में शब्द और संभावित अर्थ की अनंतता के बीच अंतराल के बारे में अनजान हैं। भाषण, वास्तव में लेखन का तुच्छ रूप है। परन्तु लेखन हमें यह अवगत कराता है कि अर्थअसीम भेद को सम्मिलित और उत्पन्न करता है। इससे आगे,

देरीदा के लिए लिखित ग्रंथ, भेद के कारण (अर्थ की अनिश्चितता को अभिव्यक्त करने के लिए उनके द्वारा विशेष रूप से निर्मित नवशब्द) (neologism) – अनिवार्य रूप से लेखन के दरादों से असंबद्व हो जाता है। वैचारिकता और रचताकारिता को सामान्य रूप से निष्कासित कर दिया जाता है। देरीदा वास्तव में उन पाठकों का गुणगान करते हैं। जो अपने स्वयं के अर्थ बनाते हैं। जैसा कि व कहते हैः "पुस्तक का विचार जो हमेशा एक प्राकृतिक समग्रता की ओर संकेत करता है, लेखन की भावना के लिए गंभीरतापूर्वक प्रतिकूल है।"

सौस्यूर और लेवी-स्ट्रॉस के भाषाई संरचनावाद (linguistic structurelism) के विरूद्व देरीदा इस पर बल देते हैं जिसे व अंतः पाठीयता की पद्धति (inter & textuality method) कहते हैं और यह तर्क देते हैं कि हम भाषा पर कभी विजय नहीं पा सकते। प्रतिनिधित्व कभी एक उपस्थिति को सूचित नहीं कर सकता चूँकि इसमें हमारे द्वारा प्रयोग किए जा रहे चिन्हों में निहित स्थायी भेद की मान्यता को हमेशा शामिल करना चाहिए जो बदले में अनंत स्थगन या असीम (अपरिमित) अर्थ को दर्शाता है। संक्षेप में दरीदा के लिए सभी आधार मर चुके हैं। विखंडन का केन्द्रीय उद्देश्य है प्लेटो के बाद से पाश्चात्य चिन्तन के इतिहास में प्रचलित लोगोसेंट्रिज़्म और फोनोसेंट्रिज़्म को बेनकाब करना। स्थिर अर्थ के मिथक को अस्थिर करते हुए, अयुक्ति संगत विरोधाभासों को बेनकाब करते हुए और भाषा में अर्थ के अनंत स्थगन के खेल पर बल देते हुए, यह हमें परिचित के बीच में अपरिचित को दर्शाता है। एक निश्चित कृति में एक सच्चे अर्थ, एक सुसंगत दृष्टिकोण या एकीकृतसंदेश को खोजने के बजाय, एक विखण्डित पठन जो बार्बरा जॉनसन के शब्दों मे "अभिप्राय के परस्पर विरोधी बल" जो क्रीडा कर रहे हैं और पठनीय अचेतन में पढ़े जाने का इंतज़ार कर रहे हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक बाहर प्रकट करता है।

7.2.3 मिशेल फूको

फ्राँसिसी दार्शनिक और इतिहासकार मिशेल फूको उत्कृष्ट उत्तर-आधुनिक सिद्धांतकारों में से एक हैं। उनकी कृतियाँ राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, इतिहास की विषय सीमाओं को लाँघते हुए ओर लगभग सभी प्रधान कथ्यपरक क्षेत्रों से संबंध रखती हैं जैसे मनोचिकित्सा, आयुर्विज्ञान, भाषाशास्त्र, दंड-व्यवहार, कारागार तथा यौन संबंधी आचरण ताकि मनुष्यों के बारे में चिन्तन प्रणालियों का स्पष्ट उच्चारण हो सके। अपनी कृतियों में उन्होंने दो पूरक पद्वतियों का प्रयोग कियाः (क) प्रारंभिक कृतियों में आर्कियॉलजी ऑफ नॉलेज और (ख) बाद की कृतियों में जीनियॉलजी ऑफ पावर (Geneology of Power)। पुरात्व विज्ञान (Archaeology) एक निश्चित ऐतिहासिक क्षण पर ध्यान देता है जबकी वंशावली (geneology) का संबंध एक ऐतिहासिक प्रक्रिया से है। इन दोनों फूकोवादीय पद्धतियों का स्थिर और प्रेरक बल है वह जिसे फूलो संभाषण (discourse) कहते हैं जिसके द्वारा कर्ता के सोचने और व्यवहार के तरीकों को निर्दिष्ट करने वाले सहत-तल के सिद्धांतों को प्रकाशित किया जा सके। मूल्यों, वर्गीकरण और अर्थों का वहन करते वाले भाषण व्यवहारों की समष्टि के रूप में, संभाषण एक ही समय में कर्ताओं के बारे में सत्य का निर्माण करता है और इस सत्य सता की दृष्टि से कर्ताओं को संस्थापित करता है। "मैडनेस एण्ड सिविलाइज़ेशन" और "द ऑर्डर ऑफ थिंग्स" जैसी अपनी प्रारंभिक कृतियों में पुरातत्वीय पद्धति का प्रयोग करते हुए फूको ने दो उत्तर-आधुनिकवादी प्रसंगों की जानकारी दीः (क) फूको ने मानवतावाद की ज्ञानोदय परियोजना (मनुष्य एक स्वतंत्र हस्ती के रूप में) को अस्वीकार किया क्योंकि उनका ध्यान व्यवहार के रूप में संभाषण पर था, न कि एक अमूर्त जीव के रूप में मनुष्य या मानव कर्ता पर, जैसा कि संस्वनावादी करते हैः और (ख) वे संरचनावाद और उदारवादी मानवतावाद के विरुद्ध थे। इन्होंने विचारों के इतिहास के

प्रसंगों जैसे विचारों की उत्पति, उनकी निरंतरता और समग्रीकरणताओं की प्रक्रिया को यह तर्क देकर अस्वीकार किया कि संभाषण एक स्थान में स्थिर ओर बन्द नहीं थे, बल्कि स्थलों, काल और गतिविधियों की एक श्रृंखला के पार बिखरे हुए थे। उदाहरण के लिए, अपनी पुस्तक "मैडनेस एण्ड सिविलाज़ेशन" (1965) में पागलपन के बदलते संप्रत्ययीकरण का परीक्षण करते हुए फूको ने उस संभाषण में परिवर्तन देखा जिसमें पागलपन को नैतिक भ्रष्टाचार के एक रूप के तौर पर बनाया गया था, जिसका समाधान एक समय में पागलों का समाज से निष्कासन द्वारा किया गया था – यहाँ से हटकर संभाषण वैज्ञातिक व्यवहार की ओर बढ़ा जिसमें पागलपन को तर्क या विवेक का प्रतिपक्ष माना गया, दिमाग की एक आंतरिक दुष्क्रिया जिसके पीडितों को कैद रखना आवश्यक था और बाद में उनका इलाज मानसिक रोग से पीड़ितों के रूप में विशेषज्ञों द्वारा (जिनके पास विवेक है) चिकित्सक संस्थाओं में होना चाहिए था। एक संभाषण से दूसरे में, इन परिवर्तनों में प्रधिकरण, सता, सामाजिक सापेक्षता और संस्थात्मक संगठन के नए रूप गढ़े गए, चूंकि फूको के लिए संभाषण, मात्र भाषण के पृथक प्रतिमान न होकर, सामाजिक संगठन और व्यवहार के अधिक विस्तृत प्रतिमानों में सन्निहित संघटनात्मक सिद्धांत हैं। अतः कोई एकल सार्वभौमिक सत्य नहीं है और प्रभुत्व कभी पूर्ण नहीं होता और कभी समग्र नहीं होता।

टपने बाद की कृतियों में फूको ने संभाषण के बारे में अपने विचार में वंशावली विश्लेषणों के माध्यम से परिवर्तन किया जैसे दण्ड और लैंगिकता जिसमें उन्होंने अनुशासन और ज्ञान की समकालीन प्रणालियों के जटिल और आकस्मिक उदय का परीक्षण किया। फ्रेडरिक नीत्शे के ग्रंथ "ऑन द जीनियॉलजी ऑफ मोरैलिटी" द्वारा प्रबल रूप से प्रभावित होने के कारण, फूको टिप्पणी करते हैं कि वंशविषयक विश्लेषण उन छिपी हुई संरचनाओं (ढ़ाँचों) को प्रकट करते हैं जो न केवल समाजों के ज्ञान आधार को समर्थन देते हैं बल्कि उसकी विचारधारा और शक्ति संबंधों को भी, और यह भी प्रकट करते हैं कि संभाषण, विचार और सार्वभौमिक सत्य मानव हस्तक्षेप द्वारा जटिल बना दिए गए हैं और समाज की अनुरूपता के पालन के अन्तर्गत आलिप्त किए गए हैं। परिणामस्वरूप, जैसा आधुनिकता द्वारा दावा किया गया है, ऐसा कोई वस्तुनिष्ठ ज्ञान नहीं है। समालोचनात्मक सिद्धांत के अन्तर्गत फूको की कृति सता या शक्ति का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। सता/शक्ति के पारम्परिक नमूनों (models) (अर्थात मार्क्सवादी और उदारवादी उपागम) के विरूद्व फूको तर्क देते हैं कि सता न तो वर्ग में स्थित है और न ही एक व्यक्ति में बल्कि वह पूरी सामाजिक संरचना में विसरित है और उसके अन्दर व उसके माध्यम से प्रयोग में लाई जाती हैं। जैसा कि वे कहते हैं:

"सता कभी भी इधर या उधर स्थानीकृत नहीं होती बल्कि एक जाल सद्दश संगठन के माध्यम से नियोजित और प्रयोग की जाती है।"

सता के संबंध में उनका सैद्वांतीकरण है:

- सता हमेशा केवल संबंधों के माध्यम से प्रयोग की जाती है (फूको ने सता-संबंधों का विश्लेषण किया परन्तु स्वयं सता का नही); अर्थात सता संबंध अपने विशिष्ट विधियों, रणनीतियों, तरकीबों, व्यवहारों और शैलियों में।
- सभी सामाजिक संबंध सता के संबंध होते हैं सता उन विभिन्न विधियों को बाहर लाने के लिए जिनके द्वारा हमारी संस्कृति में मनुष्यों को दास बनाया जाता है, सक्षम बनाती है।
- सता मूल रूप से सामाजिक अन्योन्यक्रिया (सूक्ष्म-सता या उपबतव power) का एक बॉटम-अप (bottom-up) लक्षण है अर्थात् नीचे से ऊपर की ओर।

- सता सकारात्मक, उत्पादक और संघटक है न कि नकारात्मक, निशेधक और दमनकारी, इसके बावजूद कि वह कभी-कभी प्रभुत्व का रूप ले लेती है, अर्थात अर्थों, दासों और सामाजिक व्यवस्थाओं को उत्पन्न करती है– ये इसके परिणाम हैं न कि इसका पदार्थ या कारण-कार्य (a priori)
- बिना विरोध के कोई सता संबंध नहीं होते क्योंकि विरोध हमेशा अपने सशक्तिकरण का माध्यम होता है; व्यक्ति सता के एक संबंध का केवल पुनर्गठन करता है।
- ज्ञान और सता परस्पर संघटक हैं और इसलिए उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता; फूको ने वास्तव में सता/ज्ञान पारिभाषिक शब्द को प्राथमिकता दी।
- सता अवैयक्तिक है (impersonal) और भाषा, ज्ञान, संस्थात्मक व्यवहारों के माध्यम से बहती है या फैलती है, और (1) सता और स्वतंत्रता तब तक विरोधी नहीं है। जब तक कोई दास न हो, अतः सता के बाहर कोई स्वतंत्रता नहीं है। इस प्रकार व आधुनिक समाजों में कार्यरत सता की विभिन्न विधियों को समझने के लिए प्रभुसता या प्रभुत्वसंपन्न सता की अवधारणा की अपर्याप्त मानते हैं। जैसा कि वे कहते हैंः

"राजनीतिक सिद्धांत सामान्य रूप से संप्रभु की हस्ती से सम्मोहित (आकर्षित) होने से रूक नहीं पाया है। किन्तु हमें जिसकी आवश्यकता है, वह एक ऐसा राजनीतिक दर्शन है जिसका निर्माण संप्रभुता की समस्या के ईद-गिर्द न किया गया हो। हमें राजा के सिर को काटने की आवश्यकता हैः राजनीतिक सिद्धांत में यह किया जाना अभी बाकी है।"

फूको का मत है कि उदारवादी प्रजातंत्र मृत्यु की धमकी और आदेशों के माध्यम से कार्य नहीं करते बल्कि उसके माध्यम से करते हैं जिसे वेसरकारिता या आनुशासनिक सता या जैव-सता (bio-power) कहते हैं, अर्थात विशाल जनसंख्या और उनके व्यवहारों को विनियमित और अनुशासित करना इसके लिए उनमें स्वतंत्रता की एक भावना को उत्पन्न करना जो विषम जनता को आत्मशासन के लिए अनुशासित करने की एक यंत्रावाली के रूप में काम करती है। इस प्रक्रिया को व्यवहार में दर्शाने के लिए इन्होंने जो लोकप्रिय उदाहरण अपनी पुस्तक "डिसिप्लिन एण्ड पनिश" में दिया वह था समाज के अन्दर निगरानी का बढ़ता हुआ उपयोग जिसे घूमने फिरने की स्वतंत्रता में वृद्वि और सुरक्षा के नाम पर न्यायसंगत ठहराया जा रहा है; वास्तव में यह हम सभी से अपने व्यवहार का सेंसर कराता है कि कहीं हम कैमरे में कैद न हो जाएँ। फूको के लिए हमारे समाज की सरकार केवल राज्य के क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि उन मानकों तक फैली हुई है (निगरानी की भूमिका निभाते हुए) जो हमारी सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुए हैं – परिवार, शैक्षाणिक संस्थाएँ, अस्पताल, धार्मिक स्थल– हमारे शरीर पर शासन करते हैं (विनीत शरीर), हमारी गतिविधियों को अनुशासित और उनका सामान्यीकरण करते हैं जो उनके शब्दों में एक कारसेरल समाज (carceral society) या कारावास या जेल संबंधी समाज के उदय, मानव मुक्ति की चुप्पी और सबसे ऊपर राज्य की आर्थिक और राजनीतिक आवश्यकताओं की वृद्धि में योगदान करते हैं।

इस प्रकार, सरकारिता बिना एकीकृत किए, केन्द्रीकृत किए या व्यवस्थित किए या यहाँ तक कि सुसंगत किए, आधुनिक समाजों के आर-पार फैली हुए विभिन्न प्रकार की शक्तियों और ज्ञान को आकर्षित करती हैं। परन्तु, फूको यह तर्क नहीं दे रहे हैं कि सरकारिता कालक्रमानुसार संप्रभुता और शासन का स्थान ले लेती है। वे कहते हैंः

"हमें चीज़ों को संप्रभुता के एक समाज के स्थान पर एक अनुशासनिक समाज और तत्पश्चात् एक अनुशासनिक समाज के स्थान पर सरकार के एक समाज के रूप में नहीं देखता है, वास्तव में हमारे पास एक त्रिकोण है, संप्रभुता– अनुशासन–सरकार, जिसका

प्राथमिक निशाना जनसंख्या है और सुरक्षा के उपकरण जिसकी मौलिक यंत्रावली है। "उन्होंने अनुशासनिक शक्ति या सता के तीन उपकरणों की पहचान की, जो अधिकांश रूप में सैन्य मॉडल से प्राप्त किए गए थेः

(क) पदानुक्रमिक प्रेक्षण अथवा अधिकारियों की अपने नियंत्रण में उन सब पर एक ही नज़र द्वारा निरीक्षण की क्षमता (लाक्षणिक तौर पर समाज के मानक) (ख) प्रससमान्यी-कृत निर्णय लेने और प्रतिमानों का उल्लंघन करने वालों को सज़ा देने की क्षमता तथा (ग) प्रजा की निगरानी तथा उसके बारे में प्रसामान्यीकृत निर्णय लेने के लिए परीक्षा का प्रयोग। एक परीक्षा शक्ति-ज्ञान के संबंध का सुन्दर उदाहरण है, जिनके पास परीक्षा देने की शक्ति है, उन्हें अतिरिक्त ज्ञान मिलता है और उसके द्वारा प्रजा पर परीक्षाओं को आरोपित करने के माध्यम से उन्हें और शक्ति मिलती है। इस प्रकार मानव मुक्ति की ज्ञानादय परियोजना, प्रगति, वस्तुनिष्ठ ज्ञान और सार्वभौमिक सत्य के विरूद्व फूको दावा करते हैं कि 19वीं सदी की नई अनुशासनकारी सताएँ, जो उदाहरण के लिए कृत्यों या कर्मों को दण्डित करने के स्थान पर कैदियों को सुधारना चाहती थीं, वे भी पून से पहले की प्रणालियों जितनी ही दमनकारी थीं और ज्ञान शक्ति का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें सत्य स्वाभाविक रूप से राजनीतिक है। जैसा की वे कहते हैंः

"सत्य इस संसार की वस्तु हैः इसका उत्पादन केवल प्रतिबंध के विभिन्न रूपों की वजह से होता है। और यह नियमित रूप से शक्ति के प्रभावों को उत्प्रेरित करता है।"

7.2.4 एरनेस्टो लाक्लू और शांताल मूफ

लाक्लू और मूफ एरनेस्टो लाक्लू और शांताल मूफ की रचनाएँ विशेष रूप से उत्तर-मार्क्सवादी चिन्तन और सामान्य रूप से उत्तर-आधुतिकवाद का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनका मत है कि असंगत तरीके से या तर्कमूलक तरीके से (discursively constructed) निर्मित विचार हैं। इन्होंने शास्त्रीय मार्क्सवादी शब्द "वर्ग" का विश्लेषण और विखंडन एक विश्लेषणात्मक और तर्कमूलक तरीके से किया। इनका दावा था कि एक एकीकृत संलाप लगभग असंभव है। अतः मार्क्सवादीयों को एकल सर्वहारा वर्ग के संभाषण से अपने ध्यान को बहुल संभाषणों की दिशा में बदलना चाहिए जैसे महिलाए, अश्वेत जन, आप्रवासीगण, उपभोक्तागण और पर्यावरणविद् आदि। लाक्लू यह दावा करते हैं कि सांस्कृतिक संघर्ष के क्षेत्र का राजनीतिक पहचानों के निर्माण में मौलिक भूमिका है। वे एक प्रणाली का सुझाव देते हैं जिसका नाम "रेडिकल डेमोक्रेसी" है, जिसमें प्रजातांत्रिक मूल्यों की वर्चस्वता की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त इसे प्रजातांत्रिक व्यवहारों के गंणन की और उनके संस्थाकरण की आवश्यकता होगी जिसके लिए विविध प्रकार के प्रजातांत्रिक संघर्षों जैसे जातिभेद विरोधी, पूंजीपति विरोधी, पर्यावरणविदों मानव अधिकारों और नागरिक आधिकारों के आन्दोलनों को एक छत के नीचे लाना होगा। रैडिकल डेमोक्रेसी पूंजीवाद के उन्मूलन के लक्ष्य को कायम रखती है परन्तु साथ ही यह दावा भी करती है कि पूंजीवाद का उन्मूलन मात्र अनिवार्य रूप से अन्य प्रकार की असमानताओं और शोषण को समाप्त नहीं कर पाएगा। अतः एक विस्तृत ढ़ाँचे और परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता होगी।

उत्तर-आधुनिकवादियों के समान, लाक्लू और मूफ का उत्तर-मार्क्सवाद यह दावा करता है कि रूदिवादी/शास्त्रीय मार्क्सवाद आधुनिक युग में व्यवहार्य नहीं है। लियोतार्ड, देरीदा और फूको रचनाओं और विचारों के प्रकाश में, लाक्लू और मूफ का उत्तर-आधुनिकवाद निम्नलिखित विशेषताओं को प्रदर्षित करता हैः

यह ज्ञानोदय दर्शन को, जो मानव प्रगति और मुक्ति के लिए आधार के रूप में तात्विकता (essentialism) और आधारिकतावाद (foundationalism) का समर्थन करता है, इस प्रकार

चुनौती देता है: (क) एक व्यक्ति को एक पुर्णता के रूप में न देखकर, उसे एक ऐतिहासिक और सामाजिक रूप से स्थित प्राणी मानता है जिसके कारण यह तात्विकतावादी अवधारणाओं की आलोचना करता है, जैसे उदाहरण के लिए, नारीत्व और पुरुषत्व, उन्माद और स्वस्थचितता आदि; और (ख) आधारिकतावाद विरोधी दृष्टिकोण का गुणगान करता है जो सूचना देता है तटस्थ ज्ञान की स्थापना के लिए तटस्थ मानदंडों के अभाव की और सार्वभौमिक सत्य को विवेक पर ज्ञानोदय के जोर के रूप में देखने की, मानव प्रगति के आधार के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिक और मुक्ति को सामाजिक अभियांत्रिकी (social engineering) के उत्पाद के रूप में (सता अभिमुखता, Power orientation) देखना – ये सब मानव मुक्ति उत्पन्न नहीं कर पा रहे हैं, बल्कि असामान्य और अचेतन आदि के नाम पर हमारी स्वतंत्रताओं को छीन रहे हैं। इतना ही नहीं, पश्चिम में हुए प्रमुख परिवर्तनों को पहचानकर, विशेष रूप से वे जो ज्ञान की स्थिति और भूमिका से संबंधित हैं उत्तर-आधुनिकवाद पश्चिम में ज्ञानोदय के सिद्धांतों की उपयुक्ता को चुनौती देता है।

यह सत्य, ज्ञान और विज्ञानों को (बल्कि, वह सब कुछ जो समाज में है) सामाजिक निर्माण के उत्पादन मानता है और इस प्रकार सता से संबंधित। युरगेन हाबरमास और टैरी ईगलटन जैसे समालोचनात्मक सिद्धांतकार ऐसे उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण को इस आधार पर चुनौती देते हैं कि यह समाजशास्त्र द्वारा निभाई जाने वाली उद्धारविषयक भूमिका के बारे में हमें संदेहवादी बना देते हैं। फूको जैसे उत्तर-आधुनिकवादी इन आरोपों का खंडन इस जवाबी समालोचना द्वारा करते हैं कि तथा कथित उद्धारविषयक परियोजनाएँ सामान्य रूप से मुक्ति से संबंधित न होकर विभिन्न शक्ति-ज्ञान व्यवस्थाओं के उदय से संबंधित होती है। इसके अतिरिक्त, वे आग्रह करते हैं कि उत्तर-आधुनिकवाद एक समालोचनात्मक सामाजिक ज्ञान के विचार के साथ असंगत नहीं है बशर्ते कि स्पष्ट ज्ञान मीमांसीय या नियामक निर्देशों को उपलब्ध करना आवश्यक न हो।

लियोतार्ड जिसे मेटा-आख्यान कहते हैं, उसे यह अस्वीकार करता है; अर्थात समग्रतावादी सिद्धांत और संरचनाएँ। उनके स्थान पर यह उनका पक्ष लेता है जिन्हें लियोतार्ड लघु-आख्यान कहते हैं।

- यह प्रवृत और एकल अर्थों को अस्वीकार करता है और बल्कि भिन्नताओं, सापेक्षवाद, अनिर्धायता और विभिन्न यथार्थों, पहचानों, सच्चाइयों और संभाषणों या संलापों को गुणगान करते हुए विभिन्न अर्थों और व्याख्याओं को स्थान देता है।
- यह सैद्वांतीकरण-विरोधी नहीं है, परन्तु सैद्वांतीकरण के प्रवृत और निश्चित योजना से परे प्रतिक्रियात्मक तरीके से सैद्वांतीकरण करता है।
- यह तर्क विरोधी नहीं है परन्तु तर्कसंगत/तर्कहीन के द्विगुण वर्गीकरण का विखंडन करना चाहता है ताकि तर्कहीन को मान्यता दी जा सके और उसकी पहचान का गुणगान किया जा सके जिसके लिए वह तर्क को तर्क द्वारा चुनौती देता है।
- यह ज्ञान-विरोधी नहीं है परन्तु समकालीन ज्ञान की शक्ति और बाज़ार-उन्मुखता की व्याख्या करता है।
- यह घटना और सिद्धांतों की सापेक्षता और ऐतिहासिकता पर बल देता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) लियोतार्ड ने यह तर्क क्यों दिया कि ज्ञान व्यापार की एक वस्तु बन गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विखंडन से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 उत्तर-आधुनिकवाद और उत्तर-संरचनावाद

उत्तर-आधुनिकवाद और उत्तर-संरचनावाद के बीच अनेक समानताएँ हैं।

- उत्तर-आधुनिकवाद (फूको और लियोतार्ड) समाज, संस्कृति और इतिहास के बारे में एक सिद्धांत है जबकि उत्तर-संरचनावाद ज्ञान और भाषा का सिद्धांत है।
- उत्तर-आधुनिकवाद विकेन्द्रित ज्ञान को प्राथमिकता देता है जबकि उत्तर-संरचनावाद में आधारिकतावाद – विरोध शामिल है, अर्थात् ज्ञान और नैतिकता के तर्कपूर्ण आधार की आधुनिक खोज का खंडन; ग्रंथों में अर्थ एवं वाग्मिता या वाक्पटुता के निर्माण पर बल; तथा ज्ञान और सता/शक्ति के बीच संबंध।
- दोनों सार्वभौमिक समाजशास्त्र की परियोजना को अस्वीकार करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तर-संरचनावाद उत्तर-आधुनिकवाद के क्षेत्र के अन्तर्गत सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांत में एक आन्दोलन है जिसकी सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं पर विस्तृत व्यक्ति है।

7.4 उत्तर-आधुनिकवाद और वैश्वीकरण

शास्त्रीय, सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांत राष्ट्र राज्यों पर बृहतर बल देता है। वैश्वीकरण के छत्र के नीचे राज्यों और समाजों ने मूलभूत परिवर्तनों का अनुभव किया है। उत्तर-आधुनिकवाद का तर्क है कि वैश्वीकरण के तले राष्ट्र राज्य महत्व खो रहे हैं क्योंकि विश्व आन्योन्याश्रित हो रहा है। प्रौद्योगिक और इलेक्ट्रॉनिक क्रांति ने पूर्वसमय की एक रूपता के स्थान पर विजातीयता, बहुलतावाद, वैयक्तिकतावाद, विभेदीकरण और विखंडन का निर्माण किया है।

इमैन्यूएल वॉलरस्टाइन का तर्क है कि विश्व पूंजीवादी प्रणाली के इतिहास का झुकाव सांस्कृतिक एकरूपता की दिशा में न होकर, सांस्कृतिक विजातीयता की ओर रहा है। अतः विश्व प्रणाली में राज्य के विखंडन की प्रक्रियाएँ और सांस्कृतिक विभेदीकरण दोनों एक साथ हो रहे हैं।

7.5 समालोचना

आलोचनकों ने ध्यान दिलाया है कि उत्तर-आधुनिकवाद अपने आप में एक भव्य-आख्यान बन गया है और यह व्यक्तिगत और सामाजिक विघटन और निराशा की समस्याओं को प्रबल या तीव्र कर देता है। नोम चौमस्की ने यहाँ तक दावा किया है कि उतर आधुनिकतावाद निरर्थक है क्योकि इसके पास आनुभविक और विश्लेषणात्मक ज्ञान में जोड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। पॉलीन रोस्नो ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि उत्तर-आधुनितावाद तर्क हीनपर बल देता है जबकि उसके परिप्रेक्ष्य को उन्नत करने के लिए या आगे बढ़ाने के लिए तर्क के उपकरणों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाता है। रोस्नो (Rosenau) आगे तर्क प्रस्तुत करती हैं कि उत्तर-आधुनिकवाद आधुनिकवाद की असंगति की आलोचना करता है परन्तु स्वयं संगति के मानदंडों द्वारा नियंत्रित या अभिनिर्धारित होने से इनकार कर देता है। कुछ अन्य समालोचनाओं ने ध्यान दिलाया है कि उत्तर-आधुनिकवाद अब भी उत्पीडन और हाशियाकरण की जड़ों से संबंधित और गहरे प्रश्नों को निरुतर छोड़ देता है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) वैश्वीकरण के बारे में उत्तर-आधुनिकवादी क्या कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) उत्तर-आधुनिकवाद की आलोचना के कुछ बिन्दुओं की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 सारांश

अतिसंक्षेप में, उत्तर-आधुनिकवाद के मुख्य लक्षणों का सारांश निम्नलिखित हैः

- यह अन्तिमता के स्थान पर अंतहीनता (interninancy) को विशेष महत्व देता है।

- यह स्वीकार करता है कि वास्तविकता खंडित और असंग या बेमेल है।
- विहित सता (canonical authority) का विरोध करता है।
- शैलियों, रचना-पद्धतियों और परम्पराओं के अबाध मिश्रण पर बल देता है।
- सिद्धांतों की सोपाधिकता (conditionality) और ऐतिहासिकता पद बल देता है।
- स्थैतिकता या गतिहीनता के स्थान पर सृजन और व्याख्या की प्रक्रिया पर विशेष बल देता है।
- यह आधारिकता-विरोधी (anti-joundational), तात्विकता विरोधी (anti essentialist) और मेटा-उपाख्यान विरोधी (anti-meta-narratives) है।
- यह तर्क प्रस्तुत करता है कि परम सत्य की खोज लुप्त हो गई है और सार्वभौमिक ज्ञान केवल एक मिथक है।

7.7 संदर्भ

एगर, बेन (1991), क्रिटिकल थियरी, पोस्टस्ट्रक्चरलिज़्म, पोस्टमॉडर्निज़्मः देयर सोशियोलॉजिकल रेलेवेन्स, ऐन्युअल रिव्यू ऑफ सोशियॉलजी, 17, पृष्ठ 105-131

बैर्ट, पी, डी.वाइनबर्ग एण्ड वी.मोटिए (2011), सोशल कंस्ट्रक्शनिज़्म,

पोस्टमॉडर्निज़्म एण्ड डीकंस्ट्रक्शनिज़्म, इन आई जार्वी एण्ड जे.बोनिल्ला (सम्पा), सेज हेंडबुक ऑफ दा फिलासफी ऑफ. सोशियल साइन्सस, लंदनः सेज पब्लिकेशन्स, पृष्ठ 475-86

बेन्जामिन, ए (2006), 'डीकंस्ट्रक्शन' इन एस. मल्पास एण्ड पी. वेक (सम्पा),दा राउतलैज कम्पैनियन टू क्रिटिकल थियोरी. लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 81-90

ब्राउन, डग (1992), इंस्टिट्यूशनलिज़्म एण्ड पोस्टमॉडर्न पोलिटिक्स ऑफ सोशियल चेन्ज जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इश्यूज़, 26ः 2(जून), पृष्ठ 545-552

ब्राउन, डब्ल्यू.(2006), पावर आफ्टर फूको, इन जे. ड्राइज़ेक, बी. होनिग एण्ड ए. फिलिप्स (सम्पा), दा ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पोलिटिकल थियोरी, लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 65-84

बार्स्की, आर (2001). पोस्टमॉडर्निटी, इन वी.टेलर एण्ड सी. विनक्विस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म, लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 304-08

कार्टर, डी. (2012), लिटेररी थियोरी.यूकेः ओल्डकासल बुक्स

देरीदा, जे. (1976), ऑफ ग्रैमेटॉलजी, अनुदित, गायत्री स्पिवाक, बॉल्टिमोरः जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस

देरीदा, जे. (1988) लेट्टर टूए जेपेनीस फ्रेंड, इन डी. वुड एण्ड आर. बेर्नास्कोनी (सम्पा) देरीदा एण्ड डिफेरेन्स. एवैनस्टनः नॉर्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 4-10

इगलटन, टी (1996) दा इल्यूज़ंस ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म. न्यू यॉर्कः ब्लैकवैल पब्लिशिंग.

फूको, एम. (1965), मैडनेस एण्ड सिविलाइज़ेशनः ए हिस्ट्री ऑफ इनसैनिटी इन दी एज ऑफ रीज़न. लंदनः राउनलैज.

फूको, एम. (1969) आकियॉलजी ऑफ नॉलेज एण्ड दा डिसकोर्स ऑफ लैंगवज, न्यू यॉर्कः हार्पर कोलोफोन.

फूको, एम.(1977). डिसिप्लिन एण्ड पनिशः दा बर्थ ऑफ दा प्रिज़िन. लंदनः विन्टेज.

फूको, एम.(1980), पावर/नॉलेजः सेलेक्टेड इंटरव्यूज़ एण्ड अदर राइटिंग्स, 1972-1977, लंदनः हार्वेस्टर व्हीटशीफ.

फूको, एम (1983), दा सब्जेक्ट एण्ड पावर, इन एच. ड्रेफ्युस एण्ड पी.रैबिनो, मिशेल फूकोः वियौंड स्ट्रकचरलिज़्म एण्ड हरमेन्यूटिक्स. शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

फूको एम (1991) गवर्नमेंटैलिटी, इन जी. बर्शेल, सी गॉर्डन एण्ड पी. मिल्लर (सम्पा), दी फूको इफैक्टः स्टडीज़ इन गवर्नमेंटल रैशनैलिटी. लंदनः हार्वेस्टर व्हीटशीफ

जे. एफ.(1984), दी पोस्टमॉडर्न कंडिशनः ए रिपोर्ट ऑन नोलेज. मैनचेस्टरः मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस

मार्गरोनी, एम (2001), ज़ाक देरीदा, इन वी.टेलर एण्ड सी. विनक्वेस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म. लंदन. राउतलैज, पृष्ठ 92-94

मल्पास, एस.(2005), दा पोस्टमॉडर्न.न्यू यॉर्कः राउतलैज

रिटज़र, जी. (1997) पोस्टमॉडर्न सोशियल थियोरीः न्यू यॉर्कः मेक्ग्रॉ हिल.

सिम.एस (2001), दी राउतलैज कम्पैनियन टू पोस्टमॉडर्निज़्म, लंदनः राउतलैज.

विन्सेंट, ऑक्सफोर्ड ए.(2004) दानेचर ऑफ पोलिटिकल थियोरी, न्यू यार्कः

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उतर में निम्नलिखित सूत्रों पर विशेष बल होना चाहिए
   - आधुनिकता के प्रतिक्रिया
   - शब्द (term) का पहली बार प्रयोग कब और कहाँ (किया गया)
   - समग्रतावादी सिद्धांतों (totalising theories) की अस्वीकृति
   - कुछ उत्तर-आधुनिकवादियों के नाम

बोध प्रश्न 2

1) आपके उतर में ग्रंथ में उल्लेख किए गए उद्धरण को शामिल किया जाना चाहिए, विशेष रूप से इस पर बल दें कि किस प्रकार ज्ञान व्यापार की एक वस्तु बन गया है और ज्ञान की खातिर ज्ञान से भिन्न है।

2) आपके उतर में देरीदा की पुस्तक "ऑफ ग्रैमेटॉलजी" का उल्लेख होना चाहिए, ग्रंथ में विनाश पर उनके द्वारा किए गए उद्धरण का उल्लेख किया जाना चाहिए और इस बात पर बल दें कि यह किस प्रकार पठन और मूलपाठों की पठन की पद्धति है।

बोध प्रश्न 3

1) आपको उत्तर में एक उत्तरोतर अन्योन्याश्रित विश्व में राष्ट्र राज्य की धारणा के पतन, सांस्कृतिक विजातीयता बनाम एकरूपता या सजातीयता और इमैन्युएल वॉलरस्टाइन

के दृष्टिकोण का उल्लेख होना चाहिए।

2) आपके उत्तर द्वारा इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि उत्तर-आधुनिक अपने आप में एक भव्य-आख्यान है तथा नोम चौमस्की और पॉलीन रोस्नोके विचारों का उल्लेख होना चाहिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

अन्य अध्ययन सामग्री

बैरी, पी. नॉरमन (1995), *एन इंट्रोडक्शन टू मॉडर्न पॉलिटिक्ल थ्योरी,* दि मैकमिलन प्रेसः लंदन।

बेलीस, जौन एवंअन्य (2011), *ग्लोबलाईज़ेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः न्यूयॉर्क।

भार्गव, राजीव एवं अशोक आचार्य, (2008), *पॉलिटिक्ल थ्योरी एन इंट्रोडक्शन,* पीयरसनः नई दिल्ली।

हेवुड, एड्रंयू (2013), *पॉलिटिक्लथ्योरी एन इंट्रोडक्शन,* पालग्रेवमैकमिलनः न्यूयॉर्क।

झा, शैफाली (2010), वैस्टर्न पॉलिटिक्ल थॉट, पीयरसनः नईदिल्ली।

ऐविनेरी, लोमों, *द सोशल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कार्लमार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

बर्लिन, इज़ाइया, *कार्लमार्क्स : हिज़ लाईफ एण्ड ऐनवाइरमैंट,* न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

फुकुयामा, फ्रांसिस, *दी एण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्टमैन,* न्यू यार्क, फ्री प्रेस, 1992

टकर, रॉबर्ट, *फिलॉस्फी एण्ड मिथ ऑफ कार्लमार्क्स, कैम्ब्रिज,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1961

मैकक्लेलैंड़, जे.एस., *ए हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लंदन, राऊटलेज, 1996

फ्रीडन, बेदशी, *दी फेमिनिनमिस्टीक,* न्यू यॉर्क, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एण्ड को., 1963

दबोउवार, सिमोन, *दी सेंकड सेक्स,* लंदन, विंटेजहाऊस, 1949

मिल्लेद, केट, *सेक्शुअल पॉलिटिक्स,* न्यू यॉर्क, कोलंबिया यूनिवर्सिटीप्रेस, 1969

डेली, मेरी, *गाइन/इकॉलजी,* बॉस्टन, बीकनप्रेस, (1978 (1990))

बैरी, कैथलिन, *फीमेल सेक्शुअल स्लेवरी,* एंगलवुडक्लिफ्स, प्रेंटिसहॉल, 1979

हेवुड, ऐंड्रू, *ग्लाबल पॉलिटिक्स,* हैंपशायर, पॉलग्रेवमेक्मिल्लन, 2011

एगर, बेन (1991), *क्रिटिकल थियरी, पोस्टस्ट्रक्चरलिज़्म, पोस्टमॉडर्निज़्मः देयर सोशियोलॉजिकल रेलेवेन्स,* ऐन्युअल रिव्यू ऑफ सोशियॉलजी, 17, पृष्ठ 105-131

बैर्ट, पी, डी. वाइनबर्ग एण्ड वी.मोटिए (2011), *सोशल कंस्ट्रक्शनिज़्म,*

पोस्टमॉडर्निज़्म एण्ड डीकंस्ट्रक्शनिज़्म, इन आईजार्वी एण्ड जे.बोनिल्ला (सम्पा), सेज हेंड बुक ऑफ द फिलासफी ऑफ. सोशियलसाइन्सस, लंदनः सेजपब्लिकेशन्स, पृष्ठ 475-86

बेन्जामिन, ए (2006), 'डीकंस्ट्रक्शन' इन एस. मल्पास एण्ड पी. वेक (सम्पा), दारा उतलैजकम्पैनियन टू क्रिटिकलथियोरी. लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 81-90

ब्राउन, डग (1992), इंस्टिट्यूशनलिज़्म एण्ड पोस्टमॉडर्न पोलिटिक्स ऑफ सोषियल चेन्जजर्नल ऑफइकोनॉमिक इश्यूज़, 26ः 2(जून), पृष्ठ 545-552

ब्राउन, डब्लू.(2006), पावरआफ्टरफूको, इनजे. ड्राइज़ेक,बी. होनिग एण्ड ए.फिलिप्स (सम्पा), दा ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पोलिटिकल थियोरी, लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस, पृष्ठ 65-84

बार्स्की, आर (2001). पोस्टमॉडर्निटी, इन वी. टेलर एण्ड सी. विनक्विस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म, लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 304-08

कार्टर, डी. (2012), लिटेररी थियोरी. यूकेः ओल्डकासल बुक्स

देरीदा, जे. (1976), ऑफ ग्रैमेटॉलजी, अनुदित, गायत्री स्पिवाक, बॉल्टिमोरः जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस

देरीदा, जे. (1988) लेट्टरटूए जेपेनीसफ्रेंड, इनडी. वुड एण्ड आर. बेर्नास्कोनी (सम्पा) देरीदा एण्ड डिफेरेन्स. एवैनस्टनः नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटीप्रेस, पृष्ठ 4-10

इगलटन, टी (1996) *दा इल्यूज़ंस ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म.* न्यू यॉर्कः ब्लैकवैल पब्लिशिंग.

फूको, एम. (1965), मैडनेस एण्ड सिविलाइज़ेशनः ए हिस्ट्री ऑफ इनसैनिटी इन दी एज ऑफरीज़न. लंदनः राउनलैज.

फूको, एम. (1969) *आकियॉलजी ऑफ नॉलेज एण्ड दा डिसकोर्स ऑफ लैंगवज,* न्यू यॉर्कः हार्परकोलोफोन.

फूको, एम.(1977). *डिसिप्लिन एण्ड पनिशः दा बर्थ ऑफ दा प्रिज़िन.* लंदनः विन्टेज.

फूको, एम.(1980), पावर/नॉलेजः सेलेक्टेड इंटरव्यूज़ एण्ड अदर राइटिंग्स, 1972-1977, लंदनः हार्वेस्टरव्हीटशीफ.

फूको, एम (1983), दा सब्जेक्ट एण्ड पावर, इन एच. ड्रेफ्युस एण्ड पी.रैबिनो, मिशेलफूकोः वियौंडस्ट्रकचरलिज़्म एण्ड हरमेन्यूटिक्स. शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

फूको एम (1991) गवर्नमेंटैलिटी, इनजी. बर्शेल, सीगॉर्डन एण्ड पी. मिल्लर (सम्पा), दी फूकोइफैक्टः स्टडीज़ इन गवर्नमेंटलरैशनैलिटी. लंदनः हार्वेस्टरव्हीटशीफ

जे. एफ.(1984), *दी पोस्टमॉडर्नकंडिशनः ए रिपोर्ट ऑन नोलेज.* मैनचेस्टरः मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस

मार्गरोनी, एम (2001), ज़ाकदेरीदा, इन वी.टेलर एण्ड सी. विनक्वेस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म. लंदन. राउतलैज, पृष्ठ 92-94

मल्पास, एस.(2005), *दा पोस्टमॉडर्न.* न्यू यॉर्कः राउतलैज

रिटज़र, जी. (1997) *पोस्टमॉडर्न सोशियल थियोरीः* न्यू यॉर्कः मेक्ग्रॉहिल.

सिम.एस (2001), *दी राउतलैज कम्पैनियन टू पोस्टमॉडर्निज़्म,* लंदनः राउतलैज.

विन्सेंट, ऑक्सफोर्ड ए.(2004) *दा नेचर ऑफ पोलिटिकल थियोरी,* न्यू यार्कः

अब्बास, होयेदा और कुमार, रंजय कुमार. (2012) *पोलिटिकल थ्योरी,* नई दिल्ली : पीअरसन।

बेलामी, रिचर्ड और मासोन, एंड्रू (2003). *पोलिटिकल कॉन्सेप्ट्स,* मेनचेस्टर : मेनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस.

डह्ल, रॉबर्ट (1989). *डेमोक्रेसी एंडइट्सक्रिटिक्स,* न्यूहवेन, सीटीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

डायमंड, लेर्री (1997). इज द थर्ड वेव ऑफ डेमोक्रेटाइजेशन ओवर? ऐनइम्पीरिकल असेसमेंट

गॉस, जी.ऍफ, और कुकाथससी. (2004) हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी, लन्दन : सेज।

हेवुड एंड्रू (2007). *पॉलिटिक्स,* हम्पशायर : पल्ग्रेवमैकमिलन।

स्टैनफोर्ड इन साइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसोफी।

जकारिया, फरीद (1997). *द राजज ऑफ इललिबरल डेमोक्रेसी,* फॉरेनअफेयर्स, नव./दिस. ,76:6।

अब्बास, होयेदा एवं कुमार, रंजय (2012), *पॉलिटिक्लथ्योरी,* नई दिल्लीः पीयरसन।

बेह्न, रॉबर्टडी. (2001), *रिथिंकिंगडेमोक्रेटिक एकाउंटेबिलिटी,* वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रुकिंग इंस्टीट्यूट प्रेस।

बेल्लामी, रिचर्ड एवंमैसन, एड्रेव्यू (2003), *पॉलिटिक्ल कांसैप्ट्स,* मैनचेस्टर : यूनिवर्सिटी प्रेस।

बोवेन्स, एम. (2005), "पब्लिक एकाउंटेबिलिटी", इन *द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पब्लिक मैनेजमेंट,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ड्राहल, रॉबर्ट (1989), *डेमोक्रेसी एंडइट्जक्रिटिक्स,* न्यूहैवन, सीटीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

डोडल, माइकलडब्ल्यू. (2006), *पब्लिक एकाउंटेबिलिटीः डिज़ाइन्स, डीलेम्मास एंड एक्सपेरियंस्स,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

गोल्डसवर्दी, जैफ्फारीडेनिस, (2010), *पार्लियामेंटरीसवरैनटीः कंट्मपेरेरीडिबेट्स,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

हेवुड, एन्ड्यू (2007), *पॉलिटिक्स,* हैम्पशायरः पालग्रेवमैकमिलन।

रेनोलॉडस, एन्ड्यू. (संपा.) (2001), द *आर्किटेक्चर ऑफ डेमोक्रेसी,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डॉल, रॉबर्ट(1956) एपैफरैंस टू डैमोक्रेडिक थ्योरी, शिकागो, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

डॉल, रॉबर्ट (1989) डैमोक्रेसी एंड इट्स क्रिटिक्स, येल विश्वविद्यालय प्रेस।

हेल्ड, डेविड (1987) मॉडलज़ ऑफ डैमोक्रेसी स्टैनफोर्ड, विश्वविद्यालय प्रेस।

पटनम, रॉवर्टडी. (1993) मेकिंग डैमोक्रेसी वर्क सिविल ट्रेडिशन्स इन मार्डन इटली प्रिन्सटन विश्वविद्यालय प्रेस।

ब्रिथैम, डेविड एण्ड बॉयल, केविन (1995) डैमोक्रेसी- एट्टीक्वैश्चंस ऐंडआनसर्ज़, राष्ट्रीयबुक ट्रस्ट, इण्डियाइन ऐसोसियेशनविद् यूनेस्को पब्लिशिंग।

रश, माइकल एवंफिलिप, अल्थॉफ, 1971 - " एन इनट्रोडक्शन टु पॉलिटिकल सोशियोलोजी", लंदन : नैल्सन

शर्मा, उर्मिला एवं एस.के.शर्मा, 2007 -"प्रिंसिपलस एंडथ्योरी ऑफ पॉलिटिकल साइंस", न्यू देहली : अटलांटिकपबलिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.

वर्बा, सिडनी एवं एन.एच.नी, 1987 -"पार्टिसिपेशन इन अमेरिका : पॉलिटिकल डेमोक्रेसी एंड सोशल इक्वैलिटि", दशकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ दशकागो प्रेस

विनोद,एम.जे. एवं एम.देशपांडे, 2013 -"कन्टेम्पोरेरी पॉलिटिकल थ्योरी", न्यू देहली : पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.

बेलामीरिचर्ड (2008) सिटीजनशिपः वेरी शार्ट इन्ट्रोडक्शन,(नागरिकताः सक्षिप्त परिचय) आक्सफोर्ड : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डाहल राबर्ट(1989) डेमोक्रेसी एंड इट्स क्रीटिकस,(लोकतंत्र और इसकी आलोचना) न्यूहेवऩ सीटी : येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

डेलांटीजेराल्ड (2000), सिटीजनशिपइन ए ग्लोबल ऐज़ सोसाइटी, क्लचर, पालटिक्स, (वैश्विक युगमेंनागरिकता समाज सस्कृति राजनीति), बर्किघम्/ फिलाडेल्फिया: ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

हेवुड एंड्रयू (2007) पालिटिक्स,(राजनीति), हैम्पशायर : पाल्ग्रेवमैकमिलन।

किमलिका, विल (1995) मल्टीकल्चरल सिटीजनशिप : ए लिबरल थ्योरी आाफ माइनारिटी राइटस.(बहुसांस्कृतिक नागरिकता : अल्पसंख्यक अधिकारों का उदारवादी सिद्धांत), आक्सफोर्ड ओयूपी।

किमलिका, विल एंडनार्मनवेन (1995) 'रिटर्नआफ द सिटीजन : ए सर्वेआफ द रिसेंट वर्क आन सिटीजनशिपथ्योरी',(नागरिकता की वापसी नागरिकता के सिद्धांत पर हाल में हुए कार्य का सर्वेक्षण), इनरोनाल्ड बीनर (इडिटेड), थियोरिजिंग सिटीजनशिप, अल्बानीस्टेट यूनिवर्सिटी आफ न्यू यॉर्क प्रेस।

विनोद.एम.जे एंड एम. देशपांडेय (2013) कन्टेम्प्रोरी पोलिटिकलथ्योरी, (समकालीन राजनीतिक सिद्धांत), न्यू डेल्ही: पीएचआई लरनिंग प्राइवेट लिमिटेड।